ব্যাকরণকৌমুদী

ঐ ঈশ্বচন্দ্র বিদ্যাসাগর প্র ণীত।

চতুৰ্থ ভাগ।

न्यम गः ऋत्।

কলিকাতা

সংস্কৃত ধ্রা

मर्व९ ५ २ १ ए।

PUBLISHE -- HE CALCUTTA LIBRARY, No. 25, Sookeab' Street. Calcutta. 1888.

বিজ্ঞাপন

ব্যাকরণকৌমুদীর শেষভাগ প্রচারিত হইল। এই ভাগে মুতন প্রণালী অবলম্বিত হইয়াছে। অনেকে, ব্যাকরণকৌমুদীতে সংস্কৃত স্থত্ত দিবার নিমিত্ত, সবিশেষ অন্মুরোধ করেন। ঐ অনু-রোধের ভাৎপর্য্য এই যে, বাঙ্গালা ভাষায় সঙ্ক-লিত স্থুত্র অপেক্ষা অপেক্ষাক্কত অপ্পাক্ষরে গ্রাথিত সংস্কৃত স্থত্র অনায়াসে কণ্ঠস্থ করা ও স্মৃতিপথে রাখা যাইতে পারে। তাঁহাদের অন্নরোধ যুক্তি-যুক্ত বোধ হওয়াতে, এই ভাগে সংস্কৃত স্থ্ৰ সন্নিবেশিত হইল, এবং, ঐ হেতু বশতঃ, পূর্ব তিন ক্লাগেও, জ্ৰুমে ক্ৰুমে, এই প্ৰণালী অব-লম্বিত হইবেক। সকল স্থুত্র মূতন সঙ্কলিত নছে; অনেক স্থলে, পাণিনিপ্রণীত সূত্র অবিকল উদ্ধৃত হইয়াছে।

ত্রীঈশ্বরচন্দ্র শর্মা

কলিকাতা। সংবৎ ১৯১৮। ২০এ মাঘ।

मृषी

			পৃষ্ঠ			পংক্তি
বিভ ক্তি নির্ণঃ	1					
বিভক্তিলক্ষ	l		>			ર
বিভক্তিবিভ <u>া</u>	গ	•••	,	•••	•••	۳
প্রথমা	•••		۶	•••	•••	77
দ্বিভীয়া	•••		ર	•••	•••	78
ভূতীয়া			૭		•••	70
চতুৰ্থী		•••	Û			૭
পঞ্চমী			9	•••	•••	>
ব ষ্ঠী		•••	۵	•••	•••	7.0
সপ্ত মী		•••	7.8	•••	•••	ه
কারক						
ক†রক লক্ষণ			29	•••	•••	Ċ
কারকবিভাগ	t	•••	3 9		•••	9
অপাদান		•••	29	•••	•••	۵
সম্প্রদান			79	•••	•••	₹•
করণ	··· ,	•••	٤5			2
অধিকরণ	•	•••	۲۶		•••	9
কৰ্ম	***	•••	5 7	• · •	•••	7F-
ক ৰ্ন্ত 1	•••	• ••	₹8		···	8

৬ সুচী।

			পৃষ্ঠ			পং ক্তি
তদ্ধিত						
অ কৃ	•••	•••	60		•••	\$ @
অ ত্	•••	•••	90	•••	•••	39
ষ্পতস্থ		•••	₩9	•••	•••	૭
অ সি			► ७	•••	•••	२०
অ স্তাত্	•••	•••	৮৬	•••	•••	٥ د
অ †কিনি	•••	•••	b -0	•••		25
আ ড্	•••	•	b- 9	•••	•••	75-
আতি	•••	•••	₽9	•••	••	7.7
আমিন্	•••		90	•••	•••	8
আলু	•••	•••	90	•••	• • •	9
আহি	•••	•••	⊳ 9	•••	•••	72
ह ेक्			٥٠	•••		ራሪ
ইত	•••		a>	•••		२ऽ
ইথুক্	•••	•••	<i>ა</i> 8	•••	•••	25
ं हे न्	•••	•••	৬৭	•••		>
हेनि			92		•••	ઝ
ইমনি			e 9	•••	•••	59
ट ेब्र	•••	•••	೨৬	•••		75
हेन"	•••	•••	% F	•••	•••	7.
रुर्वन्	•••	•••	92	, •••	•••	72
क्रेब्रप्दन्			10	•••	•••	٥
উর		•••	42	•••	•••	৩
ANTA		***	re	•••	•••	9

			र्भव			পংক্তি
এনপ্			⊳ 9	•••	•••	>@
ক ণ্	•••		৩৬			>5
कन्			80	•••		7,2
কন্	•••	•••	⊳ °	•••	•••	२७
কল্প		•••	9 0		•••	२२
হু প্ৰ	•••		96		•••	25
কিন্	•••		90		•••	٥٥
কু ত্বস্ চ্	•••		99	•••		ንሥ
খণ্ড			৩৮	•••	•••	>>
চণ	•••	•••	¢৯	• • •	•••	20
চভমাম	•••	•••	90	•••		25
চভরাম্	•••		90	•••	•••	75
চন	•••	•••	۶-۶	•••	•••	۲
চরট্		•••	b 0	•••	•••	œ
চশস্	•••	•••	99		•••	59
চিত্		•••	₽ 9		•••	▶
চ্চি	•••	•••	ሖ ል	•••	•••	20
∑ &			۵۵	•••		5 Œ
জাতী য়		•••	95	•••	•••	४७
জাহ	•••	•••	95	•••	••••	>5
ર્ફ	••••	•••	95%	•••	•••	৩
ড	•••	•••	હ ર	•••	•••	8
७ च	***	•••	૭ ૨	***	•••	28
ডভম	***	• - •	90	•••	•••	8

			ঠ p			প ংক্তি
ডভর			98	•••		২৩
ডভি			۵,۶		•••	27
ভয়ট্			৬,	•••	•••	२०
ডাচ্	•••		27		•••	20
ড †মহ	• • • •		95	•••	•••	२७
ডিম	•••	•••	৮ ৮		•••	75-
ভূ ল		•••	95	•••	.	79
ড়ৢড়ৢপ্			৬৬	•••		৯
ডুৰপ্		•••	৬৯		•••	75
गैन्	•••	•••	৩৬	•••		১২
ভনষ্	•••		₩ 9		•••	२२
তমট্	•••	•••	৬৩	•••		2 0
ভমপ্			92	•••	•••	>>
তয়ট্		•••	৩৯	•••	•••	70
ভরট্	•••	•••	৮২	•••		9
তরপ্		•••	90	•••	•••	2
তল্		•••	৩৮	•••	•••	১৯
তল্	•••	•••	œ 9	•••	•••	•
ভসিল্,		•••	৮২	•••	•••	7.7
তি '	•••	•••	93	•••	•••	20
তিকন্	•••	£	82	• 💎	•••	\$
ভিপুক্	·	•••	૭૪	•••	* '	9
তৈলন্	•••	•••	95	•••	•••	۳
ত্ত্ব	•••	***	P.j.	••	•••	૨૨

			পৃষ্ঠ			পং ক্তি
€ J			۶ ۲	•••	•••	8
ভাৰ্	•••	•••	۶,	•••		>
ত্ৰল্	•••	•••	৮৩		•••	৬
ত্রাচ্			۴ رو			7 •
4		•••	œ 9		•••	৬
পা न্	•••	•••	P-0		•••	٤5
म च्र ह		•••	৬৽	• • • •		>9
দা	•••	•••	₽8			9
मानीम्	•••	•••	۶-8	•		२०
দেশীয়	•••		90		•••	રર
দেশ্র	•••	•••	90	•••		२ २
দ্যুসট্	•••	•••	•ు		•••	39
ধাচ্	•••	•••	99	•••	•••	>>
ধাচ্		•••	95		•••	>5
ধেয়	•••	•••	86-	•••		২৩
নণ্	•••	•••	80	•••		2
পাশ্	•••	•••	٥٠	•••	•••	2
ভ		•••	9•		•••	28
মট্	•••		૭ ૨	•••	•••	7►
মভূপ্	•••	•••	৬৪	•••	'	>6
ম ন্	•••		b -b-	••	•••	78
ময়ট্	· v ·	•	96-			8
মাত্র ট্	•••		৬০			29
ষ	•••	•••	৬২		•••	7

चुठी।

			গৃ ষ			পংক্তি
যু	•••	•••	9.	•••		ર ર
র			৬৯		•••	৬
র	•••		৮২			૭
রূপ	•••		90			26-
রূপ্য	•••	•••	bo	•••		৯
ल			৬৮	•••		٥ د
ব	•••	•••	৬৯	•••		२२
বভিচ্	•••	•	ሬን			8
বভূপ্	•••		৬০			२०
বল	•••	•••	৬৯	•••		১৬
বিনি	•••	•••	৸ৢঌ	•••		28
ব্য	•••	•••	95		•••	79
al	•••	•••	৬৮			\$2
ষণ্	•••		۷۵		•••	۶.
ৰায়নণ্	•••		೨ೲ			٥ د
विक्न्	•••		৩৪			24
ৰিণ্	••.	•••	२৯	•••		25.
ষীকণ্	•••	•••	৩৬	•••	•••	५ २
ষীয়ণ্	•••	•••	৩৪	•••	•••	۳
ৰেয় ণ্	•••		૭ર		•••	१ऽ
ষ্যণ্	•••	,	90		•••	२०
শাভিচ্	•••		٥٠		•••	>5
শ্বচ্	•••	•••	98	•••		२ ९
স্থান	•••	•••	98		•••	۵

		,	সূচী।			>>
			शृष ्ठ			পং ক্তি
স্থানীয়	· · · ·	•••	939	•••	•••	ه
হ	•••	•••	৮৩			52
ई न्		•••	P-8	•••	•••	78
স্ত্রীপ্রত্য	য়					
অ†প্	•••	•••	৯৩	•••	• • •	7.7
ञ्जेश्	•••	•••	28	•••	•••	œ
উপ্	•••		8 0 4		•••	১৩
সমাস						
সমাস	লক্ষণ	•••	3 o C			20
অ ব্যয়	ীভাব		>०१	•••	•••	હ
ভভ্পু	কুষ		225	•••	•••	ર
কৰ্মধ	†রয়		১২৩	•••		۵
দ্বিশু	•••		ऽ१७	•••	•••	œ
তত্পু	<u>কেষসমাসাস্</u> ত	বিধি	3	•••	•••	70
ব ছ ত্ৰী	হি …	•••	<i>५७</i> २	•••	•••	•
षण्		•••	787		•••	>5
শৰ্কাশ	মোসসাধারণ	বিধি	28►	•••	•••	১৬
অ নু ব	কৃ ৰমাৰ		268			7 0
মধ্য প	াদলোপী সম	ነя	70F	•••	•••	•
প্ৰা	নিপাত		700	•••	•••	٥
শ ৰ্ক	াশ্সশে ষ	•••	১৯৩	i		79
ভদ্ধি	ভপরিশিষ্ট	•••	১৬৬			₹•

ব্যাকরণকৌমুদী

বিভক্তিনির্ণয়।

पंखाकारकबोधियती विभक्ति:।

যাহা দ্বারা দংখ্যা ও কারকের প্রতীতি জন্মে, তাহাকে বিভক্তি বলে। যথা, ঘट:, ঘতী, ঘटা:। এ স্থলে ঘটশনে প্রথমা বিভক্তির যোগ থাকাতে, এক ঘট, দুই ঘট, বল্ল ঘট, এই দংখ্যার প্রতীতি জন্মিতেছে। चन्द्रं पद्यति, এ স্থলে চক্রে দ্বিতীয়া বিভ-ক্রির যোগ থাকাতে, চন্দ্র কর্ম কারক বলিয়া প্রতীতি জন্মিতেছে।

१। विभक्तयः सप्त।

প্রথমা, বিতীয়া, তৃতীয়া, চতুথী, পঞ্চমী, ষষ্ঠী, সপ্তমী, এই সাত বিশুক্তি।

প্রথমা।

७। श्रमिधेयमाते प्रथमा।

যে স্থলে ক্রিয়াপদ প্রভৃতি না থাকে, কেবল অভিধেয় (১) বুঝাই-বার নিমিত্ত, শব্দ প্রয়েশ্প করা যায়; দে খুলে দেই শব্দের উত্তর প্রথমা বিভক্তি হর্ষ। যথা, হল্কঃ, অবা, গুল্মম্, নিিহিঃ, নহী,

(১) যে শব্দে যাহা বুঝায়, উহা সেই শব্দের অভিধেয়।

जनम्, रामः, सीता, सास्त्रायः, एकः, हो, अयः, द्रोगः, खारी, प्रस्यः।

8। वर्त्तीर।

কর্তারকে প্রথম বিভক্তি হয়। যথা, মিয়ু: ক্রীজ্বি, দী: মুক্তায়ার, দিঘা দর্ক্তারি।

৫। सम्बोधने।

সংস্থাধনে প্রথমা বিভক্তি হয়। যথা, हे पितः, हे आतारी, हे पुत्ताः।

७। प्रव्यवयोगे च।

के ि श्रेष्ठि कि कि श्रेष क्षा का का का का का का कि श्रेष्ठि के विश्व के स्वा के स्व के स्व

षिতীয়া।

१। कमाणि दितीया।

कर्म्म कांत्रक दिशीया विचक्ति इत। यथा, पुष्पं चिनोति, **असं** सुङ्क्ते, जार्ज पिपति।

छ। कियाविधेषणे च।

क्रियांत विरागवान विजीता विज्ञक्ति हत् । अक्वार्टास ଓ क्रीविनाम है श्रीरामां हहेता थांकि । यथा, सत्त्रम् धावति, द्वृतं पतायते, ऋड हस्ति, साधु भाषते ।

৯। पंचनालाभ्यामत्यन्तसंयोगे।

অত্যম্ভ সংযোগ অর্থাৎ ব্যাপ্তি বুঝাইলে, অধ্বর্তাচক ও কালবাচক শব্দের উত্তর দ্বিতীয়া বিশুক্তি হয়। যথা, অধ্বর্তাচক—ক্রীয়া गिरिः स्थितः, योजनं धत्वेनातुगतः ; कानराष्ट्रक-दिवससुप-वसति, मासमधीते। क्रोशं योजनं दिवसं मासं व्याप्येत्वर्थः।

५०। चिमपिरसर्वीभयैस्तसन्तै:।

তস্প্রত্যরাম্ভ অভি, পরি, নর্মা, উভয়, এই কয় শন্দের যোগে, দ্বিতীয়া বিভক্তি হয়। যথা, আদদদিনঃ, यन्तुं परितः, ভত্তাनं মন্ত্রা, নতীন্ত্রদ্বানঃ।

५५ । प्रत्यतुधिङ्निकषान्तरान्तरेण्याविद्धः ।

প্রতি, অনু, ধিক্, নিক্ষা, অন্তর! (২), অন্তরেণ (১), যাবং, এই কয় শব্দের যোগে, ছিতীয়া বিভক্তি ৼয়। যথা, दीमं प्रति दया, राममञ्जातो बच्चायाः, क्षपयां धिक्, यामं निक्षा नदी, स तां मां च खन्तरा उपविष्टः, श्रममन्तरेष विद्या न भवति, वनं यावदनुसर्गि।

ভূতীয়া।

১२। हतीया करणे।

कर्त्व कांद्राक ज्ञोता विचिक्त रहा। यथा, हस्तेन ग्टह्याति, चन्नुषा पश्चित, कर्येन म्ह्योति।

১७। सहार्थे:।

महार्थ गत्कत त्याता, ज्जीमा विख्यक्त हम । यथा, रामः सीतवा बच्चायोन च सह वनं जगाम, बेनापि सार्बे विरोधो न वर्त्तव्यः । महार्थ गत्कत व्यथ्यतात्रां जुजीमा हम। यथा पिता प्रस्तेया मच्चति, प्रस्तेया सहित्यधेः ।

⁽২) যধ্য অর্থে।

১৪। जनवारणप्रयोजनार्थेश्व।

উনার্থ, বারণার্থ, ও প্ররোজনার্থ শব্দের যোগে, তৃতীয়া বিভক্তি । যথা, উনার্থ—एकोन জনः, বিহ্যায় দ্বীনः, ऋडक्कारेश्य শুন্ম:। বারণার্থ—অন্ত বিবাইন, করন্তীন কিন্। প্রয়োজনার্থ— धनेन प्रयोजनस्, कोऽष्ठैः फ्रज्येन।

১৫। पध्वकालाभ्यामपवर्गे।

অপবর্গ অর্থাৎ ক্রিয়াসমাপ্তি ও ফলপ্রাপ্তি বুঝাইলে, অপ্সবাচক ও কালবাচক শব্দের উত্তর তৃতীয়া বিভক্তি হয়। যথা, অপ্সবাচক— क्रोचेनानुशाकोऽधीतः। কালবাচক—त्निभिरहोभः कतम्, मासेन व्याकरणमधीतम्। मासं व्याकरणमधीतं न त स्कुर्रात, এ স্থলে অধ্যয়নের ফলপ্রাপ্তি বুঝাইতেছে না, এজন্য মাস শব্দের উত্তর তৃতীয়া বিভক্তি হইল না।

১७। येनाङ्गेनाङ्गिनो विकार:।

যে অঙ্গ বিকৃত হওরাতে, অঞ্চীর বিকার লক্ষিত হয়, সেই অঙ্গের বাচক শব্দের উত্তর তৃতীয়া বিভক্তি হয়। যথা, चसुषा काखाः, माहेन खञ्जाः, कर्योन विधिरः, प्रकेन कुखाः।

५१। बच्चणात्।

स्य लक्षण व्यर्थाय किक बांता कानस्य वास्ति मूक्ति रहा, मिर लक्करणत व्यापक गाम्बत छेवत क्कीशा विकलि रहा। यथा, काटामिः तापसमप्रेशम्, भूषाभिः शिशुमद्रभम्, क्रमेण कान्तमद्राचम्।

५४। प्रक्रत्यादिभ्यस्।

ছলবিশেষে, প্রকৃতি প্রভৃতি শদের উত্তর তৃতীয়া বিভক্তি হয়। যথা, দললা বাবং, জ্বাদান বহলং, আজনা স্তুন্ধং, লান্যা লাস্ক্রাম্যং, गोलेस মান্তিজ্ঞাং, নালা মানহারং, দাবনা হুঃজ্ঞিনং, वेगेन गच्छति, त्वरया धावति, यत्नेन विखति, सुद्धेन खिपिति. दुःखेन याति, क्वेगेन पदति।

চতুর্থী।

১৯। चतुर्थी सम्प्रदाने।

मन्युमान कांत्रक ठजूशी विचक्ति इत्र । यथी, दृहिद्राय धनं ददाति, भिचने भिचनं ददाति ।

२०। तादर्थे।

जानर्थ तूथारेल अर्थाय कानल तरु वा किया याशत निमित्त अशिष्ट क्यां कार्यात किया अशिष्ट क्यां कार्यात क्यां क्यां कार्यात कार्यात

२५। निष्टत्तौ निवर्त्तनीयात्।

निवृति तुसारेल, निवर्तनीत्त्रत छेत्वत प्रवृथी विख्ति रत् । यथा, मम्माय धूमः, मम्मानित्त्त्तये द्रत्यथः; स्वातपाय क्रम्यम्, स्वातपाय क्रिम्यम्, स्वातपाय क्रिम्यम्, पिषासायै जनम्, पिषासानित्त्तये द्रत्यथः; तापाय स्वानम्, तापनित्तत्तये द्रत्यथः; रोगाय स्वीवधम्, रोग-नित्तत्तये द्रत्यथः; पाषाव प्रावश्चित्तम्, पाषानित्तत्तये द्रत्यथः।

२२। सम्पद्यमानात् कृप्या देः।

किश्व अञ्चित्र अस्तारिन, मन्ममायात्मत छेडत व्यू विकिल् इत्र । यथा, भित्व वानीय कल्पते, ज्ञानं सुखाय सम्पद्धते, धन्तं सुगीय मनति, स्वधन्तं नरकाय भवति ।

२७। हितसुखनमोभिः।

হিত, সুখ, ও নমস্ শব্বের হোগে, চতুর্থী বিশুক্তি হয়। ষ্থা,

हितं पुत्ताय, सुखं भिष्याय, नमो सुरवे। क्रिवारवारण दिकरण्य । यथी, सुरवे नमकुत्य, सुद्दं नमकुत्य।

२८। खिल्लाहाल्यावषष्भि:।

त्रस्ति, स्रांश, स्रधा, ও रष्टे मालित शाला, ठउूवी विखिक्त स्त्र। यथा, खिला प्रजास्यः, खाद्या खम्बये, खधा पित्रस्यः, इन्द्राय वषट्।

२৫। समर्थायकैय।

সমর্থার্থক শব্দের যোগে, চতুর্থী বিভক্তি হয়। घথা, समधी मञ्जो मञ्जाय, खर्च मञ्जो मञ्जाय, घत्तो मञ्जो मञ्जाय, प्रभुमञ्जो मञ्जाय। সমর্থার্থক ক্রিরার যোগেও চতুর্থী বিভক্তি হয়। যথা, प्रभवति मञ्जो मञ्जाय, ঘদ্ধীনি मञ्जो मञ्जाय।

२७। मन्यकर्मास्यनादरे विभाषा।

অবজা বুঝাইলে, দিবাদিগণীর মন ধাতুর অবজাবোধক কর্মে বিকল্পে চতুর্থী বিভক্তি হয়। যথা, स तां स्याय मन्यते, नासं तां जुक्कुराय मन्ये। পকে ছিতীয়া। শৃগালাদি (৪) কর্মে হয় না। যথা, নোদম্ব ছুনার मन्ये।

२१। वा गत्यचेकचीय चेष्टायाम्।

চেষ্টা বুঝাইলে, গতার্থ ধাতুর কর্মে বিকণ্ণে চড়ুপ্নী বিভক্তি হয়। যথা, অংলায় লচ্চনি, বুজায় বজানি। পক্ষে ছিতীয়া। চেষ্টা না বুঝাইলে হয় না। যথা, লল্যা লল্বনো ক্মানি। অধ্ববাচক শব্দ কর্মা হইলে হয় না। যথা, ক্মানোন ক্মানি, মন্যান ক্মানি।

^(8) শুগাল, কাক, শুক, নৌ, অন।

পঞ্চমী।

१४। अपादाने पश्चमौ।

অপাদান কারকে পঞ্চমী বিভক্তি হয়। ঘণা, অস্থান্ দানিন:, ফ্লোস্থানিন:, অভাত্তিলেন:।

२ । त्यवोपे कर्मास्यधिकरसी च।

লাপ্প্রতায়ান্ত পদের অপ্রয়োগে, কর্মে ও অধিকরণে পঞ্চমী বিভক্তি হয়। যথা, प्रासादात् पेचते, प्रासादमाक् ह्या दस्त्रचेः; আমলাবেলভাক্তবি, আমলे ভুদবিষ্যা दस्त्रचेः।

७०। बालाध्वनोरवधे:।

कानभित्रियां । ४ अध्वभित्रियां वृद्धाहेत, अवधिताधिक मास्त्र छेठत भक्षमी विकक्ति रहा। यथा, कानभित्रियां — स्वयद्घावणात् पञ्च मासाः, माघात् हतीये मासि, विवाद्घात् सम्भे दिने। अध्व-भित्रियां — पाटनियुक्तात् यतं क्रोयाः, प्रवागात् विष्यत् क्रोयाः, क्रक्ते मात् द्य योजनानि।

७५। निस्तष्टा देकोत्कर्षे।

मूरे वा वक्ट्र मध्या अक्ट्र खेश्क्स वृक्षारेल, निकृत्स्येत छेस्त शक्ष्मी विक्रक्ति रहा। यथा, घनात् विद्या गरीयसी, चेली मैलार् बसीयाम्, मासुराः पाटसियुक्तनेथ्य खास्त्रतराः।

७२। मर्बाहाभिविध्योरायोगे।

गर्द्यामा ও अञ्चितिथि तूर्याहेल, आ अहे अत्रार्ध गरकत त्यार्श शक्ष्मी द्विञ्चलि हत । यथी, गर्द्यामा—क्षा जन्मनः, क्षा ग्रेमनात्, क्षा ससद्गत्, क्षा हिमाचनात् । अञ्चितिथि—न्धा ननात् इष्टो देनः, ननं व्यास्त द्रत्यर्थः । क्षा सकतात् बन्धा, सकतं व्यास द्रत्यर्थः ।

७७। चन्यार्थै:।

অন্যার্থ শব্দের যোগে, পঞ্চমী বিভক্তি হয়। যথা, सिलादन्यः कः परिलातुं समर्थः, घटः पटादितरः, इदमस्माद्गित्रम्। অন্যার্থ ক্রিয়ার যোগেও হয়। যথা, स्त्रीयं रस्तताद्गिदाते।

७८। दिन्देशकालवाचिभि:।

मिश्री हक, दिन्दाहक, अ कोनवीहक नद्यत शिरा, शक्ष्मी विश्वकि इत । यथा, मिश्रीहक—पद्धी चामात्, उत्तरी स्टहात् । दिन्दाहक-चैत्रो मेत्रात् पूर्वदेशे । कोनवीहक—चैत्रात् पूर्वः फाक्स्नः, भोज-नात् प्राक्, श्यनात् पूर्वम्, ख्यानात् प्रतः, प्रस्थानादनन्तस् ।

७৫। विचरारात्प्रसृतिभि:।

विश्नि, आंता॰, उ প্রভৃতি শব্দের যোগে, পঞ্চমী বিভক্তি ইয়।
यथा, च्यात् विहः, चामात् विहः (५), चारात् वनात्, आरात् उद्यानात्, जन्मनः प्रस्ति, भैभवात् पस्ति।

७७। या याहिभ्याञ्च।

আ ও আহি প্রভাষার শবের যোগে, পঞ্চমী বিভক্তি হয়। यथा, ভত্যানাত্ত্রন্থা ফল্পা, ফল্পান্ত্রন্থালি বহং, हिमानयात् दिन्या भारतपर्भम्, प्रयागात् दिन्याहि विन्धः।

७१। ऋतेयोगे हितीया च।

থতেশবের যোগে, পঞ্চমী ও ছিতীয়া বিশুক্তি হয়। যথা, স্নানা-ভরি, সানুন্দরৈ।

৩৮। **ঘথন্দিনাম্মা দ্বিনীযান্তনীয় ব।** পৃথক্ ও বিন[ু]শন্দের যোগে, পঞ্চমী এবং বিভীয়া ও ভৃতীয়া

⁽ ६) ক্রমদীরর, বহি:শব্দের যোগে, পঞ্চমী ও ী, উভয় বিভক্তিরই বিধান করিয়াছেন।

विङ्क्ति रत्न। यथा चैत्रात् प्रयक् चैत्रं प्रयक् चैत्रेण प्रयक्; च्यमात् विना, चर्मावना, चलेण विना।

७ । स्तोकस्क्रात्यकतिपयेभ्यस्तृतीया च ।

रद्वाक, कृष्ट्व, जल्भ, किल्पत्र नाय्यत छेटत श्रक्ष्मी उ ज्रित्री विष्टिक हत । यथी, स्तोकान्युक्तः, स्वीकेन स्वक्तः; कच्छान्युक्तः, कच्छ्येय स्वक्तः; उच्छान्युक्तः, चित्रेय स्वक्तः; किल्प्यान्युक्तः, कित्रियान्युक्तः, कित्रियान्युक्तिः, कित्रियान्यिकः, कित्रियान्युक्तिः, कित्रियान्यिक्तिः, कित्रियान्युक्तिः, कित्

80। हेतीच।

रिष्ठू यूक्षांदेल, जाहांधक मास्त्रत छेत्त श्रश्चनी अ ज्जीमा विश्वक्षि रम्म। यथी, धनात् कुलस्, धनेन कुलस्, भयात् कम्पः, भयेन कम्पः; हर्षात् कस्यति, हर्षेण कस्यति; दुःखात् रोदिति,दुःखेन रोदिति।

85। षष्टी सम्बन्धे।

ममुक्ति रिष्ठिक रत्न । यथी, मम पिता, तव प्रस्नः, तस्य भाता, महिषस्य स्टब्नम्, गोर्दुग्धम्, नद्या जलम्, रजस्य ह्याया, खम्नेः शिखा, वारोर्वेगः, जलस्य प्रवाहः।

82 । कर्नुकर्माणी: स्रति।

कृष्प्रजारम् प्रसारभ, कही ए क्रां येथी विश्वक्ति हम्। यथी, कर्त्वाम् शिक्षाः स्थानम्, स्वश्वस्य मितः, तव पिपाद्वाः, मम वृभुक्ताः। क्रां —स्वद्वस्य पातः, प्रयसः पानम्, सुखस्य भोगः, धनस्य दाताः, रुक्तस्य स्रेदकः।

80। उभयप्राप्ती सम्माणि।

কর্তা ও কর্ম উভয়ত্র প্রাপ্তিসম্ভাবনা হইলে, কেবল কর্মে বন্ধী

विङ्क्षि वृत्त । यथा, गर्या दोह्रो गोपेन, प्रयसः पानं ग्रिसुना, धनस्य दानं करोण, जनस्य ग्रोषणं क्रव्येण, वर्षस्य हरणं चौरेण।

88। कविद्विभाषा कर्रारः।

८৫। न घतादेः।

गण्, गांतर्, कमू, कांतर्, माण्, अ मार्थात প্रভाव्यत् श्रिवार्ति, विश्व हिर श्रिता। यथी, गण्नावहं मच्चन्, जलं पिवन् (७)। गांतर् चन्नं भुञ्जानः, व्याकरणमधीयानः। कमू कोटनं पेवि-वान्, यामं लिखनान्। कांतर् चर्ति ववन्दानः, श्रास्तं ग्रुश्व-वाणः। माण्-व्यन्तं गिमिचन्, वेदं पिठव्यन्। मार्थान ग्रुश्व-विश्वभाणः, धनं दाख्यमानः।

८७। न तुसुनाहे:।

जूर्न, क्र्न, लाभ्, अ १ मूल् প্रजास्त श्रेसार्थ, यश्री विश्विक इस्र ना। यथा, जूर्न्—स्ट गन्तम्, चन्द्रं द्रह्म्। क्र्ना—कत्रं पीता, फतं स्टहोताः लाभ्—व्याकर्यमधीत्म, स्टहमागन्य। १ मूल्—
स्ट सेव सेवम्, शास्त्रं स्रावं स्रावस्।

८१। नोदन्तस्य।

উकातास्त्रकृष्थिठारस्य श्रासारा, यशै विकिक श्रामा। यथा, जलं पिपासः, रिपृतृ जिल्लाः, मिलां चित्रः, विपचं निराकरिणाः, फलं यहवालुः,।

⁽७) दिवो विभाषा। हिन्धांजूद दिकल्ण। यथा, खर दिवन् खरस्य दिवन्।

८৮। नोकघौलतन्भविष्यणिनाम्।

উক, শীলার্থ তৃন্, ও ভবিষ্যদর্থ ণিন্প্রতায়ের প্রয়োগে, ষষ্ঠী বিভক্তি হয় না। যথা, উক— कहाँ गासुकाः, जखं वषुकाः, মানু ঘারকা: (৭)। শীলার্থ তৃন্— धनं दाता, আহা নীকা, বিদর্ঘা নিবাক্ষী। ভবিষ্যদর্থ ণিন্— धनंदाको, ছবানী जी, कहाँ गासी।

८৯। न खलयीनाम्।

थनर्थ প্রতায়ের প্রয়োগে (৮), यशी বিভক্তি হয় না। यथा, नेतत् सुकरं सवता, नैतह्ष्करं तेन, सर्वेमीयत्करं सुधिया, सया सुन-र्षताः स्तुः, त्या दःसामनो रिष्डः।

৫०। न निष्ठाया:।

निष्ठां প্रछात्रत् श्रातां । यथी, क-तिन व्याकरणमधीतम्, मया जसंपीतम्, त्यया चन्द्रो दृष्टः। क्रवजू-स स्टहंगतवान्, सहं चन्द्रं दृष्टवान्, त्यं वेदमधीतवान्।

৫১। ऋख वर्त्तमाने।

বর্ত্তমান কালে বিহিত ক্রপ্রতায়ের প্রয়োগে, যন্তী বিভক্তি হয়। যথা, হার্না মন:, হাজমিদন্দনৈ মন্ত্রেছ: ; ঘনা দুলিন:, বর্ত্তি: দুজ্যন মন্ত্রেছ:।

৫२। अधिकरणवाचिनसः।

অধিকরণ কার্কে বিহিত ক্রপ্রতায়ের প্রয়োগে, ষষ্ঠী বিশুক্তি হয়। যথা, হুইন্দা ম্যোলন্দ, एतहेषामाधितस्।

৫७। विभाषा भावे।

- (4) कांगुकन्यस्त्र প्रहार्ता इहा वर्णा, धनस्त कासकः।
- (৮) সু, দুরু, ও ঈষৎ শব্দের যোগে, খাডুর উত্তর যে অ ও অন হয়, উহাদিগকে খলর্থ প্রভার বলে।

ভাববাচ্যবিহিত কপ্রতারের প্ররোগে, বিকণ্পে ষষ্ঠী বিভক্তি হয়। ষথা, सम खातम्, सम स्थितम्, सम प्रवितम्, सम खागरितम्। পক্তে তৃতীয়া।

८८। क्रत्यानां कर्रार।

কৃত্যপ্রতারের প্ররোগে, কর্তার বিকম্পে ষষ্ঠী বিভক্তি হয়। হথা, पुत्तकं तव पाक्यम्, चन्द्रो मम द्रष्टव्यः, गुरुत्तस्थार्त्वनीयः। পক্ষে তৃতীয়া।

(৫ । क्यां वासि पिष् निप्रह्नां हिंसायास ।

हिश्मा अर्थ दूबाहेल, जामि, शिष्, এवश् नि ଓ প্র शृद्धक हन्धां जूव

कर्त्य वर्षी विज्ञक्ति हत्त । यथा, चौरख एक्तास्वति, स्रतोः पिनि ।

नि ও প্র ব্যস্ক, সমস্ক, ও विश्वर्यास्त ज्ञांवित्व हत्त्व । यथा,

निहन्ति प्रहन्ति निप्रहन्ति प्रयाहन्ति वा चौरख ।

৫७। वा स्मृत्ययद्येयां कर्माणा।

ऋत्वार्थ, मग्न, ७ देन थांजूत कर्क्स विकल्म वर्षी विचक्ति रहा। वर्षा, प्रची मातः सारति, दाता दरिद्रस्य दयते, पिता प्रचस्य रूपे। श्रक्त दिखीता।

৫१। त्रप्रायीनां विमाषा करणे।

ज्ञार्थ थांजूत कत्रवनात्राक विकल्मि वश्ची विश्वक्ति इत्र । यथा, नाम्नि-स्टुम्बति काष्टानाम् ; स्वयां 'हि स्टप्नाय न वारिधारा स्वादुः सुगम्बिः, स्वदते तवारा । अरक ज़्जीशो ।

৫৮ चिस्तादखात्यतस्रभि:।

अहार, अमि, आजि, अ अउमू श्रात्त द्यारा, यश्री विक्ति रह। यथा, अहार- पुरस्तादुद्यानस्, उपरिचात् मञ्जस् । अमि—पुरो नगरस्, सभो हस्स। अजि—उत्तरात् ससद्स, दिस्सात् हिमाबवस्य। अउमू—दिस्याते यामस्, उत्तरतो स्हस्स।

৫৯। क्रत्यसुस्रचोः कालाधिकरणे।

कृष्यम् ७ मू इ প্রতায়ের প্রয়োগে, কালবাচক শব্দের অধিকরণে
ষষ্ঠী বিভক্তি (২) হয়। য়থা, কৃষ্ণমু—पञ्चकतो दिनस्याधीते, सप्तकतो दिनस्यागच्छति ; मू ए—दिदिनस्य भुङ्को, निदिनस्य
स्विति।

७०। एनपा दितीया च।

এনপ্প্রত্যরাম্ভ শব্দের যোগে, ষষ্ঠী ও দ্বিতীয়া বিভক্তি হয়। যথা, द्विषोन दृच्चवाटिकायाः सरः, दृच्चिखेन दृच्चवाटिकां सरः।

७১। तुल्यार्थेसृतीया च।

जूनार्थ मास्त्र त्यार्श, वर्षी ও ज्जीश विच्छि इत्र। यथी, सम तुल्यः, सवा तुल्यः; तव समः, त्या समः; तस्य सहग्रः, तेन सहग्रः।

७२। आधिषि कुमलादिभित्रतुर्धीच।

आनीकीम तूथां हैतन, कूनन প्रकृष्ठ (১०) नास्मत राश्ता, वश्ची छ छ्र्थी विश्वकि इत । यथा, क्षण देनदत्तस्य भूयात्, कुण देनदत्तस्य भूयात्, निरामयं देनदत्तस्य भूयात्, निरामयं देनदत्तस्य भूयात्, विरामयं देनदत्तस्य भूयात्, सुखं देनदत्ताय भूयात्।

७৩। दूरान्तिकार्थै: पञ्चमी च।

দূরার্থ ও অভিকার্থ শদের যোগে, ষতী ও পঞ্চমী বিভক্তি হয়। यथा, दूरं यामस्य, दूरं यामात्; चनिकं नगरस्य,∙चनिक नगरात्।

^{` (} ১) বোপদেঁব ও ক্রমদীশ্বরের মতে বিকল্পে ৮

⁽১০) কুশল, নিরাময়, হিড, সুখ, অর্থ, আয়ুষ্য ও এডদর্থক শব।

७८। निमित्ताचेतुप्रयोगे।

(रजुगत्कत প্রয়োগ থাকিলে, নিমিন্তবোধক শব্দের উত্তর ষষ্ঠী বিভক্তি হয় (১১)। যথা, অল্ল ইনীর্ষদান, অল্ম অইনীর্ছ স্থান্ত দিক্তন্।

७६। सर्वनाम्बर्गृतीया च।

হেতুশবের প্রয়োগ থাকিলে, নিমিত্তবোধক সর্বনাম শবের উত্তর ষষ্ঠী ও তৃতীয়া বিভক্তি হয় (১২)। বথা, কল্প স্থৈনীঃ ম আগনঃ, কিন স্টিয়না ম আগনঃ।

मश्रमी।

७७। सप्तस्यधिकर्णे।

अधिकत्र १ को ति । भेते, नद्यां स्नाति ।

७१। यस च भावेन भावलत्त्रगम्।

यमीत क्रितांत काल हाता अनामीत क्रितांत काल निर्हाणि हत डांशत डेक्ट्र मध्यी दिख्कि १त । यथा, द्वाचलं गते गतः, दवेदलागमनसमकालं गत द्रव्यर्थः; विधानुदिते समागतः, विध्-दयसमकालं समागत द्रव्यर्थः; दजन्यां प्रभातायां प्रस्थितः, दजनीप्रभातसमकालं प्रस्थित द्रव्यर्थः।

⁽১১) বোপদেব ও ভট্টোজিদীক্ষিত এই স্থলে তৃতীয়াদি পাঁচ বিভক্তির বিধান করিয়াছেন।

⁽১২) বোপদেব, ক্রমদীশ্বর, ও ভট্টোজিদীক্ষিত প্রথমা প্রভৃতি পাত বিভক্তিরই বিধান করিয়াছেন।

७৮। साधुनिपुणास्यामचीयाम्।

প্রশংসা বুঝাইলে, সাধু ও নিপুণ শব্দের ঘোগে, সপ্তদী বিভক্তি হব। যথা, অ্যাকটেন্ত साधुः, साहित्ये निष्ठयाः (১৩)।

७৯। तस्य सहिनिना नर्माण्।

ইনিসহিত কপ্রতায়ের প্রয়োগে, কর্মে সপ্তমী বিভক্তি হয়। যথা, অধীনদলন অধীনী আলেমেট, অবদীর্ঘদলন অবদীর্ঘী রবৈ।

१०। अध्वनो व्यवधी प्रथमा च।

रादधान तूसारेल, अध्वताहरू गत्मत छेहत मध्यी ७ श्रथम।
विचिक्ति रत। यथी, चामी वनात् पञ्चस क्रीमेषु पञ्च क्रीमा वा,
पञ्चकीमव्यवघाने विदाते इत्यर्थः ; प्रयागः पाटि बिदाते इत्यर्थः ।

वोजनेषु दम्म योजनानि वा, दमयोजनव्यवधाने विदाते इत्यर्थः ।

१५। प्रसितोत्युकाभ्यां हतीया च।

প্রসিত ও উৎসুক শব্দের যোগে, সপ্তমী ও তৃতীয়া বিভক্তি হয়। যথা, ঘলদু দধিন:, धनैः प्रसितः; विद्यायासुद्धानः, विद्ययोद्धानः।

१२। कियामध्येऽध्वकालास्यां पञ्चमी च।

দুই ক্রিয়ার যধ্যবতী অধ্ববাচক ও কালবাচক শব্দের উত্তর সপ্তমী ও পঞ্চমী বিভক্তি হয়। যথা, অধ্ববাচক—অবসিদ্ধ ব্যৈকা ক্রীয় ক্রীয়াল্লা বক্সা বিচ্ফার; কালবাচক—অবসন্তা শুক্লা ভ্রাই ভ্রাস্থাল্লা থীকা।

90। दूरान्तिकार्थियो हितीयाहतीयापश्चम्यस দূরার্থ ও অন্তিকার্থ শব্দের উত্তর সপ্তমী এবং ছিতীয়া, ভৃতীয়া, ও পঞ্চমী বিভক্তি হয়। যথা, दूरे चामस, दूरं चामस, दूरेचा

⁽১৩) বোপদেবমতে বন্ধী সপ্তমী উত্তর্ই হয় !

यामस्, दूरात् यामस्यः चिनिके ग्टहस्य, चिनिकं ग्टहस्य, चिनिकोन ग्टहस्य, चिनिकात् ग्टहस्य। विश्वित श्रेत श्रेत श्रो। यथी, दूरो यामः, दूरः पत्याः।

१८। षष्टी चानादरे।

क्रिया द्वां व्यवक्षा तूसांक्रेटन, व्यवक्षात्वत् उत्वत् मश्वरी ए यश्ची विरुक्ति रया। यथा, क्ट्रि चित्री जगाम, क्ट्रतः ग्रियोर्जगाम ; क्ट्रनं ग्रियुमनाद्वत्वेत्वर्थः।

१८। साचित्रस्तिभिय।

माकिन, প্রতিভূ, কুশল, श्राधिन, ঈश्वत, অধিপতি, প্রमূত, আযুক্ত, দারাদ, এই সকল শব্দের যোগে, সপ্তমী ও ষষ্ঠী বিভক্তি হর।
যথা, বিবাই साची, विवादस्य साची; व्यवहारे प्रतिभूः, व्यवहारस्य प्रतिभूः; मीमांसायां कुश्वतः, मीमांसायाः कुश्वः;
स्तियां प्रस्ततः, स्तियाः प्रस्ततः।

१७। यतस निर्द्वीरणम्।

कार्ज, श्रेम, क्रिया, अथवा मर्जा हाता, मधूमत मजाजीत हरेट একের যে পৃথককরণ, তাহাকে নির্দ্ধারণ করে। যাহা হইতে, নির্দ্ধারণ করা যার, তাহার উত্তর সপ্তমী ও ষষ্ঠী বিভক্তি হয়। यथा, জাতি हারা—मत्तुचेषु चाल्यश स्त्ररः, मतुच्याणां चाल्यियः स्तरः; श्रेम हाता—गोषु क्रच्या बद्धचीरा, गवां क्रच्या बद्धचीरा; क्रिया हाद्धा—अध्यमेषु भावनाः घोष्ठमामिनः, अध्यमानां भावनाः घोष्ठमामिनः; সংজ্ঞা हाता—क्राचेषु मेत्रः प्रवीयाः, क्राच्यायां मेत्रः प्रवीयाः।

99 । निमित्तात् कर्मसमवाये विभाषा । কর্মের সুহিত সমৃদ্ধ থাকিলে, নিমিত্রবোধক শব্দের উত্তর বিকল্পে

मश्रमो हरा। यथा, चर्माणि दोषिनं इन्ति, दन्तयोर्द्धनि क्रुञ्जरम्, केमेषु चमरीं इन्ति, सीस्त्रि प्रष्यवको इतः। পक्त्र हर्ट्यो। यथा, स्रुताफवाय करियं इरियं प्रवाय इत्यादि (১৪)।

কারক।

१७ । कियान्वयि कारकम्।

ক্রিরার সহিত যাহার অন্বর হর, তাহাকে কারক বলে।

१ । षट्कारकाणि।

অপাদান, সম্পুদান, করণ, অধিকরণ, কর্ম, কর্ত্তা, এই ছর কারক।

অপাদান।

৮०। यतो विश्वेषोऽपादानम्।

bs । भीतार्थानां भयहेतु:।

छप्तार्थ ও जानार्थ धाजूत প্রয়োগে, छत्तर्यु অপাদান रह। यथा, छप्तार्थ—व्यामाहिमेति, महिषात् सस्यति ; जानार्थ—स्रातपात् सायते, मसुकाद्यति ।

- ४२। हेतुरत्यत्तेः।

উৎপত্তির কারণ অপাদান হয়। যথা, বীলাহন্ত্রী জায়র, দিৱ:

• (১৪) বৈরাকরণেরা কেবল সপ্তমী বিধান করিরী, स्ताफसाय কবিয়া ভবিষ্ট দ্বাৰ, ইত্যাদিকে অপপ্রয়োগ বলেন। पुत्रतो जायते, दुग्धात् धनस्तत्वात्, धन्मीत् सुखं भवति, खध-न्मीत् दुःखसुद्भवति ।

৮७। बाविभवनस्रभवः।

ভূধাতুর প্রয়োগে, আবিভাবভূমি অর্থাৎ প্রকাশস্থান অপাদান হয়। যথা, ভ্রিনবনী गঙ্কা দেশবনি, बल्मीकापात् দদবনি धतुः-खर्ण्डमाखर्ण्डच्यः आविभेवतीत्यर्थः।

५८। विरामार्थीनां यतो विर्ति:।

যাহা হইতে বিরঙি হয়, বিরামার্থক ধাতুর প্রয়োগে, উহা অপা-দান হয়। যথা, অধ্যয়বাদিহদেনি, করস্তানিবর্ননী।

৮৫। पराजेरसञ्चम्।

পরাপূর্বক জিধাতুর প্রয়োগে, অসম বিষয় অপাদান হয়। যথা, অध्ययनात् पराजयते, पापात् पराजयते; अध्ययनं पापञ्च सोदुससमर्थं द्रत्यथेः।

५७। यस्याद्यनमिक्कति।

याशत जामन्त, जर्था । या प्राचित्र ना शांत्र अहे हेक्षा करत, जेश जाशांत्र रहा। यथा, ग्रारेन्त भंते, पित्र निवीयते, दक्षोबुक्तायते, गुरुः पिता दक्षानी न मां प्रक्षोदिति बज्जया भयेन ना तह्र्यन-प्रयादपसरतीलाथेः।

৮१। यतो जुगुपा तदयीनाम्।

যাহাতে জুপ্লপ্সা জন্মে, জুপ্লপ্সার্থক ধাতুর প্রয়োগে, উহা অপাদান হয়। যথাঃ पापाळ्यसुप्ति, नरकात् बीमस्यते :

৮৮। त्रपार्थीनां यतस्त्रपा।

যাহার নিকট লাজ্জত হয়, লজ্জার্থক ধাতুর প্রয়োগে, উহা অপা ' দান হয়। যথা, যহার্শক্ষান, দিন্তজ্বদান, দান্ত্রলিন্দ্রীন।

৮৯। अधीत्यर्थानामध्यापयिता।

च्यायतार्थक थाजूत প্রয়োগে, অধ্যাপরিতা অপাদান হয়। यथा, जपाध्यायादधीते, रहोः पठति।

৯০। वारणार्थानामीश्वित:।

वादनार्थक थांजूद श्राह्माता, निर्वार्ध्यमात्मद द्वेश्मिड जाशानां इत । यथा, चात्रेयः काकं वार्यति, यवेध्यम्द्वागं निषेधति, व्यसनात् प्रचं निवारयति ।

৯১। ऋत्यर्थानां त्रावयिता।

ख्यनार्थक थांजूर श्रद्धारम, खांविश्व ज्यानान हत । यथा, सरीः यास्त्रं व्हचोति, नटाद्गोतिमानर्णयिति, नस्मात् खतं भवता, मया खतमिदं तातात्।

৯২। ग्रहणप्राप्त्रायानां तत्स्यानम् ।

গ্রহণার্থক ও প্রাপ্তার্থক ধাতুর প্রয়োগে, গ্রহণস্থান ও প্রাপ্তিস্থান অপাদান হয়। যথা, গ্রহণার্থক—আবাজারিদইন অল্লানি, দলাথা কমোহন ; প্রাপ্তার্থক—ভঘাখ্যাবাহিত্যা দামানি, ধ্যবির্ঘান ভমন ।

ని । प्रमादार्थीनां यत: प्रमाद: ।

व বিষয়ে প্রমাদ হয়, প্রমাদার্থক ধাতুর প্রয়োগে, উহা অপাদান হয়। যথা, ঘল্মান্ দলাত্তানি, অध्ययनাट्नवधानम्।

সম্প্রদান।

२८। यसौ दानं, सम्प्रदानम्।

यांशांक कानल 'वल मिल्या यांग्न, जांशांक मम्भूमान कांत्रक वत्न। यथा, दरिद्राय धनं ददाति, भिच्चने भिचां ददाति, सर्वेखं स्टाने दद्यात्।

৯৫। बचर्यानां प्रीयमाणः।

হৃচ্যর্থক ধাতুর প্রয়োগে, প্রীয়মাণ সম্পুদান হয়। য়থা, मोदकः মিমব रोचते, इट् मह्यं खट्ते।

৯७। खुहेरीश्वत:।

क्पृश्थिष्ठ्र প্রয়োগে, কর্ত্তার ঈপ্সিত সম্পূদান হয়। যথা, धनाय खुद्धयति, प्रद्रोध्यः स्पृद्धयति ।

२१। घारेब्त्तमर्णः।

धारिधाजूद প্রয়োগে, উত্তমণ मन्त्रुमान इत। यथा, स तस्यं सतं धारयति, तं महां सहस्यं धारयसि।

৯৮। कियया यसभिष्रेति।

क्रिया चाता याशांक অভিপ্ৰেড করে, অর্থাৎ याशांत প্রীতিজন-নাদির উদ্দেশে, ক্রিরার অনুষ্ঠান করে, উश मम्भुमान হয়। যথা, शिश्चने क्रीड्नकमानयात, सुरने दिवासामास्त्रति, सुम्नाय चन्द्रं दश्चिति।

> तत्त्तदुभूमिपतिः पत्नेत्र टर्शयन् प्रियदर्शनः। चर्मालङ्कितमध्वानं बुबुधेन बुधीपमः॥

৯৯। कोधद्रोक्तिव्यास्त्रयायांनां तदुहेस्य:। ক্রোধার্থক, দুোহার্থক, ঈর্ব্বার্থক, ও অসুয়ার্থক ধাতুর প্রয়োগে, ক্রোধাদির উদ্দেশ্য সম্পুদান হয়। যথা, দুলোয দুদ্দিনি, মূনব

द्रुश्चति, पतिवेशिने रेखेति, पतिदन्तिने खद्धयति ।

১००। प्रत्याङ्भ्यां ऋवः प्रवत्तकः।

প্রতি পূর্বক্ত আঙ্পূর্বক শ্রুধাতুর প্রয়োগে; প্রবর্তক সম্পুদান হয়। স্থা, दरिद्राय धनं प्रतिष्ट्योति, আছেयोति वा, दरि-द्रेय मह्यं धनं देहीति प्रवित्तिः प्रतिज्ञानीते इत्यंषः।

কর্ব।

५०५। साधकतमं करणम्।

किशंनिक्शिति य मर्स्स अधान छेशांत, छाशांत कर्ण कांत्र राति। यथा, चनुषा पद्धति, नर्योन म्हयोति, हस्तेन म्हसाति, हातेण नुनाति, बच्चा प्रहर्रति, भरेष विध्यति, चन्नेन सञ्चरते, वस्तेष खान्कादयि।

অধিকরণ।

५०२। स्राधारोऽधिकरणम् ।

कर्ता ७ कर्ब्यत त्य आधात, जांशांक अधिकत्य कांत्रक तत्न।
आधात जितिध ; खेकानिक, देवधिक, अञ्जितांश्रक। यथा,
क्षेकानिक—वने वस्ति, वनेंकदेशे इत्ययः ; नद्यां स्ताति, नद्या
एकदेशे इत्यथः ; ग्टहे खपिति, ग्टहैकदेशे इत्ययः ; ग्रयायां
शिशुं शाययति, श्रयेकदेशे इत्यथः। देवधिक—जले इच्छा,
जलविषये इत्यर्थः । विद्यायामनुरागः, विद्याविषये इत्यर्थः।
अञ्जितांश्रक—दुश्चे माधुर्यमस्ति, दुश्चस सर्वानवयवान् व्याप्यत्यः ;
तिलेषु तेनमस्ति, तिनस्य सर्वानवयवान् व्याप्यत्यथः ;
वस्त्री दाहिका शिकारस्ति, वस्तुः सर्वानवयवान् व्याप्यत्यथः।

কর্ঘ।

১०७। किययाकान्तं कम्म।

कर्त्तात क्रिता घाता घारा आक्रांख रत, जारांक कर्म कांत्रक राता । यथा, स्टर्च प्रविधात, चन्द्रं प्रस्तित, यामं गच्छति, खन्नं मुक्ते, क्रांचिवति, पुष्पं चिनोति, वस्त्रं ददाति, वेदमधीते, ष्टचम् खारोस्ति, शाखां क्रिवसि, कांग्नं भिवसि ।

५०८। चिषशीस्थासामधिकरणम्।

অধি পূর্বক শী, স্থা, আস্ ধাতুর অধিকরণ কারক কর্মসংজ্ঞা প্রাপ্ত হয়। যথা, মঞ্জানধিমীন, ফল্লাধিনিস্থান, আসদখ্যানী।

১०৫। उपान्वधाङ् वसः।

উপ, অনু, অধি, আঙ্ পূর্বক বস্ধাতুর অধিকরণ কারক কর্ম-সৎজ্ঞা প্রাপ্ত হয়। যথা, আমন্তমন্বনি (১৫), ফল্পনুবননি, নসমদিবন্দিনি, যুহীহাভয়নাৰ্বনি।

५०७। समिनिविधो विभाषा।

অভি পূর্ব্বক ও নি পূর্ব্বক বিশ্ ধাতুর অধিকরণ কারক বিকপ্পে কর্মসৎজ্ঞা প্রাপ্ত হয়। যথা, ধন্মীনধিনিবিমনৈ, ধর্মীয়েধিনিবিমন।

५०१। क्षद्रुचोक्पच्छ्योः सम्प्रदानम्।

উপদর্গ পূর্বক কুধ্ও জ্ঞহ্ ধাতৃর সম্পূদান কারক কর্মদৎজ্ঞা প্রাপ্ত হয়। যথা, শুলাদদিকুছানি, মনুদদিদুল্পানি।

১०৮। विभाषा दिवः करणम्।

দিব্ধাতুর করণ কারক বিকম্পে কর্মসংজ্ঞা প্রাপ্ত দয়। যথা, স্বালানু दोव्यति, স্বাহীশিলানি।

১०२। हे कर्माणी दुचादे:।

দুহ্, যাচ্ (১৬), চি, প্রচ্ছ্, নী, মন্ত্প্রভৃতি কতকণ্ডলি ধাতুর
দুই কর্ম থাকে, একের নাম প্রধান, অপরের নাম অপ্রধান।
ক্রিয়ার সহিত প্রধান ভাবে যাহার অন্তর্হার, তাহাকে প্রধান
কর্ম, আর অপ্রধান ভাবে যাহার অন্তর হয়, তাহাকে অপ্রধান কর্ম

⁽ ১৫) উপবাস অর্থে হর না। यथा, ভদবस्ति वने।

⁽১৬) যাচঞার্থ অর্থ, নাথ, ভিক্ষ প্রভৃতি।

वतन। यथा, गोपो गां इन्धं दोन्धि, दिर्हो राजानं धनं याचते, मानाकारो दृष्टं प्रमं चिनोति, शिष्टो गुरुं धन्मं प्रच्छित, पिता पुन्नं स्टहं नयित, देवा जनधिमस्टतं ममन्युः। अ इतन पृथ्ठ, धन, श्रृष्ट्य, धर्म, श्रृण, अगृष्ठ श्रधान कर्म्म; आत त्या, ताजा, तृक्ष, धर्म, गृह, जनिध अश्रधान कर्म्म। अरे अश्रधान कर्माक्रेट् अक्थिष अ अविविक्तिष्ठ कर्म्म वतन; अर्था उत्तर्भात वर्म्मात् वर्म्मात् अर्था अर्था वर्मात हेन्द्रा-वित्रह वन्याः, तम मकन कांत्रक श्रृष्ट ना हरेत्रा, कर्म्माका श्रृष्ट्यां कर्मात् अर्था अर्थान कर्म्म वतन श्रृष्ट्यां अर्था वर्मान कर्म्म वतन व्यव्यान स्वान प्रमं विवक्तः थाकित्व, गोईन्धं दोन्धि, राज्ञो धनं वाचते, दृष्टां प्रमं विनोति, गुरोधं क्षेष्टं प्रच्छित, पुन्नं स्टेहे नयित, जन्नधेरस्यतं ममन्युः; अरेह द्वात, यथामस्त्रन, अश्रामस्त्रन, यान्नो सन्ति, स्त्रने समन्याः; वर्षे क्राप्त, स्वानस्त्रन, स्त्रने सम्बद्धः, स्त्रने क्राप्त, स्त्रने सम्बद्धः, स्त्रने क्राप्त, स्त्रने सम्बद्धः, स्त्रम्य, स्त्रने सम्बद्धः, स्त्रम्यानस्त्रम्य, स्त्रामस्त्रम्य, स्त्रम्य, स

১১०। कर्माणि वाच्ये प्रथमा।

कर्म्मदोठाপ্রয়োগে, কর্মকারকে প্রথম বিভক্তি হয়। যথা, यामो गम्यते, चन्द्रो दृष्यते, दृच चारुह्यते, ग्रमुरभिद्वह्यते।

५५५। न्यादेः प्रधाने।

কর্মবাচ্যপ্ররোগে, নী প্রভৃতি (১৭) ধাতুর প্রধান কর্মে প্রথমা বিভক্তি হয়। যথা, गौर्यामं नीयते, দ্বিयते, ক্রম্বারী, ভল্লারী বা।

५५२। दुहा देरप्रधाने।

কর্মবাচ্প্রোগে দুহ্ প্রভৃতি (১৮) ধাতুর অপ্রধান কর্মে প্রথমা

⁽১৭) নী, হা, কৃষ, বহ্। চারি ধাতুই প্রায় অকার্থবোধক।

⁽১৮) দুহ্, যাচ্, পঢ়, দঙ্, কথ্, প্রছ্, চি, জ, (কথনার্থ কথ, বচ্, বদ্, ভাষ্প্রভৃতি), শাস্, জি, মন্, মুব্।

विस्ति रहा। यथी, मोईम्बं इह्यते, राजा धनं बाच्यते, चौरः यतं दण्डाते, गुर्वभेन्सं एच्डाते, दचः पुष्पं चीयते, पिच्यो धर्मः-मनुभिच्यते, जनधिरस्तं मसन्ये।

কর্ত্তা।

১১७। कियासम्पादक: कत्ती।

यांशत श्रवास्त्र क्रिया मान्नम श्य, जांशांक कर्ज्कातक राल। यथा, मिश्वः क्रीड्रित, गौः मन्दायते, मेघो गर्ज्जात, गोपो दुग्धं दोग्धि, माजाकारः प्रम्यं चिनोति, वानरो हज्जमारोहति, राजा प्रजाः पाजयति।

১১৪। **দথী জনস্থ।**যে প্রযোজক অর্থাৎ অন্যকে ক্রিরার প্রবর্তিত করে, তাহাকেও
কর্তুকারক বলে।

५५८। त्वतीया प्रयोच्ये।

ক্রিয়ার অণিজন্ত অবস্থার কর্তাকে ণিজন্ত অবস্থার প্রযোজ্য বলে।
প্রযোজ্য কর্ত্তার বিভক্তি হয়। যথা, ইবহন্ন আহেন দবিরে,
বার্রনা ইবহন্নিন আহেন দাব্যারি। এ স্থানে, দেবদত পচনক্রিয়ার অণিজন্ত অবস্থার কর্তা ছিল, ণিজন্ত অবস্থার তাহার
প্রযোজ্য সংজ্ঞাও তাহাতে তৃতীয়া বিভক্তি হইল; আরু, যজ্জদত
দেবদত্তকে পচনক্রিয়ার প্রবর্ত্তিত করিতেছে, এজনা দে প্রযোজক,
তাহার কর্ত্ব্যংজ্ঞাও তাহাতে প্রথমা বিভক্তি হইল।

५५७। गत्यर्थानां कमासंज्ञा प्रयोज्यस्य ।

গমনার্থ ধাতুর প্ররোগে, প্রবোজ্য কর্তার কর্মদ জা হয়। য়থা, ইবহুনী নত্ত দক্ষনি, বস্তুহুনী ইবহুন নতত্ত দস্বনি।

५५१। ज्ञानाधनाधीनाञ्च।

জানার্থ ও অশনার্থ (১৯) ধাতুর প্রয়োগে, প্রযোজ্য কর্তার কর্ম-সৎজা হয়। যথা, জানার্থ—মিজ্ঞা ধন্ম বুদ্দার, যুক্ত মিজ্ঞা ধন্ম বীধ্যারি; ভোজনার্থ—মুদ্দারের মস্মারি, মারা দ্বসমন্ত্রন্দ স্বাম্যার্থনি।

১১৮। यन्द्रकायामकमाकाणाञ्च।

শন (২০) কর্মক (২১) ও অকর্মক ধাতুর প্রয়োগে, প্রয়োজ্য কর্তার কর্মসৎজ্যা হয়। যথা, শনকর্মক—মিন্দ্রী बेटमधीते, गुद्ধः মিন্দ্র बेट्सध्यापयति । অকর্মক—মিন্ধু: মিন্দ্র, মানা মিন্দু মাবয়নি।

১১৯। विभाषा चूज्रस्त्रो:।

क म ् अ कृष् भाजूत श्राताता, श्राताका कर्दात विकल्ण कर्मान रखा रव । यथा, भारो भारो हरति, प्रमुष्टी भारो न ना भारे हार-यित ; कुमाकारो घटं करोति, यज्ञदत्तः कुमाकारं कुमाकारेख वा घट कारयित ।

১२०। कर्मभावयोस्नृतीया।

कर्म्मवीछा ও ভাববাচা প্রয়োগে, कर्खात ज्ञीता विश्वक्ति इत । यथा, कर्म्मवीछा—गोपेन इन्हां इल्लाते, माजाकारेण एष्टां चीयते, राजा धर्म दीयते ; ভাববাচা—शिशुना कंदाते, यूना इस्रते, सक्षेन सुम्बते ।

- (১৯) অদ্, থাদ্, ভক্ ভিন্ন।
- (২০) শব্দাত্মক বিষয় পদ, বাক্য, গ্রন্থ, উপদেশ, তির্ভার, প্রশংসা প্রভৃতি। °
- (২১) ছো, ক্লেন্দ্, শব্দায়, জম্পু, ভাষ্, লপ্, জা, বিজ্ঞা, উপ-লভ ভিন্ন।

>>>। कर्मासेचायां प्रयोज्यकर्माणोः प्रथमादितीये कर्माणाः।

य स्ल প্রযোজ্য কর্ত্তার কর্মদংজ্ঞা হয়, তথায়, কর্মবাচ্যপ্ররোগে, প্রযোজ্য কর্ত্তার প্রথমা বিভক্তি আর কর্মে দ্বিতীয়া বিভক্তি হয়। যথা, যিচ্ছাল नेदोऽभीयते, सुस्ता शिच्छो नेदमध्यास्रते। এ स्ल, প্রযোজ্য কর্ত্তা শিষ্যে প্রথমা বিভক্তি আর কর্মা বেদে দ্বিতীয়া বিভক্তি হইল। তদ্ভিম স্থলে, ইবহন্ন আইবল দক্ষের, যল্পহন্নন ইবহন্ন আইবল দক্ষের।

५२२। निरुत्ती च प्रष्टत्तिवत् कियाया:।

১২৩ 🕺 विवचावधात् कारकाणि।

रघ चल रा कांत्रक विश्वि इहेन, विवक्ता त्या , अशीय दक्तांत्र हेन्हा अनुपादत, जांशांत अनाथांचांव निकिष्ठ इहेन्ना थांकि। घथा, बद तं गक्ति, बद हे गक्किति; बद हं प्रविधाति, बद हे प्रविधाति; प्रक्षोत्यः स्मृह्यति, प्रमाणि स्मृह्यति; प्रक्षोत्यः स्मृहा, प्रक्षेत्र सुहा; चरये क्राप्यति, चरौ क्राप्यति; गा दुग्धं टोग्धि, गोभ्यो दृग्धं दोग्धि; न्दर्गं घनं याचते, न्द्रपाद्धनं याचते; धर्चं प्रस्मं चिनोति, दृचात् प्रस्मं चिनोति; प्रस्नं स्टहं नयति, प्रस्नं न्द्रहे नयति; जनधिमन्द्रतं भमन्युः, जनधेरन्द्रत ममन्युः; शिष्याय विद्यां नितर्रति, शिष्ये विद्यां वितर्द्रति; हिमवतो गङ्गा प्रभ-वित, हिमवति गङ्गा प्रभवति।

তদ্ধিত।

५। तिष्ठतः।

এই প্রকরণে বে সকল প্রভাব বিহিত হইতেছে, ভাহাদের নাম ভদ্ধিত।

२। णिति दक्षिराद्यस्य।

মূর্দ্ধন্য ণ ঈৎ যায় এরূপ ভদ্ধিভপ্রভায় হউলে, প্রাতিপদিকের আদ্য স্বরের বৃদ্ধি হয়।

७। सुभगादेवभयो:।

মুন্তগা, দুর্ভগা, অধিদেব, অধিভূত, পরলোক, মর্মলোক, অনুশল, পরব্রী প্রভৃতি প্রাতিপদিকের অন্তর্গত উভয় পদের আদ্য স্বরের কৃষ্ণি হয়।

8 । सुपञ्चाला देहितीयस्य ।

মুপঞ্চাল, অৰ্দ্ধপঞ্চাল, অগ্নিদেবতা, পিতৃদেবতা, দিবৰ্ম, ত্ৰিবৰ্ম, চতুৰ্বৰ্ম, পঞ্চবৰ্ম, প্ৰভৃতি প্ৰাতিপদিকের অন্তৰ্গত বিভীয় পদের আদ্যাৰবের বৃদ্ধি হয়।

१ । न णिलायं स्वतः

মুর্দ্ধন্য ৭ ইতের আদ্যম্বরবৃদ্ধিরূপ যে কার্য্য বিহিত ছইল, তাহা সর্ব্বত হয় না।

७। लोपोऽवसँवसंयोयस्वरयो:।

ভদ্ধিভপ্রভায়ের য ও স্থরবর্ণ পরে থাকিলে, প্রাতিপদিকের অন্ত-স্থিত অবর্ণ ও ইবর্ণের লোধা হয়।

१। राषा उवर्णस्य।

তন্ধিতপ্রতায়ের য ও ম্বরবর্ণ পরে থাকিলে, প্রাতিপদিকের অন্ত-স্থিত উবর্ণের প্রণ হয়।

४। ऋदोदौद्ग्रो य: खरवत्।

ঞ্চনার, ওকার ও ঔকারের পরস্থিত তদ্ধিতপ্রতারের য স্বরকার্য্য নির্বাহ করে।

२। टेर्बीपो डिति।

ডকারেৎ ভদ্ধিভপ্রভায় পরে থাকিলে, প্রাভিপদিকের টির (২২) লোপ হয়।

১०। तेविद्यते:।

বিৎশতিশব্দের তি এই ভাগের লোপ হয়।

५० । दूयवी यवयोराद्यचः पदान्ते णिति ।

ণকারেৎ 'তব্বিতপ্রতায় হইলে, পদের ক্রেক্তব্তি আদাস্বর্দ্ধান জাত যস্থানে ইয়, বস্থানে উব, হয়।

১२। द्वारादीनाञ्च।

(২২) অস্তা হার ও তদরধি বর্ণকে টি বলে।

দ্বারা প্রভৃতি (২০) প্রাতিপদিকের আবদ্য য ও ব স্থানে ইয় ও উব হয়।

১७। न खागतादीनाम्।

স্থাগত প্রভৃতি (২৪) প্রাতিপদিকের আদায়ও ব স্থানে ইয় ও উব হয়না।

५८। वा खापदन्यङ्को:।

শ্বাপদ, ন্যক্কু, এই দূই প্রাতিপদিকের বিকম্পে।

५८। अव्यवासितः।

থে সমস্ক ভদ্ধিতপ্রতারের চ ইৎ যায়, ভদস্ক শব্দ সকল অব্যর হয়।

५७। चपत्थे।

বক্ষ্যমাণ প্রভায় দকল অপত্য অর্থে বিহিত হয়।

১१। चदन्तात् विण्।

अभि अर्थ, अकावां अ श्रीहिश्वाति है है है ति है इस, व न है ६, वे थाति । वथा, मूरस्यापत्यं शौरिः, दशर वसापत्यं दाशरियः, द्रोपस्यापत्यं दाशरियः, द्रोपस्यापत्यं दाशिक्षर-स्रोपस्य पत्यं द्रोपिः, गवलापस्यापत्यं गावलापिः, युधिष्ठिर-स्रापत्यं यौधिष्ठिरः, स्रक्लानस्यापत्यं सार्क्षिः, विकर्णस्यापत्यं विकर्णस्यापत्यं विकर्णस्यापत्यं विकर्णस्यापत्यं नावर्ष्ट्रिकः, क्रम्णस्यापत्यं कार्विः, प्रदानस्यापत्यं प्रादानिः।

১৮। बाह्यादिभ्यस्र।

অপতা অর্থে, বাহু প্রভূতি প্রাতিপদিকের উত্তর বিণ্হয়। যথা,

⁽২৩) ছার, বর, হাধ্যায়, ব্যক্তন, হাতি, হ্র, স্ফাক্ড, হাদুমূদু, খস্, খন্, হা।

⁽২৪) স্থাগড, স্থার, স্থাস, ব্যাস্ক, ব্যাড়, ব্যবহার, স্থপতি।

बाह्योरपत्सं बाहिनिः, उपवाह्योरपत्सम् श्रीपवाहिनः, उपविन्दोः स्रपत्सम् श्रीपविन्दिनः, दृषत्सा स्रपत्सं वार्षतिः, दृषत्वाया स्रपत्सं वार्कतिः, स्रगनाया स्रपत्सं स्रागितः, श्रीमताया स्रपत्सं स्रोमितिः, दृन्धिताया स्रपत्सं दौन्धितिः, उदस्रोरपत्सम् स्रोदश्चिः।

১৯। डको व्यासस्यातोः विणि।

ষিণ্প্রতার হইলে, ব্যাস, সুধাতৃ, এই দুই প্রাতিপদিকের উত্তর ডক হর, ড ইৎ অক থাকে। যথা, আর্ম্যোদনা বীঘারনিঃ, স্থায়ঃ অদনা মীঘাননিঃ।

२०। नड़ादिभ्यः षायनण्।

अभाग अर्थ, नष् श्रम्ण श्रीजिभिनित्व खेढत यात्रन् रह, य न हें आहन थीति। यथी, नष्ट्यापत्नं नाष्ट्रायनः, चरस्यापत्नं चारायणः, सम्मस्यापत्नं मोज्ञायनः, सम्बस्यापत्नं साम्रबायनः, नरस्यापत्नं नारायणः, दासस्यापत्नं दासायनः, कात्रबस्यापत्नं कात्रवायनः, यक्टस्यापत्नं याक्रियनः, जबस्यरस्यापत्नं जाव-स्वरायणः, द्रोणस्थापत्नं द्रौणायनः, पर्वतस्थापत्नं पार्वतायनः, युगस्यरस्थापत्नं योगस्यरायणः, सम्बस्यापत्नम् स्थापनायनः, वदरस्थापत्नं नादरायणः, सद्भवस्थापत्नम् स्थोदम्बरायणः, दक्षसापत्नं दाक्षायणः।

२५) गर्गीद्भ्यः ष्यण्।

क्रभं कार्स, नर्भ প्रकृषि श्रीष्ठिलिनित्व केत्र यान् इत्, य न देव, य श्रीतः । यथी, गर्मस्वापत्वं गार्ग्यः, वत्वस्वापत्वं वात्व्यः, स्वमस्वेदपत्यम् सागस्यः, पुत्रस्वेदपत्वं पौत्रस्यः, विश्वावसोदपत्वं वैश्वावस्यः, बोहितस्वापत्वं वौहित्यः, वश्वोदपत्वं वाश्वस्यः, मक्होरपत्यं माक्डव्यः, मधोरपत्यं माधव्यः, जिगीनोरपत्यं जैगीवव्यः, कृतिव्यः अपत्यं कौतिव्यः, यज्ञवल्कस्यापत्यं याज्ञ-वल्काः, ग्रिक्डवस्यापत्यं ग्राक्डिल्यः, व्याकस्यापत्यं वावकाः, चुन्कस्यापत्यं चौनुक्यः, स्वज्ञवस्यापत्यं मौज्ञल्यः, जमर्ग्नरपत्यं जामर्म्वाः, पराग्ररस्यापत्यं पास्प्यर्थः, जाद्वक्षेस्यापत्यं जात्रक्ष्यः, प्रतमावस्यापत्यं पौति-मास्यः, उन्तकस्यापत्यम् स्वीन् क्याः, समिनेशस्यापत्यम् स्वीन् क्याः, रितेरपत्यं देत्यः, स्वरितेरपत्यम् स्वादित्यः, प्रजापतेरपत्यं पाजापत्यः।

२२। शिवादिभ्यः पण्।

अला अर्थ, निर श्रेज्ि श्रीजिलिनित्त उत्तर वर्षं, य १ दे, अ थांक। यथा, जिनस्य पार्यं घेनः, ककृत्स्यसापत्यं काकृत्सः, कहोड्सापत्यं काहोड्ः, कृपिञ्चनसापत्यं कौपिञ्चनः, विश्ववयास्यं कौपिञ्चनः, विश्ववयास्यं कौपिञ्चनः, विश्ववयास्यं क्षाव्यः, कर्णनाभसापत्यस् वीर्यनाभः, प्रयाया सपत्यं पार्थः, यक्तसापत्यं याक्तः, दृश्चस्यापत्यं दौष्ठाः, वह्यस्यापत्यं वाह्यः, स्वयःस्यूषस्यापत्यस् वायःस्यूषः, दृश्चस्यापत्यं वाह्यः, स्वयःस्यूषस्यापत्यस् वायःस्यूषः, दृश्चस्यापत्यः।

२७। विदाहे:।

अश्रा अर्थ, विन अञ्ि श्रीजिशिनित्तत उत्तर वर् रह। यथा, विद्खापत्य वेदः, उर्बुखापत्यम् खौर्वः, कद्यपद्धापत्य काद्यपः, चक्कि बद्धापत्य कौष्यकः, भरदाजस्थापत्य भारदाजः, उपमन्योः स्वपत्यम् स्वीपमन्यवः, विश्वानरस्थापत्य वेश्वानरः, स्टिषेणस्य स्वपत्यम् स्वार्षियाः, सरद्वतोऽपत्य सारद्वतः, असुनकस्थापत्य स्वीनकः, स्वकंत्रस्थापत्यम् स्वाकंत्रूषः, पुनर्का स्वपत्य पौनर्भवः, पुन्नस्थापत्य पौन्नः, दुष्ट्वरपत्य दौष्टितः।

२८। सम्बादेस।

खश्छा खर्श, ज्ध श्रेजृि श्रीं जिशिनित्वत छेतत वश् रत। यथा, धरारेपत्वं भागेवः, मरोचेरपत्वं मारोचः, विशिवसापत्वं वाशिष्ठः, कृतस्थापत्वं कौताः, गोतमस्थापत्वं गौतमः, खिङ्किरसोऽपत्वस् खाङ्किरसः, विश्वामित्वस्थापत्वं वैश्वामितः, धतराष्ट्रस्थापत्वं धार्त्तराष्ट्रः, पाण्डोरपत्वं पाण्डवः, वसुदेवस्थापत्वं वासु-देवः, वदोरपत्वं वादवः, परोरपत्वं पौरवः, रघोरपत्वं राघवः, करोरपत्वं कौरवः, मनोरपत्वं मानवः, द्वपदस्थापत्वं द्रौपदः, पर्वतस्थापत्वं पाल्वतः।

२৫। ऐच्हाककौरव्यमनुष्यमानुषा:।

अक्तांक, कोत्रवा, मनुषा, मानुष, এই চারি শব্দ নিপাতনে भिक्त रह। यथी, दक्काकोरपत्यम् ऐक्काकः, कुरोरपत्यं कौरव्यः, मनोरपत्यं मसुष्यः मानुषः।

२७। मातुर्हुर् संख्यायाः।

ষণ্ প্রত্যায় হইলে, সংখ্যাবাচক শব্দের পরবন্তী মাতৃশব্দের উত্তর ছুর্হয়, ড ইৎ, উর্থাকে। যথা, द्वयोमी होरपत्य देनाहरः, षखां मात्यामपत्य पाण्याहरः (২৫)।

२१। कन्यायाः कनीनः।

ষণ্প্ৰতায় পৰে, কন্যাশনস্থানে কনীন হয়। যথা, कन्याया चपस्यं कानीनः।

२४। स्त्रीभ्यः षेयण्।

অপতা অর্থে, ব্রীপ্রতায়ান্ত প্রাতিপদিকের উত্তর ষেয়ণ্ হয়, ষ ণ

(২৫) সম্ও ভদু শব্দের পূর থাকিলেও হয়। যথা, **सान्या**-तदः भाद्मातुरः। हे॰, अत थांक । यथा, गङ्गाया अपत्यं गाङ्गेयः, राधाया अपत्यं राधेयः, विनताया अपत्यं वैनतेयः, ताड्काया अपत्यं ताड्कीयः, सरमाया अपत्यं सारमेयः, स्वाणीया अपत्यं सीपर्णेयः, भिन्या अपत्यं भागिनेयः, मह्या अपत्यं माहेयः, कुन्या अपत्यं नौनेयः, रोह्तिया अपत्यं रौहियोयः, क्विस्त्या अपत्यं रौकिस्योयः, कुमारिकाया अपत्यं कौमारिकेयः, अध्विकाया अपत्यं कौमारिकेयः, अध्विकाया अपत्यं गौधेयः।

२ । गौधरगौधारौ।

गोधाया ऋषत्यम्, এই অর্থে, गौधर ও गौधार এই দুই শব্দ নিপাতনে দিদ্ধ হয়।

७०। ग्रुम्त्रादिश्यस्र।

क्रभजा व्यर्थ, चुं अन्ति श्रीजिशिष्टिकत छेवत (वश्न् इश्वः । यथी, चुंध्वस्थापत्यं गौधियः, खत्रेरपत्यम् चात्रेयः, विमात्रपत्यं वेमान्त्रेयः, धक्रनेरपत्यं धाक्तनेयः, धत्तवस्थापत्यं गातचेयः, इतरस्यापत्यं ऐतरेयः (

७५। लोपः षेयग्यवर्षस्य ।

ষেরণ্প্রতার হইলে, প্রাতিপদিকের অন্তস্থিত উবর্ণের লোপ হয়।
যথা, ভরেষ্ট্রেটেনেন্ড' নার্কষ্ট্রেট্র', কমন্তেল্লা অ্যান্ট কামন্ত্রেট্র'।

७२। न पाग्डुकद्रोः।

ें निष् ७ कक गरमत छेतर्गत लाभ हत्र ना। यथा, पावडीरपत्यं पावडनेयः, कट्रा खपत्यं काट्रनेयः।

७७। सुभगाइरिन् घेयाए।

ষেয়ণ্ প্রতায় হইলে, সুভগা প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর ইন্ হয়।

यथी, सुभगाया खपत्यं सौभागिनेयः, दुर्भगाया खपत्यं दौर्भा-गिनेयः, बस्वक्या खपत्यं बास्यकिनेयः, किनष्टाया खपत्यं कानिष्टिनेयः, मध्यमाया खपत्यं माध्यमिनेयः, परस्त्रिया खपत्यं पारस्त्रैयोयः

७८। कुलटाया ना।

কুলাটাশব্দের (২৬) উত্তর বিকম্পে। যথা, **ন্ধন্তাযো অদন্ত**' কীর্তাহ<mark>নিয়</mark>ে, কীন্তহয়ঃ।

७६। सम्बादिभ्यः षीयण्।

অপত্য অর্থে, স্বস্ প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর ধীয়ণ্ছয়, য ণ ইং ঈয় থাকে। যথা, ভারুত্যন্ত ভার্রীয়ঃ।

७७। पित्रमात्रष्टक्योः षेयण् वा ऋनोपस्र।

পিতৃষুসৃ ও মাতৃষুসৃ শব্দের উত্র বিকল্পে ষেয়ণ্ছয়, ষেরণ্ছইল থকারের লোপ ২র। যথা, पिल्लब्बस्पायं पेल्लबसेयः, पेल्लब-स्त्रीयः ; माल्लबसुरपायं माल्लबसेयः, माल्लबस्त्रीयः।

७१। रेवत्यादिभ्य: विकण्।

অপতা অর্থে, রেবতী প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর বিকণ্ হয়, ষণ ইং ইক থাকে। যথা, देवत्या खपत्यं रेवितकः, अश्वपाल्या खपत्यम् खाश्वपालिकः, कर्णयास्थापत्यं कार्णयास्किः, द्याङ-यास्थापत्यं दायाख्यास्किः।

७৮'। लोपो गर्गादेर्बद्धवचने।

বছবচনে গর্গাদির উত্তর বিহিত অপতাপ্রতায়ের লোপ হয়। ষথা,

(১৬) এছলে কুলটাশবে সতা ভিক্লোপজীবিনী স্ত্রী বুঝার, ব্যভিচারিণী নহে; ব্যভিচারিণী অর্থে কীন্তবৈঃ কীন্তবৈঃ এই দুই শব্দ হর। गर्भक्षापत्थानि गर्गाः, वत्यस्थापत्थानि वत्याः, श्वगस्तेरपत्थानि स्वगस्तयः, विश्वावसीरपत्थानि विश्वावसवः, बस्नोरपत्थानि वस्तवः, सङ्गस्त्रापत्थानि सङ्गनाः, जमदग्नेरपत्थानि जमदग्नयः, जात्र-कर्णस्थापत्थानि जात्रुकणोः, पूर्तिमाषस्थापत्थानि पूर्तिमाषाः।

७৯। यस्तादेः।

वह्रवाद्यात यक्कां ति उत्तर्व विश्व अथा श्रेष्ठा विश्व विश्व विश्व श्रेष्ठा श्रेष्ठा विश्व विश्

८०। विदादे:।

वक्ष्याप्त्यानि विदाः, उर्वेखापत्यानि उर्वोः, कथ्यपस्य स्था, विद्यापत्यानि विदाः, उर्वेखापत्यानि उर्वोः, कथ्यपस्य स्थापत्यानि कथ्यपाः, कृष्यिकस्थापत्यानि कृष्यिकाः, भरद्वाजस्य स्थापत्यानि भरद्वाजाः, उपमन्योरपत्यानि उपमन्यवः, विश्वानरस्य स्थापत्यानि विश्वानराः, ऋतभागस्यापत्यानि ऋतभागाः, हर्य-स्थापत्यानि हथेश्वाः, शरद्वतीऽपत्यानि शरद्वतः, शुनकस्य स्थापत्यानि श्रुनकाः।

८)। अत्यादेश।

वक्टरहरन खड़ानित छेडत दिश्ठि खपछा প्रजारत्नत स्नाप हत्। यथा, खत्नेरपत्मानि खत्नयः, स्नारपत्मानि स्मानः, कत्नतस्य 'खपत्मानि क्वत्याः, विशवस्यापत्मानि विश्वष्टाः, गोतमस्योपत्मानि गोतमाः, खिङ्गरसोऽपत्मानि खिङ्गरसः।

82 । **राजसंज्ञा**भ्यो विभाषा ।

বছবচনে রাজসৎজা প্রাতিপদিকের উত্তর বিধিত অপত্য প্রত্যয়ের

विकल्ला (ताल रहा। यथी, रघोरपत्यानि रघवः, राघवाः, कुरोः चपत्यानि कुरवः, कौरवाः; यदोरपत्यानि यदवः, यादवाः; इच्चाकोरपत्यानि इच्चाकवः, ऐच्छाकाः; वृष्णेरपत्यानि वृष्णयः, वार्ष्णेयाः; निमेरपत्यानि निमयः, नैमेयाः।

80। न स्त्रियाम्।

ब्रोलिक अथा প্रতারের লোপ इत ना। यथा, यक्कस्यापत्यानि क्लियः याक्करः, विदस्यापत्यानि क्लियः वैद्यः, क्रितेरपत्यानि क्लियः क्यात्रेयः, र्होरपत्यानि क्लियः राघयः।

88। अर्थविशेषे चापत्यानि।

অপতা অর্থে যে সকল প্রতার বিহিত হইল, তৎসমুদর অর্থ-বিশেষেও হইয়া থাকে।

8৫। दूय क्या गीन वीक्णासा

অর্থবিশেষে ইয়, কণ্, গীন, ষীকণ্, এই সকল প্রত্যায়ও যথাসম্ভব হইয়া থাকে। কণের গ ইৎ ক থাকে, গীনের গ ইৎ ঈন থাকে, ষীকণের য গ ইৎ ঈক থাকে।

८७। तद्वेत्ति तद्धीते।

तत् वेत्ति, तत् खधीते, এই मूरे अर्थ, श्रांजिপिमिटकत् उत्तत्, यथान्म अरुत, उत्तर श्रं अरुत श्रं अरुत श्रं अरुत श्रं अरुत, उत्तरं वेत्ति खधीते वा तार्किकः, न्यायं वेत्ति खधीते वा नैयायिकः, वेदान्तं वेत्ति खधीते वा वेदाः निकः, प्रराणं वेत्ति खधीते वा पौराणिकः, वेद वेत्ति खधीते वा वेदिकः, ज्वातिषं वेत्ति खधीते वा खालक्कारिकः, ज्वोतिषं वेत्ति खधीते वा ज्योतिषिकः, व्याकरणं वेत्ति खधीते वा वेयाकरणः, कमं वेत्ति खधीते वा कमकः, पदं वेत्ति खधीते वा पदकः।

८१। द्रखोऽन्य: शिचादे:।

শিক্ষা প্রভৃতি প্রাতিপদিকের অন্তাষ্বর হুম্ব হর। যথা, মিকা বিক্তি অধীন বামিক্তকঃ, দীদায়া বিক্তি অধীন বাদীদায়কঃ।

८৮। तेन प्रोक्तम्।

तेन प्रोत्तम्, এই অर्थः, श्रीजिशिवित्वतं उठतः, यथांमञ्चतः, उक्तः श्रीतः याद्यः, महाना प्रोतः भाननं मानवीयम्, विष्णुना प्रोतः वैष्णवम्, पतञ्जनिना प्रोतः पातः आवम्, क्षायम्, विष्णुना प्रोतः वैष्णवम्, पतञ्जनिना प्रोतः पातः ञ्चायम्, क्षायदेन प्रोतः काषादम्, पाणितिनः प्रोतः पाणिनीयम्, जैनितिना प्रोतः जैनितीयम्, अतिषा प्रोत्तम् आव्येषम्, उपनया प्रोत्तम् खौपनसम्, खिल्रायम्, प्राप्तरेष्य प्रोत्तम् खौपनसम्, खिल्रायम्, वहस्यितमा प्रोतः वाहं स्वस्यम्, नारदेन प्रोतः नारदीयम्, वास्त्रीकिना प्रोतः वाद्योकीयम्, वीधायनेन प्रोतः वीधायनीयम्।

8a। ते**न क्रतम्**।

तेन क्वतम्, এই অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর, यथामस्रव, উক্ত প্রভাষ সকল হয়। यथा, कायेन क्वतं कायिकस्, खङ्गेन क्वतस् खाक्किस्, सरीरेख क्वतं सारीरिकस्, वाचा क्वतं वाचिकस्, वचनेन क्वतं वाचिनकस्, सनसा क्वतं सानस्विस्, सहसा क्वतं साहस्विकस्, प्रवृषेख क्वतं पौक्षेयस्, सिक्किसिः कवं साजि-कुस्, चुद्राभः कवं चौद्रम्।

৫०। तेन रक्तम्।

तेन रत्तम्, এই অর্থে প্রাতিপদিকের উত্তর, যথালন্তব, উক্ত প্রতায় সকল হয়। যথা, কঘাৰথ হক্ত কাঘাৰন্, কল্পনীৰ হক্ত কীল্পন্য, নীক্সা হক্ত নীৰন্, স্থাইক্সা হক্ত স্থাইক্স্ मञ्जिष्टया रक्तं माञ्जिष्म्, जाचवा रक्तं जाचिकम्, रोचनया रक्तं रोचनिकम्, पोतेन रक्तं पीतकम्।

७५। साख देवता।

सा खस देवता, अरे व्यर्थ, श्रीजिशिमित्वत छेवत यथामस्वत, छेक श्रुणत मकल रत। यथा, मिनोऽस देवता मैनः, विश्वादस देवता वैद्यादः, मित्तिदस देवता माक्तः, गर्यापितिदस देवता गायापसः, प्रजापित्दस देवता प्राजापतः, वायुदस देवता वाययः, स्वित्त्वस्य देवता खान्नेयः, सोमोऽस देवता सौन्यः, द्यावाष्ट्रिय्यौ सस्य देवते द्यावाष्ट्रियवीयं द्यावाष्ट्रिय्यम्, खम्नीमोमावस्य देवते सम्बोमोमीयम् खम्नीमोन्यस्।

(२। तस्य सम्बद्धः।

तस्य समूहः, अरे अर्थ, श्री अपित्वतं छेरतं, यथामञ्जतं, छेरु श्रुवातं मक्त रत्र। यथा, भिचाणां समूहः भेचाम्, अङ्गराणां समूहः खाङ्गारम्, मय्राणां ममूहः मायूर्म्, धेनूनां समूहः घें तस्म, कवापानां समूहः कावापकम्, राज्यानां समूहः राज्यकम्, राजप्रचाणां समूहः राजपुच्नकम्, मतुष्याणां समूहः मातुष्यकम्, अपूपानां समूहः खापूपिकम्, गणिकानां समूहः गाणिकाम्, मास्तुणानां समूहः बास्तुष्यम्।

৫७। सम्बन्धे खयल कागल तन:।

मबूर वार्षि, প্রাতিপদিকের উত্তর, यथामञ्जर, খণ্ড, কাণ্ড, ও তর্ল্ প্রতায় হয়। यथा, कामजानां समूद्धः क्षेमख्याख्य, क्षास्तानां समूद्धः क्षास्त्रव्यक्षम्, दूर्व्याचां समूद्धः दूर्व्याकाव्यम्, कर्व्याचां समूद्धः दूर्व्याकाव्यम्, कर्व्याचां समूद्धः कर्वाकाव्यम्, कर्व्याचां समूद्धः कर्वाकाव्यम्। उन्थ्राधाय नक्ष जीवित्र रह। जनानां समूद्धः अनता, बम्बूनां समूद्धः बस्तुता।

৫८। तत भव:।

নম মবঃ, (২৭) এই অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর, যথাসম্ভব, উক্ত প্রত্যয় সকল হয়। यथी, मधुरायां भनः माधुरः, कविक्के भनः कालिक्सः, यामे भवः यास्यः यामीणः, नगरे भवः नागरिकः, वर्षासु भवः वार्षिकः, ग्राह् भवः ग्राह्दः, वसने भवः वासन्तिकः, हेमने मनः हैमनिकः हैमनः, ससुद्रे भनः सासुद्रिकः, दीपे भनः दैपायनः हेप्यः, खकाले भवः खाकात्तिकः, प्रश्रद्भवः प्राश्वतिकः, कुले भवः कुलीनः, दुष्कुले भवः दौष्कुलेयः दुष्कुलीनः, प्राचि भवं प्राच्यम्, दिश्य भवं दिग्यम्, वर्गे भवं वर्ग्यम्, कच्छे भवं कच्छात्रम्, दने भवं दन्यम्, तानी भवं तानव्यम्, स्रोडे भवम् स्रीड्यम्, जिङ्गामू वे भवं जिङ्गामू बीयम् खन्तरे भवम् खान्तरिकम्, मनसि भवं मानसं मानसिकम्, घरीरे भवं घारीरं घारीरिकम्, खरख्ये भवः चारत्यको मतुष्यः चारत्यः पग्नः, कोर्घे भवं कौर्ययम्, दक्त भवस् ऐक्तिस्, बोके भवं बौकिकस्, भूमी भवः भौनः, दिवि भवः दिव्यः, खये भवम् खयाम्, खाटौ भवम् खाद्यम्, चन्ते भवम् चन्यम्, वेशे भवा वेग्या, सर्व्वकाछे भवं सार्व्वकालिकम्, कदाविद्भवं कादाचित्कम्, सस्प्रति भवंसास्प्रतिकम्, ऋध्यात्रः भवस् खाध्यात्मिकम्, खिधभूतं भवस् खाधिभौतिकस्, खिधदेवं भवम् चाधिदैविकम्, मध्यन्दिने भवं माध्यन्दिनम्।

৫৫। टिलोपोऽकसाद्वियोः।

অকন্মাং, বহিস্, এই দুই প্রাতিপদিকের টির লোপ হরঁ। যথা, অকল্পান্নবন্ আক্লিজিন্, বস্থিন্দ্ বাস্তু বাস্থাকন্

(২৭) এ ছলে ভবশবে জাত, দ্বিত, সংক্রান্ত, আবির্ভূত প্রভৃতি অনেক অর্থ বুঝায়।

৫७। स्त्रीपुंसाभ्यां नण्।

ব্রী ও পুষ্ দৃশকের উত্তর ভব প্রভৃতি অর্থে নণ্ছর, গ ইৎ, ন থাকে। যথা, ক্লীয়ু মর্ল ক্রিয়ার, গুলু মর্দী ব্রুষ্।

११ । हैमन घोवस्तिक पोन:पुनिका:।

टेश्यन, भोविखिक, ও পৌनःश्रुनिक निशालन निक्व हत। यथी, हेमचे भवं हैमनस्, श्वो भवं श्रौविस्तितस्, प्रनःप्रनर्भवं पौनः-प्रनिकस्।

৫৮। प्रतीचोदीचातरशीना:।

প্রতীচ্য, উদীচ্য, তিরুশ্চীন, এই তিন শব্দ নিপাতনে সিদ্ধ হয়। যথা, प्रतीचि भवं प्रतीच्यम्, उदीचि भवम् उदीच्यम्, तिरिष्य भवं तिरस्थीनम्।

৫৯। तत साधुः।

तत्म साधुः, এই অर्थि, প্রাতিপদিকের উত্তর, यथांमसुव, উক্ত প্রতায় সকল হয়। यथा, सभायां साधुः सभ्यः, समाजे साधुः सामाजिकः, स्मतियौ साधुः स्मातियेयः, नेदे साधुः वैदिकः, संयामे साधुः सांयामिकः, संयुगे साधुः सांयुगीनः, वित्रस्हायां साधुः वैत-सिक्षकः, संकथायां साधुः सांकथिकः, संयहे साधुः सांयहिकः।

७०। देये कालादवस्यस्यावे।

च्या मास्ति तूया हैत्न, त्मत चार्य, कानवानक आंखिनितिकत छेतत, यथां मास्ति हैयं मासिकाम्, विकेश देयं वार्षिकाम्, चार्व्दे देयम् चार्व्दिकाम्, धंवत्सरे देयं सांवत्सरि-कम्, चार्यहास्यो देयम् चार्यहायिषाकाम्, चावयो देयं चाव-विकस्।

७८। निर्हेने च।

निर्वृत कार्थि रहा। यथा, दिनेन निर्द्यसं दैनिकस्, मासेन निर्द्यसं मासिकस्, वर्षेण निर्द्यसं वार्षिकस्, संबद्धरेण निर्द्यसं सांबद्धरीयं सांबद्धरिकस्।

७२। यङ्गोऽङ्ग:।

অहन्यक्सांत अरु हत। यथी, खह्ना निवैसम् खाह्निस्।

७७। याप्ती च।

वाधि व्यर्थि इत। यथा, दिनं व्याधा स्थितं दैनिकम्, मासं व्याध्य स्थितं मासिकम्, वैषे व्याध्य स्थितं वार्षिकम्, चत्ररी मासान् व्याध्य स्थितं चात्रभीस्थम् ।

७८। वयसि च।

त्राम् व्यर्थि इत्र । यथा, हे वर्षे स्वस्य वयः दिवर्षीताः, दिवर्षीयः, दिवर्षीयः, दिवर्षीयः, पञ्च-वर्षीयः, पञ्च-वर्षीयः, पञ्च-वर्षीयः, पञ्चवर्षीयः, पञ्च-वर्षीयः, पञ्चवर्षाः । वर्षायः वर्षायः वर्षायः वर्षायः । वर्षीयः, वोङ्ग्रवर्षीयः, वोङ्ग्रवर्षीयः, वोङ्ग्रवर्षीयः, वोङ्ग्रवर्षीयः, वोङ्ग्रवर्षीयः, वोङ्ग्रवर्षिः।

७६। तत घागतः।

तत स्वागतः, अरे अर्थि, श्रीिष्ठभिष्ठित छैडत, यथीमस्वत, छैडन श्री अंतर्ग मकल रहा। यथी, मधुराया स्वागतः माधुरः, नगरादागतः नागरिकः, स्वापयादागतः स्वापयाकः, स्वपाध्यावादागतम् स्वीपाध्यावकम्, पितामस्वादागतं पैतामस्कम्, माद्वरागतम् नात्कभ्, विद्वरागतं सादितम्, स्वाद्वरागतं स्वात्कम्, पितः रागतं पेत्वकं पित्राम्, स्विवा स्वागतं स्वीयम्, पृषै स्वागतं पेरस्म।

७७। तदहित।

तत् चहति, এই অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর, যথাসভব, উক্ত প্রত্যয় সকল হর। যথা, ম্বলছনি ম্বিলঃ, বছল্লমভূনি बाहिस्तिः, क्रेट्सर्हित क्रेटाः, भेदमर्हित भेटाः, दर्श्वनर्हित टर्श्डाः, चर्षमर्हित चर्चः, वधमर्हित वध्यः, वज्ञनर्हेति विजयः, दिच्यामर्हित दिच्योवः दिच्याः।

७१। तस्त्रादनपेतम्।

तस्मात् स्वनमेतम्, এই अर्थ्य, श्रीजिशिमित्वत् जैवत्, यथामस्रत्, उक्त श्रजास मकल रहा। यथी, धन्मोदनमेतं धन्मेत्रम्, न्यायादन-मेतं न्यायम्, सर्घोदनमेतं सर्घम्, पथोऽनमेतं पथ्यम्, सास्ता-दनमेतं सास्त्रीयम्, विधेदनमेतं वैधम्।

७৮। तस्वेदम्।

तस्य दर्म, এই অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর, যথাসম্ভব, উক্ত প্রত্যর সকল হয়। যথা, विष्णोरिट् वैष्णुवस्, घिवस्येटं घैवस्, अनपदस्थेदं जानपदम्, तस्येदं तदीयम्, एतस्येदम् एतदीयम्, देव्छेटं दैवम्, खसुरस्थेदम् खासुरम्, सम्राज इदं साम्राज्यम्, इन्द्रखेदम् ऐन्द्रम्, महेन्द्रखेदं माहेन्द्रम्, मनस इदं मानसम्, यरीर खेदं यारीरम्, पित्तरिटं पित्रप्रम्, गौरिदं गव्यम्, मिहन स्रेदं माहिषम्, वेगोरिटं वैग्रवम्, पनासस्रेदं पानासम्, खदिर-खेदं खादिरम्, विस्तसेदं वैस्तम्, सञ्जानामिदं मौज्जम्, स्लिया इटं स्त्रेयम्, पुंस इटं पाँखाम्, गङ्गाया इटं गाडुम्, स्त्रिमनत दरं हैमनतम्, पशुपतेरिटं पाशुपतम्, शङ्करखेटं शाङ्करम्, स्तरस्थेदं, गौरम्, चन्द्रस्थेदं चान्द्रम्, वेदस्थेदं वैदिकम्, उपनिषद द्रम् खौपनिषदम् प्रथिव्या द्रदं पार्थिनम्, जनसेदं जनीयम्, तेजस दूरं तेजसम्, वायोदिरं वायवीयम्, मलोदिरं मालवस्, रुरोरिटं रहेरवस्, त्यङ्कोरिटं नैयङ्कवं त्यङ्कवस्, श्वापदस्थेटं गौनापदं श्वापदम्, भरतस्थेदं भारतम्, भारतवर्षस्थेदं भारत-वर्षीयम्, युद्धाकिमदं युद्धदीयम्, अस्ताकिमदम् अस्तिदीयम्।

७৯। त्वनादावेकवचने।

এकराज्य सूक्ष्मान् अम् ७ अम्मृष्टां स्मृ १ वर्षा, तव इटं तदीयम्, मम इटं मदीयम्।

१०। युद्धाकास्त्राको यीनवयोः।

ণীন ও ষণ্ প্রতায় পরে, যুক্ষাদ্সানে যুক্ষাক ও অক্সদ্সানে অক্সাক হয়। যথা, युग्नाकमिदं यौग्नाकीयां यौग्नाकम्, अञ्चाकमिदम् आञ्चाकीनम् आञ्चाकम्।

१)। तवकममकावेकवचने।

अकराज्य उपक छ समक इत्। यथा, तव इदं तावकीनं तावकाम्, मम इदं नामकीनं मामकाम्।

१२। परादेः कन् घीयणि।

ষोয়ণ্প্রতায় হইলে, পর, ঝ, রাজন্প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর কন্হয়, ন ইৎ, ক থাকে। যথা, परखेदं परकीयम्। সুশদের উত্তর বিকশেশ। যথা, खखेदं खकीयं खीयम्।

१७। सौर सारव खायम्यवा:।

(मोत, मात्रव, ও साम्रज्ञूव निभाजन मिक्व रह। यथी, स्वर्यखेटं सौरं दिनम्, सरव्या इटं सारवं जनम्, स्वयम्भोरिटं स्वायम्भवं धाम।

१८। भवदीयान्यदीयौ।

खतमी ह अञ्चामोह निशाज्य निष्क रहा। यथा, भवत दूरं भव-दीयम्, स्त्रन्य खोदस् स्वन्यदीयम्।

१८। तस्य विकारः।

तस्य विकारः, এই অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর, যথাসমূব, উক্ত

প্रভाग मकन रता यथा, सुवर्णस्य विकारः सीवर्णः, रजतस्य विकारः राजतः, सीवस्य विकारः सैसः, दम्रोविकारः दारवः, देवदारिविकारः दैवदारवः, प्रयसं विकारः पायसः, सम्मेः विकारः सान्वेयः, सहस्य विकारः मौहः, इत्योविकारः ऐत्ववः, राज्य विकारः गौजः, क्रिस्य विकारः पेत्वः, राज्य विकारः गौजः, क्रिस्य विकारः पेत्वः, तिलस्य विकारः तिलस्य विकारः तिलस्य विकारः तिलस्य विकारः तिलस्य विकारः

१७। तदस्य पण्यम्।

तत् खस्य पण्यम्, अरे व्यर्थ, श्रीिजिशिनित्वत् छेत्वत्, यथीमस्वत्, छेक श्रिष्ठात्र मकन इत् । यथी, सत्यमस्य पण्यं साविष्यः, तेसमस्य पण्यं तैर्विकः, सपूपा अस्य पण्यम् सापूपिकः, तण्युसमस्य पण्यं तीर्विकः, मोदका स्वस्य पण्यं मौदिककः, स्वीरमस्य पण्यम् सौदिककः, तास्युसमस्य पण्यं तास्युविकः।

११। तदस्य प्रहरणम्।

तत् चस्य प्रस्रायम्, अरे व्यर्थ, श्रीजिशिष्टित् उहत्, यथामस्य, उक्ति श्रुजा मकल रत्न । यथा, धत्यस्य प्रस्ययं धातुष्कः, व्यक्तिः चस्य प्रस्ययं प्रासिकः, प्रस्थस् चस्य प्रस्ययं पार्यविकः, परस्थस् चस्य प्रस्ययं पार्यविकः, तर्वारिस्स प्रस्ययं पार्यविकः, तर्वारिस्स प्रस्ययं पार्यविकः, तर्वारिस्स प्रस्ययं पार्यविकः, वर्वारिस्स प्रस्ययं पार्यविकः, वर्वारिस्स प्रस्ययं वाष्टीकः।

१৮ । तदस्य प्रयोजनम् ।

तत् चस प्रयोजनम्, अरे अर्थः, প्रांडिशिंगित्त्रं छेरुत्, यथामञ्जत, छेरु প्रछात्र अरुन रहा। यथा, खर्गः प्रयोजनमस् खार्यम्, यशः प्रयोजनमस् बायुक्यम्, कामः प्रयोजनमस् बायुक्यम्, कामः प्रयोजनमस् बायुक्यम्, कामः प्रयोजनमस् बायुक्यम्, स्ट हप्रवेशनं प्रयोजनसस् स्ट हप्रवेशनोयम्, खहु-

प्रवचनं प्रयोजनमस्य अनुप्रवचनीयम्, संवेशनं प्रयोजनमस्य संवेश-नीयम्।

१२। तदस्य घीलम्।

तत् सस घोतम्, এই অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর, যথাসম্ভব, উক্ত প্রতায় সকল হয়। যথা, तपोऽस घोतं तापसः, एरोः दोषाणामावर्णां क्रचम् क्रचमस घोतं क्राचः, घितास घोतं घैतः, प्रोहोऽस घीतं प्रारोहः, सुरा सस घीतं चौरः।

৮०। तदस्य प्राप्तं कालात्।

तत् खस्य प्राप्तम्, এই অর্থে, कानदांठक প্রাতিপদিকের উত্তর, यथामस्त्रत, উक्त প্রতায় मकन रहा। यथा, समयोऽस्य प्राप्तः साम-यिकः, कालोऽस्य प्राप्तः कालिकः, दिष्टोऽस्य प्राप्तः देष्टिकः, ऋत्रदस्य प्राप्तः स्वार्त्तवः।

५५ । अधिकत्य कृतं ग्रन्ये ।

शुक् तूथांश्ल, खिकाल कतम्, এই অर्थ, প্রতিপদিকের উত্তর,
यथांगस्त्र, উক্ত প্রভায় সকল হয়। यथा, राममधिकत्व कतम्
रामायणम्, भगवन्तमधिकत्व कतं भागवतम्, भरतानिधिकत्व कतं भारतम्, वाक्यं पदञ्चाधिकत्व कतं वाक्यपदीयम्, राघवान्
पाण्डवांचाधिकत्व कतं राघवपाण्डवीयम्, किरातमञ्जनञ्चाधि-कत्व कतं किराताञ्जनीयम्, खत्रशासनमधिकत्व कतम् चास-ग्रासनिकम्, अञ्चमधमधिकत्व कतम् चांचमिषकम्, च्याञ्चम-वासमधिकत्व कतं चांचमगिषकम्, स्ववनधिकत्व कतं मौपवम्,
महामस्यानमधिकत्व कतं सहाप्रस्थानिकम्, खुगीरोहणम्
स्रिकत्व कतं सर्गारोहणिकम्।

४२। तस्त्रे प्रभवति।

तस्मे प्रभवति. এই অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর, যথাসম্ভব, উক্ত প্রত্যর সকল হয়। যথা, सन्तापाय प्रभवति सान्तापिकः, सन्ना-हाय प्रभवति सान्नाहिकः, संयामाय प्रभवति सांयासिकः, संघाताय प्रभवति सांघातिकः, उत्पाताय प्रभवति सौत्यातिकः।

৮৩। कार्मुकं धनुषि।

ধনু অর্থে, কার্ম্কুকশকনিপাতনে সিদ্ধ হয়। যথা, कर्म्यायो प्रभवति कार्म्यकं धतुः।

৮८। तसी हितस्।

तसे हितम्. এই অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর, যথাসম্ভব, উক্ত প্রত্যর সকল হয়। যথা, यद्याय हितं यद्यियम्, सध्यराय हितम् सध्यरीयम्, बद्धाये हितं ब्राह्माय्यम्, विश्वजनेम्यो हितं विश्वजनीनम्, सर्वजनेम्यो हितम् सार्वजनीनम्।

৮৫। काले नचतात्तद्योगे।

न चलेय युक्तो भाषः मार्गिशरसः, मधया न चलेय युक्तो मासः माधः, फस्युन्या तचलेय युक्तो मासः फास्युनः फास्युनिकः, चिलया नचलेय युक्तो मासः चेलः चेलिकः।

৮७। वनोपस्तिष्यपुष्ययो:।

िष्ठा ७ পুष्ठा मस्मित् य लाभ रत्न । वर्षी, तिच्चे या नच्च ने या युक्ती मासः तैषः, पुष्टोया नच्च ने या युक्ती मासः पौषः ।

५१। तह्नहति।

तत् वहति, এই অर्थि, প্রাতিপদিকের উত্তর, यथामञ्जर, উক্ত প্রতায় দকল হয়। यथा, धुरं वहति धुर्याः धौरेयः, सर्वधुरां वहति सर्वधुरीयः, चत्रधुरां वहति चत्रधुरीयः, हतं वहति हासिकः, सीरं वहति वैरिकः, रषं वहति रष्यः, युगं वहति युग्यः, श्वतं वहति शावटः।

৮৮। तेन जीवति।

तेन जीवति, এই অर्थि, প্রাতিপদিকের উত্তর, যথাসমূব, উক্ত প্রতায় সকল হয়। যথা, वेतनेन जीवति वैतिनकः, वास्त्रेन जीवति वास्त्रिकः, जावेन जीवति जाविकः, उपदेशेन जीवित चौपदेशिकः, धनुषा जीवित धानुष्किकः, क्रयविक्रयाभ्यां जीविति क्रयविक्रयिकः, खायुधेन जीविति चायुधिकः खायुधीयः, वागुर्या जीवित वागुरिकः, नावा जीवित नाविकः, व्यव-स्रारेण जीविति व्यवस्थारिकः।

• ৮৯। तद्**सिन्** दौयते।

तत् चित्तान् दीयते, अर्थे व्यर्थः, श्रीिजिशिष्टिकतं उठितः यथीमस्ति, उठिक श्रीजात मकल रत्न। यथीः, द्वाविसान् द्विः व्यायः सामः यस्त्रम् सपदा ना दीयते द्वितं यतम्, तिनं यतम्, चतन्तं यतम्, पञ्चनं यतम्। तृष्ठि श्रीकृष्ठितं मानदालरे रहेतां थोकः।

৯०। ताइच्ये।

डामर्था दूसाहरन, श्रीडिलिमर्कित डेहत, यथामञ्जद, डेक्ट श्रुडाञ्च मकल रज्ञ। यथा, पादायंसदकं पाद्यम्, खर्घाध्यदकम् खर्घ्यम्, बस्तये दृदं बावेयम्, खितयये दृदम् खातिष्यम्, खिनदेशताये दृदम् खिनदेशत्यम्, पितदेशताये दृदं पित्वदेशत्यम्।

৯১। खार्चे।

चार्थ, श्रीजिशिम त्व छेडत, यथांम खर, छेड श्रेणा मकन इत ।
श्रेणां इहेन श्रीजिशिम त्व वर्णात रिवक्त या या निक्त वर्णात रिवक्त या या निक्त वर्णात रिवक्त या या निक्त वर्णात स्वाप्त वर्णात निक्र वर्णात स्वाप्त स्वाप्त

৯२। देवात्तल्।

স্বার্থে দেবশব্দের উত্তর ভল্প্রভায় হয়। ঘথা, देव एव देवता।

৯৩। शाग इप नामस्यो घेय:।

ষার্থে ভাগ, রূপ, নামন্, এই ভিন প্রাতিপদিকের উত্তর ধের প্রভার হয়। যথা, মান एব মান্দ্রীবা, নামীব নাম্প্রাম্

৯৪। घरशिकन्।

বার্থে, মৃদ্শব্দের উত্তর ভিকন্প্রভায় হয়। যথা**, ভট্ট জ্ঞানিকা**।

৯৫। संस्ती प्रयंशायाम्।

প্রশংসা বুঝাইলে, স্বার্থে, মৃদ্শব্দের উত্তর স ও র প্রভার হয়। যথা, দল্মন্তা অনু করেয়া, করেন্তা।

৯७। नृत्तन्तनी।

मुख्य ও मृख्य निभाज्य मिक्क रहा। यथी, नवनेव मूल, मूतनस्।

৯१। भौपविक्य।

উপয়িক নিপাতনে সিদ্ধ হয়। যথা, ভদায एव चौपविकः।

२०। सोऽस्य निवासोऽभिजनो वा।

यः चस निवासः (२४), सः चसाधिनमः (२२), अहे मूहे वार्थ,
श्रीिष्ठभितित्त छेवत, यथामस्त्र, छेक श्रीष्ठात मकन हत। यथा,
मयुरा चस निवासः मायुरः, मिथिना चस निवासः मेथिनः,
कस्त्रकोऽस्य निवासः काम्बोजः, कद्योरोऽस्य निवासः कार्त्वीरः,
गन्धादोऽस्य निवासः क्रोत्कवः, किस्तुरस निवासः सेस्त्रवः, तचधिनासः निवासः क्रोत्कवः, विस्तुरस निवासः सेस्त्रवः, तचधिनासः निवासः वाचितः, विदेहोऽस्य निवासः वेदेष्टः,
पञ्चाबोऽस्य निवासः पाञ्चानः, मगधोऽस्य निवासः मागधः,
च्योध्या चस्य निवासः चाक्रः, वङ्गोऽस्य निवासः मादः,
च्राह्मोऽस्य निवासः चाक्रः, वङ्गोऽस्य निवासः वाक्रः। अलिकन
वार्थः এই त्रभ। यथा, गन्धारोऽस्थानिननः गान्त्रारः हेणानि ।

⁽२५) निवासी नाम यत्न सस्प्रत्युक्तते।

⁽२०) व्यक्तिनानं वत्य पूर्व्वेदवितस्।

৯৯। लोपो बद्धवचने।

वक् वहरतः, निवान ७ अध्यक्त अर्थ विश्वि श्रेष्ठाः ताल इत । यथा, खड्न एमां निवासः खड्नाः, इक्न एमां निवासः विदेशाः, कावक्र एमां निवासः काविक्राः, विदेश एमां निवासः विदेशाः, उत्कव एमां निवासः उत्कवाः, प्रस्तोजः एमां निवासः कम्बोजाः, समध एमां निवासः समधाः, पञ्चान एमां निवासः पञ्चानाः, कम्बीर एमां निवासः समधाः, पञ्चान एमां निवासः पञ्चानाः, कम्बीर

५००। न स्मियास्।

बीलिक इस ना। यथा, समध खासां निर्मासः समिध्यः, पश्चीत खासां निर्मासः पाञ्चीत्यः, विदेश खासां निर्मासः वेदेश्चः, कविक्र-खासां निर्मासः कालिक्राक्षासः विदेश काला

১०১। सिंग्सं राजेत्वेवम् ।

वः चस्र राजा, बरे कार्थं अरेक्ष्ण ; कर्षां , सोऽस्य निवासः , सोऽस्याभिजनः , बरे मूरे कार्थ रा প্রভার ও কার্য रह, सोऽस्य राजा, এই কার্থে দেইক্ষপ रह। यथा, बाद्धीरस्य राजा काद्धीरः, कविकृस्य राजा कालिकः, विदेशस्य राजा वेदेशः, पश्चातस्य राजा पाञ्चातः, नगधस्य राजा भागधः, निषधस्य राजा नेषधः। वस्वाद्य-कद्द्धीराः, कलिक्काः, विदेशाः, पश्चाताः, नगधाः, निषधाः।

५०२। तस्य भाव:।

तस्य भावः, अरे व्यर्थः, श्राठिशिवित्वतं छेउतः, वर्णामञ्चरः, छेऽः श्रेष्ठात्र मकल रत्र । यथाः, ज्ञामारस्य भावः जौमारस्, श्रियोभावः श्रेष्ठात्र स्वत्य भावः वार्षवस्, स्वितस्य भावः स्वाविरस्, गुरोः भावः गौरवस्, स्वीवित्वः साधवस्, सुष्ठु भावः सौरवस्, स्वोधः सावः स्वावितस्, स्वतोः सावः सार्ववस्, स्टोधीवः पाटवस्, स्रोधः

১০৩। तस्य भावः कर्मा च।

तस मानः, तस कर्ना, यह पूरे कार्थ, श्रीिक पित्कत छेठत, यथीमा ते छेठ श्रीका मकल हतः यथी। वास्त्राचा सानः कर्ना वा वास्त्राप्तम्, चोरस भावः कर्ना वा चौर्यम्, स्वस्त्रस्त भावः कर्ना वा सावस्त्रम्, सेनापतेभीवः कर्ना वा सेनापत्रम्, स्विपतेभीवः कर्ना वा साधिपत्रम्, सस्तुभीवः कर्ना वा सस्त्रम्, सूर्दे भावः कर्मा वा सौर्यम्, वीरस्त्र मावः कर्ना वा बोर्यम्, द्रतस भावः कर्मा वा द्रत्यं द्रत्तम्, प्रोहितस्त्र भावः कर्मा वा बौरो-हित्मम् सहितस्य भावः कर्मा वा सौरिहत्सम्, सारिकास्य वा सारस्त्रम्, स्रोस्तिकस्य भावः कर्मा वा सास्तिकाम्, नासिकस्य भावः कर्मा वा द्रास्तिकस्रम्, परिस्कतस्य भावः कर्मा वा पारिकास्य भावः कर्मा वा द्रास्तिकस्रम्, परिस्कतस्य भावः कर्मा वा पारिकास्य विषानो भाषः कर्म्य वा वाधिकान्, सुनेभीवः कर्म्य वा सीनम्, ध्यस्मीवाः कर्म्य वा खशीषम्, सुनेभीवः कर्म्य वा सीनम्, धनुस्यस्य भाषः कर्म्य वा खाकीश्वन्, धनुष्यस्य भाषः कर्म्य वा खातुष्र्यस्य भाषः कर्म्य वा खातुष्र्यस्य भाषः कर्म्य वा प्रतिकृत्यम्, प्रकृषस्य भाषः कर्म्य वा पौक्षृत्, सुध्यात्वभीवः कर्म्य वा सीव्यातम्, दुध्यात्वभीवः कर्म्य वा सीव्यातम्, दुध्यात्वभीवः कर्म्य वा दीर्थातम्, सुद्ध्यो भावः कर्म्य वा चौद्ध्यः भावः कर्म्य वा चौद्धः वा चायस्यस्य भावः कर्म्य वा चौद्धः वा चायस्य भावः कर्म्य वा चौद्धः वा चात्रस्य भावः कर्म्य वा चौद्धः चायस्य भावः कर्म्य वा चौद्धः चायस्य भावः कर्म्य वा चात्रस्य चात्रस्य चात्रस्य भावः कर्म्य वा चात्रस्य च

५०८। दूतरेव्यपि दृखन्ते।

विष् श्रेज्ञ श्रेज्ञ मकन अथ्डा श्रेज्ञ या मकन अर्थ मर्निड हरेन, उद्धित नाना अर्थ मिर्विड भाडता यात । किंडिश्र स्तन उपारं मिर्विड हरेडिह । यथा, धन्द्वां चरित धान्तिकः, वर्ष मतः वर्षः, प्रविद्धा रेश्वरः पार्षिवः, सर्वेभूमेरीश्वरः सार्वे-भौमः, चन्नुवा स्टश्चते चानुषं रूपम्, श्रवणेन स्टश्चते श्रावयः ग्रव्यः, रसनया स्टश्चते रासनो रसः, त्वा स्टश्चते त्वाचः स्वयः, चन्न्वां निद्धानं चानुषं प्रविद्यान्, श्रवणेन निद्धानं श्रावयम्, रसनया निद्धानं रासनम्, त्वचा निद्धानं श्रावयम्, रसनया निद्धानं रासनम्, त्वचा निद्धानं श्रावयम्, पारं गतवान् पारावारोयः, श्रवणेन क्रीतः आर्थः, विद्या स्वर्वे वैद्यम्, विद्यायां श्रयः वैद्याः, स्त्रिता नितः स्त्रेणः, दारे नियुक्तः दौवारिकः, साय्हागारे नियुक्तः भाव्हान् नार्वेकः, हिस्बतः प्रभवति हैस्वती गङ्गा, विद्वरात् प्रभवति

वेद्रयी मणिः, रथेन सञ्चरते रशिकः, खर्वन सञ्चरते खास्त्रिकः, ग्रुवनीन हन्ति ग्रावनिकः, ग्रुवनान् इन्ति ग्रावनिकः, सहसा वर्त्तते साहसिकश्रौरः, जलेन वर्त्तते जलोयो मत्यः, खतुकुलं वर्त्तते आनुकू विकः, प्रतिकूर्णं वर्त्तते प्रातिकू विकः, नावा तार्य्या नाव्या नदी, वयसा तुल्यः वयस्यः, तुलया सिमातं तुल्यम्, स्टड-पतिना संयुक्तः गार्र्रपत्योधिनः, समाने तीर्थे गुरौ वसति सतीर्थः, मनाने उदरे गयितः समानोदर्थः अये दीयते खियस, लोने विदितः खौकिकः, सर्वेदोके विदितः सार्वेदौकिकः, नित्यं क्रियते टीयते वा नैत्यं नैत्वकं नैत्विक्त, निमित्तेन क्रियते दीयते वा नैमित्तिकास, प्रवेशने दीयते प्रावेशनं प्रावेशनिकास, सर्व्याङ्गानि व्याप्नीति सर्वाङ्गीनसाप, चापपदं प्राप्नीति चापपटीनः पटः, चतुपदं बद्वा चतुपदीना उपानत्, चार्ध्यामत्रं सस्यक् गच्छति चम्यमित्रीयाः, सप्तामः पदैरवाष्ट्रते साप्तपदीनं सख्यम्, इन्द्रस् चालनो जिङ्गम् इन्द्रियमः कुमायमिन कुमायीया बुद्धिः ; काक-तालमिव (९०) काकताड़ीवम्, प्राक्**सक्यू**तः प्राचीनः, द्यवाक् सम्भूतः अवाचीनः, सुस्तातं प्रऋति सौस्तातिकः, सुख्यस्यन प्रकाति मौखशायनिकः, परटारान् गक्कति पार्टारिकः, याचितेन निर्देत्तं याचितकम्, क्यथं स्टक्काृति आर्थिकः, आंपणस्य धर्मात्रम् चापणिकम्, नर्दश्च धर्मात्री नीरी, वातस्य शमनं कीपनं वा वातिकम्, पित्तस्य ग्रमनं कोपनं वा पैत्तिकम्, सञ्चिपातस्य ग्रमनं कोपनं वा साद्विपातिकम् अस्ति परलोक द्रति मतिर्यस चा-्सिकः, नास्ति परलोक इति मतिर्यस्य नास्तिकः, चास्ति दिष्टमिति मतिर्यस दैष्टिकः, खामनक्याः फलम् खामलकम्, बदयोः फलं वदरम्, अञ्चलस्य फनम् आञ्चलम्, न्ययोषस्य फलं नैवपीधम्।

⁽७०) काकाममनमिष तालपतनमिव काकतालम्।

५०৫। खोप: कचित् प्रत्यवस्त्र।

कान अखार कान का स्वान क्षा का स्वान का स्वान का स्वान का साम का स्वान का साम का स्वान का साम का का साम का साम का का साम का साम

५०७। जब्बा विभाषा।

जनुगत्मत छेठत विकल्म । यथा, जन्माः फलम् जन्मु, जान्मवम् ।

১०१। हैयद्वानाद्यक्षीनी ।

रेश्त्रक्रवीत अ व्याप्तीत तिशांखत मिक्क श्तः। यथा, ह्यो गोदोहात् छद्गदति, हैवक्कदीनम्, खद्य शो वा घटते बदाशीनं सर्याम्, खदाश्वीनो वियोगः, खदा शो वा प्रस्तते बदाशीना स्त्री।

১०४। पान्यसाज्ञिवा<mark>षु</mark> विकाः।

পাছ, সাকিন্, ও বার্ষিক নিপাতনে সিদ্ধ হয়। যথা, দবি কুছল: দাকো, বালাব্ ভছবাৰু বালী, তল্পা জীবনি বালুদিক:।

১০৯। आसुश्चिकासुष्यायणी।

বিকণ্ ও যায়নণ্ প্রভায় সহিত অদস্শক্ষানে আযুক্ষিক ও আয়ুব্যায়ণ, এই দুই শব্দ নিপাতনে দিল্ক হয়। যথা, **অন্তব্যিক্** (प**रकोशे**) हितन् चात्रश्चिकम्, **चत्रव्य (कत्यः) गुल्लः** चात्रखा-ववाः।

५५०। पोन:पुन्यम्।

भीतःश्रूता तिथालत निक्ष रह। यथा, पुनः प्रनरहरानं सङ्घटनं ना मौनःपुन्यम्।

५५५। मस्य कोपोऽन्यस्य।

उद्धिउध्ये छा इरेल, थ्रीजिनिहित्त च्यहित नकारत लान इत । यथा, चिन्न की योऽपत्यम् चान्नियकिः, उद्योकोऽपत्यम् चौदुवोमिः, रात्तां समूद्यः राज्यकम् इ स्थिनां समूद्यः द्वास्तिकम् पणि क्षयकः पण्टितः, सर्वकर्मास क्षयक सर्वकर्मीणः, नामैव नामधेयम्, द्योरह्योभेवः द्वादीनः, साम वेत्ति च्योते ना सामकः, खालान द्रम् खालीयम्।

১১२ । नानन्तस्य षिषा ।

वण् श्रात रहेल, व्यन्तांशंख श्रीं जिनिहरू नकारत्त लाल हत ना। वथा, यूनो भावः योवनम्, मघोन दरं माघवनम्, सुनां समूडः शौषनम्, पर्वेषि क्रियते दीयते वा पार्वेषम्, सामनि कृश्वः सामनः, सुत्वन दरं सीत्वनम्, वव्यनोऽपत्वं वाव्यनः, चर्माया परिहतः चार्म्ययः, कम्मीस शीसं कार्म्ययः, भस्मनो विकारः भास्मनः।

১১७। ये च भावकम्पवर्की।

उद्धि उत्र व शर्त थोकित, व्यन्तां शंख श्री जिशिषि कित्र नकां त्र त्र लांश रह ना । यथां, सामिन साधुः सामन्यः, ब्रह्मािया साधुः सद्मात्यः, व्यक्षात्यः, व्यक्षात्यः, व्यक्षात्यः, व्यक्षात्यः, व्यक्षात्यः, व्यक्षात्यः, व्यक्षात्यः, व्यक्षात्यः। कर्म ଓ छात्यः विकासिक्षाः व्यक्षात्यः। वर्म अर्थः वर्षः वरः वर्षः वरः वर्षः वरः वर्षः वरः वर्षः वरः वरः वर

५५८। नाध्वात्मनोपानि।

भीनश्रेष्ठात्र रहेला, अध्यम्, आंक्रम्, और मूरे श्रीष्ठिनितिकत् नकाद्वत् लान् रत्न मा। यथा, आक्रमि सामुः अध्यनीनः, आसमे स्तिम् आसमीनम्।

५५८। मनन्तस्यापत्यपश्चि ।

অপত্যার্থে বিহিত ষণ্প্রতায় পরে, থাকিলে, মন্তাগান্ধ প্রাতি-পার্দীকের নকারের লোপ হয়। যথা, স্তুষান্ধীরদান ধীষানা, ব্রথান্ধীরদান বীর্থানা, জননান্ধীরদান নানা।

১১७। वा हित**नाम्न**ः।

হিতনামন্, এই প্রাতিপদিকের বিকম্পে। যথা, দ্বিন<mark>ালীऽपस्यं</mark> क्टैतनामः क्टेतनामनः।

১১१। हेमाध्सनोविकारे।

বিকারার্থবিছিত বণ্প্রতার পরে, হেমন্, অশান্, এই দুই প্রতিপদিকের নকারের লোপ হয়। যথা, ऐस्तो विकारः हैनः, অহনে বিকাरः আহনে।

১১৮। चमाणः कोषे।

কোষ অর্থে, চর্মনের নকারের লোপ হয়। যথা, **বন্ধুথা** বিকাহ: বার্হ্য: কীলঃ।

১১৯। ब्रह्मणोऽनाती।

कां ि जिल्ल व्यर्थ, ब्रुक्तन् गटकत नकारतत लाभ इत । यथी, ब्रह्मास्य देवता बाह्मान् व्यस्तान्, बाह्मां हिनिः, बाह्मो कोषधिः ; ब्रह्मा जपास्ते बाह्माः ; ब्रह्माणा द्रयं बाह्मी ततुः। क्रां विव्यर्थ इत ना। यथी, ब्रह्माणोऽपासं बाह्माणाः जातिविज्ञेषः।

১২० । नेनन्तस्य प्रणि।

विश्वास श्रेतन, रेन्डागाय श्रीजिशिनिक्त नकारतत लोश श्र ना। यथा, वितन दृदं वालिवस्, हिलिन दृदं हान्तिनस् नेधाविन दृदं मैधाविनम्, स्वित्वस दृदं सान्विसम्। अश्रेत अर्थ श्रा। यथा, नेधाविनोऽपत्वं मैधावः, मायाविनोऽपत्वं मायावः। गांथिन् প্রভৃতির হয় না। যথা, नाधिनोऽपत्सं नाधिनः, केधिनोऽपत्सं केधिनः। ইন্ সৃংযুক্ত বর্ণে মিলিত হইলে হয় না। যথা, स्वित्विषोऽपत्सं स्वान्विषः, तपिस्तिनोऽपत्सं तापिस्तिनः, चित्रिषः स्वपत्सं चाक्रिषः।

>२>। तस्य भावस्वतसी।,

तस्य भावः, अरे व्यर्थ, श्रीजिशिमित्वतं छेहतं क्र ७ छन् रहः, न रे॰, छ थोकः। व्यश्वासं गम क्रोतिन्न, छन्श्रासं गम क्रोतिन्न, छन्श्रासं गम क्रोतिन्न रहः। यथा, प्रभोभावः प्रभुत्वम्, प्रभृताः भीरोभावः भीरतम्, भीरताः भत्रकस् भावः मतुष्यतम्, मतुष्यताः च्यारस् भावः व्यम्ततम्, व्यमरताः प्रयोभावः प्रमुत्वम्, प्रमृताः च्यारस् भावः व्यवताः च्यारस् भावः व्यवताः व्यवस् भावः वास्तिकत्मः, वास्तिकताः व्यवस्य भावः वास्तिकताः व्यवस्य भावः प्रवत्तम्, व्यवस्य भावः प्रवत्तम्, व्यवताः स्वस्य भावः प्रवत्तम्, राजताः स्वस्य भावः स्वत्तम्, राजताः स्वस्य भावः स्वत्तम्, राजताः स्वस्य भावः स्वत्तम्, स्वताः स्वत्तम् स्वताः स्वत्तम्, स्वताः स्वत्तम्, स्वताः स्वत्तम्, स्वताः स्वत्तम्, स्वताः स्वत्तम्, स्वताः स्वत्तम् स्वत्तम् स्वताः स्वत्तम् स्वत्तम् स्वताः स्वत्तम् स्वत्तम्यस्ति।

५२२। वा नीलादेरिमनि:।

तस्य मावः, এই অर्थि, नील প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর বিকশ্পে ইমনি হয়, ই ইৎ, ইমন্ থাকে; পক্ষে প্র ও তল্ হয়। ইমন্ প্রতয়াত শব্দ পূংলিক হয়। য়থা, नीजस्य भावः नीजिमा, नीजत्यम्, नीजता; पीतस्य मावः पीतिमा, पोतत्वम्, पोतता; दुर्तंस्य भावः रित्तमा, रक्तत्वम्, रक्तता; ग्रुक्तस्य भावः ग्रुक्तिमा, ग्रुक्तत्वम्, ग्रुक्तता; वक्तस्य भावः विक्रमा, वक्तत्वम्, वक्तता; घीतस्य भावः शीतिमा, शीतत्वम्, शीतता; उष्णस्य भावः उष्णिमा, उष्णत्वम्, उष्णता; अष्टस्य मावः अष्टिमा, अष्टत्वम्, अष्टता; मधुरस्य भावः मधुरिमा, मधुरत्वम्, मधुरता।

- ১२७। चोर्लीपोऽन्स्रस्य ।

हैयनिश्रात हहेल, माम्य अखिष्ठ हैवार्गद लाल हह (०১)।
यथी, बघोर्मानः बिधमा, बघुत्मम्, बघुता; खयोशीनः खियमा, खयात्मम्, खयाता; तनोशीनः तिनमा, तहत्मम्, तहता; खादोशीनः खादिमा, खादुत्मम्, खादुता; पटोशीनः पटिमा, पट्तम्, पटुता; स्टजोशीनः स्टिमा, स्वजुत्मम्, स्वजुता।

১७८। ऋतो र: प्रयादे:।

हेमिन প्राज्ञ हहेता, शृथू, मृष्टु, कृष, कृष, शृष, शिव्दृष्ट्, अहे मकल माद्य श्रष्टात्न द हत (३३)। यथा, प्रयोभीनः प्रथिमा, प्रयुत्वम्, प्रयुत्वम्, प्रयुत्वम्, प्रयुत्वम्, प्रयुत्वम्, प्रयुत्वम्, प्रदेशमीनः मदिमा, प्रयुत्वम्, प्रदेशमा, हरूत्वम्, हर्द्यभानः द्रविमा, हरूत्वम्, हर्द्यभानः क्राय्वम्, क्राय्वम्, क्राय्वम्, क्राय्वम्, क्राय्वम्, क्राय्वम्, क्राय्वम्, प्रदेशक्य भावः प्रिविद्वम्, प्रदिश्वद्वम्, प्रदिश्वद्वम्,

১২৫। प्रिय महतो: प्र मही।

रेगिन প্रकार हरेटल, প্রিয়ম্বানে প্র ও মহৎস্থানে মহ হয় (৩১)। यथा, प्रियस भावः प्रेमा, प्रियत्सम्, प्रियताः महतो भावः महिमा, महस्तस्, महत्ता।

> 2% । गुब कुख दीर्घाणां गर कुस द्राघाः ।

हेमिन প্रकार हेहेल, श्रेक्डाप्त गत्र, दुवडाप्त दुने, अ नीर्घडाप्त
नुष्ठ हत्र (०১) । वशी, ग्रहीभावः गरिमा, ग्रहत्वम्, ग्रहताः;
हासस्य भावः द्विमा, स्रस्ततम्, हास्ताः, दीर्घस्य भावः
द्राधिमा, दीर्घतम्, दीर्घताः।

(०১) देश ७ नेत्रमू चलाउ, अदे मूख्वत कार्या दत्र

५२१। समा।

वक्षणास्त्र छेवत स्मिन श्रात, खूमन् निलाजीन मिस श्रा। यथी, बह्रोमीयः मुमा।

५२५। श्रीपयो वतिच्।

नामृणा तूथारेल, श्रीलिशमित्व छेठत विक् रह, रे हरे, वर् श्रीतः। यथी, चन्द्र इत सुखं चन्द्रवन्तुसम्, सिममित शीतसम् सिममत् शीतसम्, ससद् इत गम्भीरः ससद्वन्द्रस्भीरः, पर्वत इत सम्बद्धः पर्वतनदुद्धतः, नास्त्रस्य इत स्थिते मास्त्रस्यवद्धीते, सिम्बय इत युध्यति मास्त्रयवद्युध्यति, पितरमित पूजयति पित्वत्व पूजयत्युपाध्यायम्, स्मामित सिस्हाति सम्बद्ध सिस्हाति शिष्यम्, स्टे इत वस्रति स्टइनद्दस्ति वने, श्रयास्तिम् सेते श्रस्थानत् शेते भूतसे, देवदस्तस्थेन भवनम् देवदस्तनद्भवनं यस्तरस्य, रामस्थेन पित्रभक्तिः रामनत् पित्रभक्तिरस्य, राजेन रास्तरम्, सास्त्रेन स्वास्त्रम्

১२৯। तेन वित्तत्रुषु चणौ।

तन वित्तः, এই অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর চুঞ্চু ও চণ হর। यथा, অর্থন বিক্তা অত্যন্ত আনু অধ্যন্ত । বিতাযা বিক্তা বিবাছ আৰু ; বিত্যাবাম ; স্থানীন বিক্তা স্থান স্থান, স্থানবাম ; সাম্বয়া বিক্তা নামাপুরু, সামাবাম ; অফ্টাম বিক্তা অক্সমুস্থা, অক্সবিশ্ব ; কুক্মীয়া বিক্তা কর্মীস্থা, কর্মাবাম ।

১৩२। तहस्याखान् वा संजातं तारकाहिस्य दूतः । तत् बस्य संजातम्, तत् बस्मिन् संजातम्, असे मूरे अर्थः, প্রাতিপদিকের উত্তর ইত হয়। যথা, तारका बस्मिन् संजाता तारकितं नभः, पञ्चना बस्म संभाताः पञ्चवितवादः, फकानि च्यस्य संवातानि फवितो दृज्ञः, पुष्पास्यस्यः संकातानि प्रिव्यता खता, तर्ण्या खस्याः संजाताः तर्ण्यानदी, जलास्त्रा श्रीकानृ संजाता उत्करिहतं मनः, व्यन्त्रकारमिदानृ संजातम् व्यन् कारितं जगत्, कलक्क्वीऽस्य सञ्जातः कलक्कितसन्द्रः, कर्हमोऽस्मिन् संजातः कहुमितः पन्याः, पुलकान्यस्मिन् संजातानि पुलकितं गरीरम्, चहुरमस्य संजातम् चहुरितं धान्यम्, व्याधिरस संजातः व्याधितो महत्वः, मञ्जरी मञ्जरितः, जुदान जुदानितः, स्तरक स्तरकितः, किसलय किसल्यितः, सुनुल सुनुलितः, सुविख्य कुवखितः, कोरक कोरकितः, निद्रानिद्रितः, सद्रासद्वितः, बुभुचा बुभुचितः, पिपासा पिपासितः, सुख सुखितः, दुःख दुःखितः, त्रख त्रिखतः, तिखक तिलक्षितः, गर्म गर्म्बितः, इर्ष इर्षितः, चुध् चुधा चुधितः, सीमन्त सीमन्तितः, ज्वर व्यर्थितः, रोग रोगितः, रोमाञ्च रोमाञ्चितः, पब्छा पव्छितः, कंकास कष्णिचितः, त्रष्ट्रवा त्रवितः, कञ्चोत्र कञ्चोचितः, धैवस धैव-चितः, कन्द्रच कन्द्र्चितः, विस्व विस्वितः, प्रतिविस्व प्रतिविस्वितः, मुर्क्कामृच्छितः, दीचादीचितः।

১৩১। प्रमाणे मात दन्न द्वयसट:।

शिविषां व्यर्थ, श्रीजिशिनित्वतं छेडतं यांविष्, मञ्जूषे, अ दशमण् श्रातं देता, हे हैं रे, यांव, मञ्जू अ दशमणात्म । यथा, स्वः प्रमाणमस्य स्वान्यानम्, स्वद्वनम्, स्वद्वनम्, जातः प्रमाणमस्य जातुमानम्, जातुद्वसम्, जातुद्वसम्, जातुद्वसम्, जातुद्वसम्, जातुद्वसम्, जातुद्वसम्, जिल्लाक्षमान्यस्य ज्वनानम्, जिल्लाक्षम्, जातुद्वसम्, वित्वित्वसम्, जातुद्वसम्, तावद्वमम्, तावद्वसम्, तावद्वसम्यस्वस्तम्।

५७६। वसहेतेग्यः परिमाणे वतुप्।

পরিমাণ অর্থে, যদ্, ওদ্, এতদ্, এই তিন প্রাতিপদিকের উত্তর বতুপূহয়, উ প ইৎ, বত্ থাকে।

५७०। चा दः।

वजू भ् रहेत्न, यम्, जम्, अजम्, हेरात्मत म स्राप्त आ रहा। यथा, वत् परिमाणमस्य यावान्, तत् परिमाणमस्य तावान्, एतत् परिमाणमस्य एतावान्।

५७८। क्वियदियतौ।

किंग् ७ डेमग् मास्पत खेवत तठूल् इडेश, किंग्र॰, डेग्न॰, এই मूडे मक निलाजन मिक्व इस । यथा, किं परिमाणमस्य कियानृ, इदं परि-माणमस्य इयान् ।

১৩৫। किम: संख्यापरिमाणे डित:।

সংখ্যাপরিমাণ বুঝাইলে, কিম্শব্দের উত্তর ডভি হয়, ড ইৎ, অভি থাকে। যথা, কা संভ্যা দাহিলাক্ষীদা করি। কভিশব বহু-বচনাত।

১৩७। धनयवे तयट् संख्यायाः।

खरत्रव खार्थ, मः शांवांत्रक श्रांजिशिनिक्तित छेठत छत् हर, हे हें है, छत्र शोकि। यथी, चत्वादोऽनयना ख्रस्य चतुष्टयम्, पञ्च खनयना ख्रस्य पञ्चतंयम्, मृतमनयना ख्रस्य मृततयम्, सहस्त्रमनयना ख्रस्य सहस्त्रतयम्।

५७१। डवट् वा दित्रिस्याम्।

অবয়ব অর্থে, वि, जि, এই দুই প্রাতিপদিকের উত্তর বিকল্পে ডর্ট্ হয়, ড ট ইৎ, অয় থাকে; পক্ষে ডয়ট্। যথা, **दो অবযরী** অন্ত রুখ ব্রিবয়ন্, নেবীবেষবা অন্ত নেব নিক্ষন্।

५७४। उभाद् वः।

चत्रत चर्ला, उंच এर প্রাতিপদিকের উলর য হয়। यथा, उभी चावयनी सञ्च उभयम्।

১৩৯। तद्स्विवधिकमिति दशान्ताडुः।

तत् चिसान् चिधिकस्, এই অর্থে, দশন্ভাগান্ত প্রাতিপদিকের উত্তর ড হয়, ড ইং, অ থাকে। যথা, एकादश चिधिका चिसान् एकादशं शतस्, द्वादशं शतस्, स्रयोदशं शतस्, चत्रदेशं शतस्।

५८०। शहन्त विंशतेस्र।

तत् स्वस्तिन् स्वधिकम्, अदे अर्थः, मध्यांगास्य ६ विश्मिति मास्त्र উद्धत ए रत्न। यथाः, त्रिंशत् स्वधिका स्वस्तिन् त्रियं सतम्, चताः दिसं सतम्, पञ्चासं सतम्, एकत्रियं सतम्, चत्वस्तादिसं सतम्, पञ्चपञ्चासं सतम् ; विस्तिदिधिका स्वस्तिन् विसं सतम्, एकविसं सतम्, द्वाविसं सतम्।

५८५ । संखाया: पूरणे ७८ ।

পূরণ অর্থে, সংখ্যাবাচক প্রাতিপদিকের উত্তর ভট্ হয়, ড ট ইং অ থাকে। যথা, एकाद्यानां पूरणः एकाद्यः, दाद्यः, सयी-दयः, चतुर्दयः, पञ्चद्यः, वोङ्यः, चप्तद्यः, खप्टाद्यः।

১8२ । नामादसंखादेमेंट्।

পূर्व अर्थ, नकातां स्व मर्थावां क श्री छिशिषित्व से हे हर मे हे हर, मे श्रीति । यथा, पञ्चानां पूरणः पञ्चमः, सप्तानां पूरणः सप्तानां पूरणः सप्तानां पूरणः सप्तानां पूरणः सप्तानां पूरणः नवानां पूरणः नवानां पूरणः नवानां पूरणः नवानां पूरणः नवानां पूरणः नवानां पूरणः व्यानां पूरणः दशकः। अन्य मर्थावां कि नव शृर्धः श्रीवित्व हर्यानां पूरणः एकाद्यः, हाद्यः, स्वोद्यः।

১८७। युट्चतुर्घष्कतिभ्यः।

পূরণ অর্থে, চতুর, বষ্ কভি, এই তিন প্রাতিপদিকের উত্তর থুট্ হর, উ ট ইৎ, থ থাকে। যথা, चतुर्यां पूर्याः चतुर्घः, मस्यां पूर्याः षष्टः, कतीतां पूर्याः कतिषः (৩২)।

५८८। हेसीय:।

পূরণ অর্থে, ছিশবের উত্তর তীয় হয়। যথা, হ্ব**ী: দুহত্তঃ** হিনীয:।

५८८। हतीय तुर्च तुरीया: ।

পূরণ অর্থে, তৃতীয়, তুর্বায়, নিপাতনে সিদ্ধ হয়। যথা, দ্রবাবা দুহবা: ভ্রবীয়া, বর্ত্তা দুহবা: রুক্তা; রহীয়া।

১8७। विंगत्यादेसमट् वा।

शृत्व वार्थ, विश्वां প্রভৃতি সংখ্যাবাচক প্রাতিপদিকের উত্তর বিকল্পে তম্ট হয়, ট ইং, তম থাকে; পক্ষে ডট্। যথা, विद्यतेः पूर्याः विद्यतितमः, विद्यः; एकविद्यतितमः, एकविद्यः, हा-विद्यतितमः, हाविद्यः; स्वोविद्यातितमः, स्वोविद्यः; स्विद्यत्तमः, स्विद्यः; चलादिद्यस्मः, चलादिद्यः; पञ्चाद्यसः, पञ्चाद्यः।

५८१। नित्यं चता दे:।

শত প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর নিত্য তম্ট হর। যথা, ছারজ্ঞ দুহেন্য: ছারনম:, सञ्चल्ल पूर्वा: सञ्चलमः, অयुतस्य पूर्वा: অयुतनमः (৩৩)।

 ⁽৩২) কভিপয় শব্দের উত্তরও হয়। য়থা, ऋतिपयानां प्रयाः कतिपवधः।

⁽ ७०) यांन, व्यक्ष्यांन, मश्वश्मत्, आहे जित्नत छेतत् हत् हत् । यथा, नासस्य पूर्याः नासतमः, व्यक्षमासस्य पूर्यः व्यक्षमासतमः, संवस्यरस्य पूर्याः संवस्यरतमः।

५८४। षद्यारंखादे: ।

যক্তি প্রভৃতি সংখ্যাবাচক প্রাতিপদিকের উত্তর নিত্য তম্ট্ হয়।
যথা, ঘট: पूर्याः ঘটিলনা, ধ্যানিলনা, দ্যানিলনা, দবনিলনা। অন্য সংখ্যাবাচক শব্দ পূর্বে থাকিলে হয় না; তথ্ন
১৪৬ সূত্রের অনুযায়ী কার্য্য হইবেক। যথা, एकपटेः पूर्याः
एकपटिलमाः, एकपटः; द्विषिटलमाः, द्विषटः।

১৪৯। बद्ध गगा पूग संवेभ्यस्तियुक्।

পূরণ অর্থে, বহু গণ, পূগ, সংঘ, এই কর প্রাতিপদিকের উত্তর তিথুক্ ছর, উ ক ইং, তিথ থাকে। যথা, बह्वनां पूरणः बहु-तियः, गणानां पूरणः गणतियः, पूगानां पूरणः पूगतियः, संघानां पूरणः संघतियः।

५७०। बत्ननादिय्क्।

পূর্ণ অর্থে, বজুপ্রতারান্ত প্রাতিপদিকের উত্তর ইথুক্ হয়, উ ক ইৎ, ইথ থাকে। যথা, বাবনা দুহ্যাং বাবনিঘঃ, নাবনিঘঃ, হ্নাবনিঘঃ, ক্রিয়নিঘঃ, হ্যনিঘঃ।

५७५। तदस्याखिन् वास्ति मतुप्।

तत् सस सिन, तत् सिन् न सिन, अरे मूरे अर्थ, श्रीजिनिम्कित छेडत् मजून् इत, छे न रेर, मर शिकः। यथी, मितरसासि मित-मान्, बुद्दिस्सासि बुद्दिमान्, भीरसासि भीमान्, श्रीरसासि, श्रीमान्, संग्रीय सिन संग्रमान्, पिता स्मासि पित्नमान्, भत्तरसासि भत्तमान्, वपुरसासि वपुष्मान्, 'सम्मिरसिद्धिस्सि सिनमान्, वायुरसिद्धस्सि वायुमान्, नद्योऽसिन् सिन नदी-मान् देगः, गावोऽसां सिन गोमतो श्रासा।

३७२। अवर्णीन्तान्त्रो वः।

অर्तीस श्रीिजिमित्रेत छैडत विध्ि मजुलित म शास्त र रहा। यथी, ज्ञानमस्मास्ति ज्ञानवान्, धनमस्मास्ति धनवान्, बसम् जस्मास्ति बसवान्, विद्या जस्मास्ति विद्यावान्, दया जस्मास्ति दयावान्, जमा जस्मास्ति जमावान्।

১৫৩। यङ ज य न स्पर्धान्तात्।

যে সকল প্রাতিপদিকের অস্তে ৬, এ, ৭ ন ভিন্ন সপর্শবর্ণ থাকে, ভাহাদের উত্তর বিহিত মতুপের ম স্থানে ব হর। যথা, নঙ্কির্ অক্সিন্ধন্ধি নঙ্কিনান্, বিহ্যুব্ অক্সিন্ধন্দি বিহ্যুবান্। ধ

১৫৪। अवर्णीपधात्।

य मकन প্রাতিপদিকের উপধান্থনে অবর্ণ থাকে, তাহাদের উত্তর বিহিত মতুপের ম স্থানে ব হয়। যথা, আন্ধা অত্যান্তি আন্ধেষাস্থ, সাম্বীয়েম্ব মন্দি সাম্বাস্থ।

५००। मनारोपधाञ्च।

যে সকল প্রাতিপদিকের উপধান্থলে য থাকে, ভাষাদের উত্তর বিহিত মতুপের ম স্থানে ব হয়। যথা, জন্মী হয়ো দি কন্মীবাৰ, ফ্রনী ক্ষাব্যালি মনীবাৰু।

১৫७। न यना है:।

यत প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর বিহিত মতুপের ম স্থানে ব হয় না। যথা, বৰদাৰ, দ্বস্ত্বাদাৰ, ৰয়াদাৰ, হাজাদাৰ, গছলোৰ, হুহিলাৰ, ক্রস্তাৰ, তান্মিদাৰ, দুলিদাৰ, অদিদাৰ,।

५८१। उदम्बदादय: संज्ञायाम्।

ম চুপ্প্ৰত্যয় হইলে, এবং সংজ্ঞা বুঝাইলে, উদৰং প্ৰভৃতি শৰ

निशांष्ठत निक रहा। यथा, खद्दबम्बिश्विच खद्ग्वान् स्त्रद्रः, खन्यत खद्दवान् ; राजा खब्दान्नि राज्ञ्यान् ग्रोमनराज-युक्तो देगः, खन्यत राज्ञ्वान् ; वक्तं खस्यामिक वर्ष्मेखती नाम नदी, खम्यत वर्ष्मेवती ; खस्य खब्दान्नि खणीवान् जानूर्यत्यः, खन्यत बस्थिमान् ; वक्तमस्त्रान्ति वक्तीवान् नाम राजा, खन्यत वक्तवान् ; कक्या खस्यान्ति कक्तीवान् नाम स्विः, खन्यत कच्यावान् ; खन्यमस्त्रिः इसन्वान् नाम पर्वतः, खन्यत वनव्यावान् ।

১৫৮। कुसुद्द नड वेतस् महिषेग्यो डुतुप्।

कूमून, नफ, विक्रम, यश्य, बेरे गिति श्रीजिनिष्टित छैहत पृत्रून् रह छ छ न रेर, वर शीकि। यथा, ज्ञसदान्यस्मिन् सन्ति ज्ञसदान्, नष्टान्यस्मिन् सन्ति नष्ट्रान्, वेतसान्यस्मिन् सन्ति वेतसान्, महिषा सस्मिन् सन्ति महिष्णान्।

১৫৯। **चस्** माया मेघा खात्रो विनिनी।

चम्डांशास, याहा, त्यथा, मुख, এই मकल প্রাভিপদিকের উত্তর বিকণ্পে বিনি হয়, ই ইৎ, বিন্ থাকে; পক্ষে মতুপ্। যথা, वस्रोऽखालि वस्त्ती, वस्त्तान्; तेलोऽखालि तेलस्ती, तेल-लान्; पनोऽखा चलि पर्याखनी, परस्ति भेतुः; भावा प्रखासि मावानी, मावानान्; मेथा खखालि नेधानी, भेधा-नान्; सत् चखालि सन्ती, सन्तान्।

५७०। नित्यं तपसः।

ज्भम् मास्त्र जेवत् निका विनि रह। यथाः, तपीऽसास्ति तपसीः, तपस्तिनीः।

५७५ । दुन् वा नैकखरादवणीत्।

५७२। निखं सुखा है: ।

मूब প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর নিজ্য ইন্ হর। যথা, सुख्य मृ ख्यांकि सुखी, दुःखमस्यांकि दुःखी, प्रण्योऽस्यांकि प्रण्यो, कुक्रमस्यांकि कुक्की, सहस्रमस्यांकि सहस्रो।

১७०। इस कराभ्यां जाती।

जांि तूर्यारेल, १८, कत, अरे मूरे श्रीविशिषाद्वत छेवत निछा रेन् रहा। वर्षा, इस्तोऽस्थास्ति इस्ती गयः, वरोऽस्थासि वरी गजः। অन्यत, इस्तोऽसास्ति इस्तवानु पुरुषः।

५७८। वर्णाङ्गस्यादिणि।

उक्काती तृसारत, वर्ग मास्त्र छेडत निका सेन् एत । वर्षाः क्यास्ति वर्षी नक्यास्ति वर्षी नक्यास्ति ।

• ১७৫। पुष्कराहिभ्यो देखे।

हांन तूर्याहेल, भूकत अंज्ञि श्रांडिभिन्न के हत निष्ठा हेन् हर । यथी, उष्मराख्यस्यां सन्ति पुन्मरिक्षी हीर्घिका, पद्मान्यस्यां सन्ति पद्मिनी, उत्पत्तिनी, पद्मिनी, सरोजिनी, सरोहस्थि, सर् विन्दिनी, सन्धोजिनी, सम्बन्धी, कम्बिनी, क्रस्टिनी, नैट- वियो, विसिनी, च्याबिनी, तमाबिनी, निवनी, तरिक्क्यी, कल्लीबिनी, तटिनी, प्रवाहियी।

১७७। **प**र्थाद् याचने ।

ষাচক বুঝাইলে, অর্থ, এই প্রাতিপদিকের উত্তর নিত্য ইন্ হয়। ষথা,, অর্থীঃজ্ঞান্দি অর্থী যাবক:; অন্যত্ত, অর্থনার।

५७१। चर्चान्तेभ्यस्।

वर्षां श्रांजिनित्वत छेवत निछा हेन् इत्र । यथा, विद्याह्मपोऽष्यः प्रयोजनमस्यास्ति विद्यार्थी, धनार्थी, धान्यार्थी, हिरखार्घी, सहदक्तियार्थी।

५% । मांचा देली विभाषा ।

गांश्म श्रम् श्रमित श्री हिंदि हिंदि है विकास निवास का स्थारित की स्थारित की

১७৯ । फेनादि**लय**।

ফেন, এই প্রাতিপদিকের উত্তর বিকক্ষে ল ও ইল হব। যথা, फोनीऽक्षिद्धक्कि फोनबः फोनिबः ; পক্ষে, फोनवान्।

५१०! खोमाहे: शः।

লোমন্ প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর শ হয়। বথা, তামান্যঞ্জ ধলি তামম:, বামম:, দিহিম:, কর্ম:, ক্মিম:।

>१५। पिच्छा पङ्काभ्यामितः।

পিচ্ছা, পক্ষ, এই দূই প্রাতিপদিকের উত্তর ইল হয়। যথা, দিক্তা অংশুটো দিক্তিন', দাল্লিল:।

५१२ | इन्तादुर:।

দন্ত, এই প্রাতিপদিকের উত্তর উর ছব। যথা, ভ**ল্পনা হলা:** ধন্যঞ্জ **বন্ধ**ে।

১१७। जब ग्रुबि सुब्ब सञ्चयो र:।

खेर, खिरि, মু∗क, सधू, এই मकन প্রাতিপদিকের উত্তর র হয়। यथी, जबरः, ग्रुषिरः सुन्कारः, मधुरः।

५१८। मुखादेश।

মুগ প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর র হয়। যথা, **রম্ভদন্তান্তি রম্ভাব্যে, ক্সার্য্য, নগমন্**, দাযাভূব্য়।

५१৫। नड शाद्भ्यां डुलप्।

নড, শাদ, এই দৃই প্রাতিপদিকের উত্তর ডুলপ্ হয়, ড প ইৎ, বল থাকে। যথা, নভা অফ্লিন্ ফালি নভুল:, মাহা অফ্লিন্ দলি মাহুৱ:।

১१७। सम्यादेवेल: ।

কৃষি প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর বল হয়।

२११। दीर्घीज्यः।

वन প্रভाग रहेतन, असा स्रत मीर्घ रतः। यथा, किष्रिसास्ति कषीवनः, परिषद्दनः, पृषद्दनः, रजस्त्वना, जर्जस्तनः, टनावनी इस्ती, शिखावनी असूरः।

১१४। केशा देव: सन्नावास्।

সৎজ্ঞা বুঝাইলে, কেশ প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উঠর ব হয়। যথা,

केगाः सन्यस्य केगवः विष्णुः, मियरसास्तिमियवः नागविधेवः, स्वज्ञमः स्वस्थास्ति स्वज्ञमवं पिनाकः, गाविस्टरस्यास्ति गाविस्टब्स् स्वस्तुनस्य स्रतः। ইकांद्र मीर्घेश्ड रह्न, गाविस्टोवस्।

५१२। खादामिन स्थि।

अर्था दुवाहेल, च, এहें প্রাতিপদিকের উত্তর আমিন্ হয়। यथा, सम् ऐयर्थम् स्थासि सामी।

১৮०। घीतोश्यास्यामानुरमञ्जे।

অসহন অর্থে, শীত, উজ্ত, এই দুই প্রাতিপদিকের উত্তর আলু হয়। যথা, ঘীন ন सञ्चते ঘীনাৰুঃ, ভর্মান सञ्चते ভক্মাৰুঃ।

১৮১। वातातीसाराभ्यां रोगे किन्।

रतां तृयारेल, तांड, खडीमांत, अरे मूरे श्रीडिलमित्कत उँवत किन् रत्र। यथा, वातोऽखास्ति वातकी, खतीसारोऽखास्ति खती-सारकी।

५५२। बल्बाहेर्भः।

বলি প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর ভ হয়। যথা, बत्तवीऽस्मिन् सन्ति बस्तिमम् मध्यम्।

১৮७। चर्य चाहेरत्।

यगम् প্रভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর অং হয়, ৫ ই৫, য় থাকে।
यथा, स्रम्मांसि सस्य सन्ति स्मर्माः, स्टोऽस्मास्ति स्टरः, पवितस्
सस्मास्ति पवितः, जटा सस्य सन्ति लटः, सम्बो रागोऽस्मास्ति
सम्बः, स्वमस्मास्ति स्वमः, वनगो रसोऽस्मास्ति वनगः।

५४८। **चन्न्य ग्रुमन्त्र**ां हु:।

অহ্দ্, ওতদ্, এই দুই প্রাতিপদিকের উত্তর যু হয়। যথা, অস্তন্

अञ्चास्ति चहंयुः चहकूत्रवान्, ग्रुभम् चङ्गासि ग्रुभंयुः ग्रुभा-न्यितः।

५४४। व्योत्साइयः।

ज्ञा । अञ्ि गम निशांष्ठान मिक रहा। यथां, ज्योतिरखा चित्र ज्योत्खा, तमोऽखा चित्र त्रीम्सा, स्कूनस्याति स्कूत्यः, मनस्यासि मनिनः, मनोमसः; वर्षांसि चित्रान् सन्ति वर्षांनः ससुद्रः।

১৮७। वाम्मिन् वाचाल वाचाटा:।

वांश्चित्, वांनान, वांनाने, तिशांख्य मिक्क इत्र। यथा, वाचीऽस्थ सन्ति वाक्सी ; यः क्वस्तुतं बद्ध भाषेते, स वाचासः, वाचाटः।

১৮१। मूले जाइ: कर्णादे:।

मृत अर्थि, कर्न প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর জাহ হয়। यथा, कर्यस्य मृषं कर्याजाहम्, सञ्चाो मृतम् अधिजाहम्, ध्रृजाहम्, नस्य-जाहम्, केमजाहम्, पादजाहम्, स्टक्कजाहम्, दन्तजाहम्।

१५५। पद्मात्ति:।

মূল অর্থে, পক্ষ, এই প্রাতিপদিকের উত্তর তি হয়। যথা, দল্প । মূর্ব্য দলারিঃ।

১৮৯। मार पित्रस्यां डुल व्यो भातरि।

खुं ज् व्यर्थ, यां ज्, बहे श्रीजिशितिकत जैवत जून, बतर शिज्, बहे श्रीजिशितिकत जैवत वा हत, ज हर, जैन श्रीतक। यथा, मात्रभौता मात्रवाः, पित्रभोता पित्रवाः।

১৯०। डामहः पित्रोः।

পিতৃ ও মাতৃ অর্থে, মাতৃ, পিতৃ, এই দুই প্রাতিপদিকের উত্তর ডামহ হয়, ড ইৎ, আমহ থাকে। হথা, নারঃ দিনা নারালভঃ, पितः पिता वितामसः, मात्रमीता मातामस्री, पित्रमीता पितामस्री।

১৯১। ठः कम्पणः कुघले ।

কুশন অর্থে, কর্মন্, এই প্রাতিপদিকের উত্তর ঠ হয়। যথা, কর্মাথা ক্রমন্তঃ কর্মাতঃ।

১৯२। पूर्वादिनिसृतीयार्थे।

ज्जीवात जार्थ, शृर्ख এই প্রাতিপদিকের উক্তর ইনি হয়, ই ইএ, ইন্থাকে। যথা, पूर्व्यमनेन कतं भुक्तं पीतं गतं वा पूर्व्यो, कतं पूर्व्यमनेन कतपूर्व्यो कटम, भूकं पूर्व्यमनेन भुक्तपूर्व्यो चोद-नम्, पीतं पूर्व्यमनेन पीतपूर्व्यो पयः, गतं पूर्व्वमनेन गतपूर्व्यो स्टक्ष्म्।

১৯৩। दृष्टादिस्यस्।

कुछी सांत व्यर्थ, इस्म अकृष्ठि अां जिनिक्त स्व हित इस । यथा, इसमनेन इसी यक्ते, व्यक्षीतमनेन व्यक्षीती यास्त्रे, ख्रुतमनेन ख्रतो वेहे, स्ट्वीतमनेन स्ट्वीती उपहेंग्रे, व्यक्षातमनेन व्यक्षाती इति हो से, व्यक्षीतमनेन व्यक्षिति गुरौ, निराक्ततमनेन विराक्षती यत्नौ, उपक्षतमनेन व्यक्षीयी मनेन व्यक्षीयी मते।

১৯৪। चतियायने तमविष्ठनी।

वह्न मृथ्य अत्कत उष्कर्ष तूसाहिल, প্রাভিপদিকের উত্তর তমপ্ ও ইছন্ হয়, তমপের প ইং, তম থাকে; ইছনের ন ইং, ইছ থাকে। যথা, অব্নীঘাদানিম্বীদ पटुः पटुतमः, पटिषः; अवनेषाम् অतিম্বীদ অধুন । অধিকঃ, অঘিষঃ; অব্দীঘাদানিম্বীদ ব্যক্ত ব্যক্ত: तमः, गरिषः; प्रियतमः, प्रेष्ठः; दोर्घतमः, द्राघिष्ठः; इद्यतमः, दुद्धिः; सद्यतमः, অदिष्ठः; क्रम्तमः, क्राम्छः।

५८८ | द्वांसरवीयसुनी।

मृत्यत स्था अत्कत छै० कर्स तूसांकेत, श्रीजिभिनित्कत छेवत जत्भू छ क्ष्यमून् हत, जत्भावत भ केष, जत थीत्क, क्षेत्रमून छ न् केष, क्षेत्रमून थीत्क । यथी, क्षयमनयोरित स्थेन पटुः पटुतरः, पटी-यान् ; अयमनयोरित स्थेन चचुः चचुतकः, चचीयान् ; सक्तरः, गरीयान् ; पियतरः, प्रेयान् ; दोर्घतरः, द्राघीयान् ; ढढ़तरः, द्रहीयान् ; चढुतरः, मदीयान् ; क्षस्तरः, क्रसीयान् ।

১৯७। य ज्यौ प्रथस्यस्य।

रेष्ठेन् ଓ त्रेयमून् প्रजाग रहेला, श्रामाणायत स्राप्त थ ए आ रत्र । स्था, खयमेपामित स्रयेन प्रमेखः श्रेष्ठः, ज्येष्ठः; खयमनयो ः खातस्येन प्रमाखः श्रेयान् ।

५०१। चा च्यादीरीयसनः।

জ্ঞা, এই আনদেশের পরবর্তী ঈয়সুনের ঈয়ানে আনা হয়। বথা, আহাযাৰ ।

১৯৮। वर्षे च्यो रहस्य।

रेकेन् अ जेश जून् भरत् थोकिरल, वृक्षणस्यत् खार्यत् अखा इत्। सथी, अध्यमेषामन्योर्वो चतिक्रयेन हक्षः वर्षिष्ठः, वर्षीयान् ; ज्योदः, ज्यायान् ।

১৯৯। धन्तिक वाद्योनेंद साधी।

অন্তিকশনের স্থানে নেদ ও বাঢ়শনের স্থানে সাধ হয়। যথা, বীহিল:, বীহীযাৰু; ঘাড়িত:, বাড়ীযাৰু।

२००। चल्पस्य कन् विभाषा।

অংশশনের স্থানে বিকংপে কন্ হয়। যথা, ক্ষনি**চং, রনীবান্** ; অব্দিহ**্, অন্ত্রীবান্**।

२०)। यून: कन् यवी।

यूरम् गास्त्र चार्य कम् अयर् इहा। यथा, कानिष्ठः, कानीयान् ; विष्ठः, विदीयान् ।

२०२। स्थूल दूरवो: स्थव दवी।

मूलकात स्व ଓ मृतेसात निव रहा। यथा, स्थविष्ठः, स्थवीयातृ; दविष्ठः, दवीयान्।

२०७। चह चुद्रयोदर चोदौ।

উक्रम्रात्न दत् ७ कूनुम्रात्न (काम रत्। यथा, वरिष्ठः, वरीयान् ; चोदिष्ठः, चोदीयान्।

२०८। जिप्र वद्धवयोः चेप वंदी।

ক্লিপ্ৰস্থানে কেপ ও বছলস্থানে বংছ হয়। যথা, স্থাদিচঃ, স্বীনী-বান্; पंहिटঃ, पंहीबान्।

२०४। स्थिरस्य स्थः।

ब्रिन क्यांत्र स्रा वर्षा, स्रोतः, स्रोयान्।

२०७। विनातुपोर्जुन्।

रेफ ज्य जियमूज् পर्त थांकिल, विज् अ मञ्जू প্রভাষের লোপ इयः। यथा, अध्यमेगामित स्वेन सायावी माविष्ठः, साबीवान् ; आधिने पासित स्वेन वर्षमान् विषठः, वर्षीवान् ।

२०१ । स्वोम्स्यिष्ठी।

বহুশব্দের উত্তর ঈয়সূন্ হইলে ভূয়স্চ, ইছন্ হইলে ভূয়িছ, নিপাতনে সিদ্ধ হয়। যথা, আন্ধানকীহালিকখীৰ ৰক্ত: পুলান্, আম্বীলালবিষ্টন ৰক্ত: পুৰিত:।

२०४। किंवत्तरां द्वोरेकस्य निर्दारचे डतरः।

मूराव सर्पा একের নির্দ্ধারণ বুঝাইলে, কিম্, যদ্, उদ্, এই তিন প্রাতিপদিকের উত্তর ছয়, ড ইৎ, অতর থাকে। ষথা, অনযोः कतरो वैच्यावः, অনযोर्यतरो बास्त्राचः ततर स्वागस्त्रहा।

२० । बह्ननां डतस:।

বস্ত্র মধ্যে একের নির্দ্ধারণ বুঝাইলে, ভড়ম হয়, ড ইৎ, অতম থাকে। যথা, एषां कतमः ঘীৰ:, एषां यतमः चित्रयः ततमः प्रयात।

२১०। एकान्याभ्याञ्च।

अक, खना, अहे नूहे श्रीिजिनित्कत खेळत खडत खडिं हुए।
यथी, भवतोरेकतरः पठत, भवता केकतमः इंट्योतः तथोरन्य-तरो यातः, तेवामन्यतमो स्टतः।

252। किमेदव्ययेथ्योऽद्र्व्ये चतराम् चतमामेकोत्कर्षे।
मूरे ७ वक्षत्र मध्या এक्षत्र छेष्कर्घ वृक्षारेल, किम्, अकातास्त, ९
व्यवात्र मध्यत्र छेछत्, ठछताम् ७ छछमाम् अछात्र वत्र, ठ रूष, छताम्
७ छमाम् थाक्तः। यथा, किल्तराम्, किल्ममाम्, प्राक्कितराम्
प्राक्कितमाम्, छञ्चेस्तराम्, छञ्चेस्तमाम्। मुद्रा वृक्षारेल वत्र मा।
यथा, छञ्चेस्तरस्तरः।

२১२। प्रशंसायां रूपः।

প্রশংসা বুঝাইলে, প্রাতিপদিকের উত্তর রূপ প্রতায় হয়। যথা,
দুমন্ত্রী দীবাক্ত্যা: দীবাক্ত্যা:, দীবাবিক্ত্যা:, আর্দ্রাহিককুমা:, मीमांसक्ত্যা:।

२५७। ईषटूने मत्य देख देशीया:।

हैय॰ मून এই कर्थ दूखांदल, প্রাতিপদিকের উত্তর কণ্প, দেশ্য, ও দেশীয় প্রভায় হয়। যথা, देवदूनी विद्वान विद्वैत्वस्यः, विद्व-देखः, विद्वदेशीयः।

२५८। ति**ज्**न्तात्।

পূर्त्त मृजज्ञाः विश्वि প্রভায় मकल ভিडल प्राप्ततः উत्ततः इतः।
यथा, पठतितराम्, पठतितमाम्, पठतिव्हपम्, पठतिवाल्यम्,
पठितिरेखाम्, पठितिरेशीयम्।

२১৫ । वा सुपो अक्त: पुरस्तात्।

ঈষদৃন অর্থে, সুবন্ত পদের উত্তর বিকল্পে বহু প্রতায় হয় ; এই প্রতায় সুবন্ত পদের পূর্বে যায়। যথা, ছ্মদুন: पटु: बह्डपटु:, पटुकला:, पटुदेखा:, पटुदेशोय:।

२, ३७। तेन तुल्यः स्थान स्थानीयौ।

तेन तुल्तः, এই অर्थि, প্রাতিপদিকের উত্তর স্থান ও স্থানীয় প্রতায় इत्र । वर्था, पित्ना तुल्तः पित्रस्थानः, पित्रस्थानीयः ; श्वात्रस्थानः, श्वात्रस्थानीयः ; मात्रस्थाना, मात्रस्थानीया मात्रस्वता।

२८१। जाती जातीय:।

काि कार्थ, थ्रांजिপिषिकत छेडत कांजीत थ्रेजात हता। यथा, बाह्मायाजातीयः, चान्त्रियजातीयः, पुरुषजातीयः, ह्लीजातीयः, विष्ण्यातीयः, रजकजातीयः, तािकंकजातीयः, वेयाकरण्-जातीयः।

२>৮। संख्याया: कियास्याहित्तगण्यने स्वतस्य्। किया व्यादित्तगण्यने स्वतस्य्। किया व्यादित्तगण्यने स्वतस्य्। किया व्यादित्तगण्यने स्वतस्य व्यादित्रगण्यन् व्यादित्रगण्यन् व्यादित्रगण्यन् वेद्वत् क्ष्यम् श्रीतः व्यादे प्रस्ते प्रस्ते स्वत्ये सुद्ते, सम्बद्धाः स्वितः स्वति स्वतः स्वितः, सनं वारान् स्विति, सम्बद्धाः स्विति, सनं वारान् प्रवितः सम्बद्धाः स्विति, सनं वारान् प्रवितः सम्बद्धाः स्वितः सम्बद्धाः स्वति ।

२५५। हि ति चतुस्यः सुच्।

ক্রিয়ার অভ্যাকৃত্তিগণন বুঝাইলে, দ্বি, ত্রি, চতুর্, এই তিন প্রাতি-পদিকের উত্তর সূচ্ হয়, উচইং, স থাকে। যথা, দ্বী বামী মৃত্রী দ্বিদুত্রী, শীব্ বামাব্ মৃত্রী নিম্ত্রী।

२२०। लोपोऽन्यस्य चतुरः।

সুচ্ হইলে, চহুর্ এই প্রাতিপদিকের অস্তা বর্ণের লোপ হয়। যথা, च**ढरो** वा**रान् भुङ्**क्ते च**ढम्**ङ्के।

२२)। एकस्य सक्तत्र।

এক, এই প্রাতিপনিকের উত্তর সূচ্ হর এবং তৎসহিত একস্থানে সকৃং হর। যথা, एकं वारं भुङ्क्ते सकदुभृङ्के, सकदधीते। এম্বলে অভ্যাবৃত্তি সম্ভব নহে, গণনমাত্র বুঝাইতেছে।

२२२। विभाषा बहोरविप्रष्टाष्टकाले धाच्।

क्रियांत अन्तावृहिन्नान, अवर क्रियांनूकीनकात्मत भवनभत रेनकाँ।
वृकारेल, वर्छ अरे श्रीजिभिनिकत उहत विकल्ण थान् रह, ह रेर था थारक; भरक कृष्यपूर्। यथी, बद्धधा दिवसस्य भुङ्ती, बद्ध-काली दिवसस्य भुङ्ती। रेनकाँगं ना वृकारेल रव ना। बद्धकाली मासस्यागकाति।

२२७। बहुत्यायीहा चयस्।

वस्थ थ अल्लार्थ थ्रांजिनितिकत उत्तत विकल्ल हमम् रत, ह है, मम् थात्क। यथा, बद्ध ददाति बद्धयो ददाति, भूदि ददाति सुरियो ददाति, खालं ददाति खल्ययो ददाति, खोलं ददाति खोलं ददाति। व्यांतिकतं उत्तत उत्तत्व हते स्वांति। व्यांतिक खालं वद्धयः खाली, रहेंद्वक बा। व्यांतिक वद्धयः खाली, रहेंद्वक बा।

२२८। संस्थेन देशवचनाच वीपायाम्।

বীপ্না বুঝাইলে, সংখ্যাবাচক ও একদেশবাচক প্রাতিপদিকের উত্তর বিকম্পে চশস্হয়। যথা, সংখ্যাবাচক—হী হী হরদিন बियो ददाति, पञ्च पञ्च ददाति पञ्चयो ददाति; अक्टन्य-वाठक-पारं पारं ददाति पादशो ददाति, अर्द्धमेषं ददाति सर्देशो ददाति।

२२**৫। विकारे मयट्**।

विकात अर्थ तूकाहरल, श्राहिश्मितिकत छेवत मत्र है हर, प्र श्राहिश । यथा, खर्णस्य विकारः खर्णमयो घटः, खर्णमयो प्रतिमा ; स्टरो विकारः स्टर्णस्यो घटः, स्टर्णस्यो प्रतिमा ।

२२७। इिर्एसय:।

रिद्रभाव निश्रांज्यन शिक्ष रहा। घथा, हिरखस्य विकारः हिर-स्तयः।

२२१। अवयवे।

च्यव्यव तूर्वाहेत्न, श्राष्ठिभिनित्कत छेठत मब्हे हत। घथा, दाह्य-ख्यावयवाः दान्त्मयमासनम्, दर्भाख्यावयवाः दर्भमयो बाद्धावाः, काष्टान्यस्थावयवाः काष्ट्रमयो हत्ती, जव्यां स्यस्थावयवाः जव्यामयं वासः, स्वतान्यस्थावयवाः स्वत्नमयो यत्तः, स्वपूपा स्वस्य स्ववयवाः स्वपूपमयं श्राह्मम्।

२२४। व्याप्ती।

गांश्वि कर्श तूकारता, श्रीिक भित्रकृत छेत्वत महिए रहा। यथा, करेन व्याप्तं जलमयं जगत् प्रचये, रोगेण व्याप्तं रोगमयं गरी-रम्, धूमेन व्याप्तं धूममयं स्टब्स्।

e

२२৯। **संसर्ग**ी

म्यमर्ग तूबाहरम, श्राजिशमितकत उठत प्रश्रेष्ट हम्। यथा, तिखेन संस्टः तिसमरं वर्षयम्, छतेन संस्टं छतमयं व्यञ्जनम्, पापेन संस्टं पापमयं ग्रीरम्।

२७०। सप्टथग्भावे च।

अপृथन् छात तूसाहत्न, श्रीडिलिमिटकत छेतत मत्र इत। यथा, विच्छोरप्रधम्भूतं विच्छानयं जगत्, वाम्स्योऽप्रधम्मूतं वास्नयं धास्त्रम्, चितोऽप्रधम्भतः चिन्त्रयः पुरुषः।

२७५। गोच पुरीषे।

পুরীষ বুঝাইলে, গো, এই প্রাতিপদি েকর উত্তর ময়্ট্ ৼয়। যথা,
गोः पुरीषं गोमयस्।

२७२। स्नेहे तेलन्।

सिश् व्यर्थ, প्राणिभिष्टित जेवत रेजन्त् रत, त रेथ, रेजन शास्त । यथा, तिबद्ध खेहः तिबतैबम्, सर्घपद्य खेहः सर्घपतैबम्, एर-गुडुख खेहः एरगुडुतैबम् ।

२००। भाच् संख्याया विभार्ये।

विधा खार्थ, मः शावाहक श्रांडिशिनित्वत खेवत थाहु इत, ह हेर, शाक्षांका राष्ट्र या विद्या विद्य

२७८। भावान्तरापाइने च।

ভাবান্তরাপাদন অর্থাৎ অন্যথাভাবসম্পাদন অর্থেও ধাচ্ছয়। যথা, पञ्च राज्ञीन एकधा कुरु, एकं राज्ञि पञ्चधा कुरु।

[•]२७৫। ऐकध्याद्यो वा।

अवधा প্রভৃতি শন্ধ বিকশেপ নিপাতনে সিদ্ধ হয়। যথা, एका विधा ऐकध्यम्, दे विधे देधं देधा, तिस्तो विधाः तीर्धं लेखा, पद् विधाः मोढा। পক্ষে, एकधा, दिधा, विधा, चतुर्धा ইতাদি।

ं २७७ । पाद्य: कुत्यिते ।

कुर्धानि त्याहिता, প्राजिलानिकत छेतत लाल श्रेषात रह। यथा, कुत्सिती वैयाकरणः वैयाकरणपामः, मीमांसकपामः, भिषक्-पामः, वैदिकपामः, वेखकपामः, पाचकपामः।

२७१। स्तपूर्वे नरट्।

ভূতপূর্ব্ব অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর চর্ট্ হর, ট ইৎ, চর থাকে।
यथा, আত্রৌ भूतपूर्व्यः আত্রবरः, हृष्टो भूतपूर्व्यः हृष्टचरः,
অধিনী भूतपूर्व्यः অपितचरः, অধীনী भूतपूर्व्यः अधीतचरः।

१७৮। सबसे रूपश्च।

সমৃদ্ধ বুঝাইলে, ভূতপূর্ব অর্থে, চর্ট্ ও রূপ্য প্রতায় হয়। যথা, देवदत्तस्य भूतपूर्व्य देवदत्तस्यम् देवदत्तसरं वा भवनम्।

२७৯। एकादाकिनिरसहावे।

সহাঃশান্য বুঝাইলে, একশন্তের উত্তর আফিনি প্রত্যর হয়, ই ইৎ আকিন থাকে। যথা, एक एव पकाको।

२८०। प्राक्टेरक् खार्थे।

স্বার্থ বুঝাইলে, প্রাতিপদিকের টির পূর্বে অক্ হয়। যথা, ৰূমা হব ৰূমৰা, নামা হব নামৰা।

२8३। बालादेरिक्।

बार्थ तूखांदेल, ताला প্রভৃতি প্রাতিপদিকের টির পূর্বে ইক্ছয়।
यथा, बाबा एव वार्तिका, तरचा एव तर्राचिका, निषुणात्एव
निषुणिका, चतुरा एव चतुरिका, चपना एव चपविका, खता
एव चितका, गोधा एव गोधिका।

२८२। पद्माते कन्।

অক্তাত অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর স্বার্থে কন্হর, ন ইৎ, ক থাকে। যথা, ক্রেবেদস্থা অস্ত্রা, তত্ত্রা, দল্লিজনা, গর্হীনকা।

२८७। कुत्सिते।

কুৎনিত অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর স্বার্থে কন্হয়। যথা, কুলিয়ানীকে: অস্বনঃ, কুলিয়ানী মহিল: দহিলন:।

২88 । चल्पे।

অপ্প অর্থে, প্রাভিপদিকের উত্তর স্বার্থে কন্ হর। যথা, **স্বর্নে** নীবা নীবনম্, **বা**হনম্, মবিবানম্।

२८४। इस्बे।

दुव अर्थ, প্রাতিপদিকের উত্তর স্বার্থে কন্ হয়। যথা, सुस्तो एकः एककः, सुस्तः पटः पटकः, सुस्तः स्वकाः सम्यकः, सुस्तो दग्रहः दग्रहकः।

२८७। सनुनम्पायाम्।

অনুকম্পা অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর স্বার্থে কন্ হয়। যথা, অনুকন্দিনে: দুক্স: দুক্সনা:, বন্ধান, দুর্ল বনা:।

२**५१ संज्ञावाम्** ।

সৎজ্ঞা অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর স্থার্থে কন্ হয়। যথা, ক্ষেকাং, रोह्नितक, মর্থিৱকাং।

• २८৮। **क्लियामन्यो** ऋखः ।

खोलिक প্রাতিপদিকের উত্তর কন্ श्रेति, অস্তা সর दुव हर । यथा, मालवी मालविका, सागरी सागरिका, लक्क्की खबिक्किना, माधनी माधविका, चक्की चिक्किना, क्रमक्की क्रमिक्का, मेफालो मेफालिका, न्यसाली न्यसाविका, यूषी यूषिका, बदरी वट्टिका, ढूती ढूर्तिका, काखी काखिका, घारी <mark>घारिका,</mark> स्त्रची स्त्रचिका।

२८३। इस्बे कुटी धमी ग्रुक्डाम्यो र:।

बुब অর্থে, কুটা, শমা, শুঙা, এই তিন প্রাতিপদিকের উত্তর র হয়। যথা, লুক্তা নুতী 'নুতীহা, লুক্তা মদী মদীহা, লুক্তা মুব্তা মুব্তাহা:।

२८०। अध्वोच वत्यर्षभेभ्यसारट्।

হুৰ অর্থে, অধ, উক্ষন্, বৎস, থ্যন্ত, এই চারি প্রাতিপদিকের উত্তর তর্ট হয়, ট ইৎ, তর থাকে। যথা, স্থান্ধারের: অস্বরহ:, ভবাবহ:, বন্ধদহ:, স্থাননহ:।

२०४। पश्चम्यास्त्रीसन् वा।

शक्ष्मीविखिकिश्वात विकाल जिन्त् रह, हे त्रेष, जम् थाक । यथी, ग्टहात् ग्टहतः, यामात् यामतः, नगरात् नगरतः, सब-स्मात् सर्वतः, विश्वसात् विश्वतः, उभवस्मात् उभवतः, भवतः भवतः, एकस्मात् एकतः, खन्यसात् खन्यतः, पूर्वसात् पूर्वतः, परस्मात् परतः, दिखिसमात् दिखिसातः, उत्तरस्मात् उत्तरतः, हस्नात् हस्ततः, द्वात् द्वातः, भेषात् भेषतः, जनात् जनतः।

२ (१२ । सप्तस्याच ।

मश्रमेश्वात विकल्भ जिनल् रहा। यथा, पूर्विद्यान् पूर्वितः, दित्त या-द्यान् दित्तियातः, जत्तरांद्यान् जत्तरः, प्रथमे प्रथमतः, परिद्यान् परतः, जये वयतः, जादौ खादितः, मध्ये मध्यतः, जाने चनतः, एडे एडतः, परश्रयोः पार्श्वतः, वर्वद्यान् सर्वतः।

२८७। नित्यं पर्व्वभिभ्याम् ।

পরি ও অভি উপসর্গের উত্তর নিতা তসিল্ হয়। যথা, মহিतः, অমিন:।

२**৫८। न हानवहो**: ।

ছাক ও কৃহ ধাতুর প্রয়োগে তদিল্ ছয় না। যথা, ख्वगौत् দ্বীयते, पर्वताटवरोद्धात ।

२०८। सप्तस्यास्त्रल् वा सर्वनान्तः।

गर्सनाय (०८) गर्पत् मध्योद्धात विकर्ण्य बल् इत, ल है, ब थारक। यथा, सर्वस्तिन् सर्वत, उभयस्तिन् उभयत, एकस्तिन् एकत, चन्यांचान् चन्यत, इतर्चान् इतरत, पूर्वस्तिन् पूर्वत, परस्तिन् परत, चपरस्तिन् चपरत।

२०४ चयता एततृ यद् तदाम्।

ডিসিল্ও এল্ হইলে, এডদ্স্থানে অ, যদ্স্থানে য, ও ডদ্স্থানে ড হয়। যথা, एतस्तात् चातः, एतस्तिन् चाल्, यस्तात् यतः, यस्तिन् यसः, तस्तात् ततः, तस्तिन् तसः।

२৫१। किस: कु:।

किम्खांत कू रहा। यथा, कस्मात् क्षतः, कस्मिन् कुन।

२८४। क कुद्दी।

ৰু ও কৃহ নিপাতনে দিদ্ধ হয়। যথা, **কব্যানু ক**, কুস্থ।

२৫৯। दूरिहम:!

द्वेनम्श्रात रे इह (००)। यथा, खल्यात् इतः।

२७०। सप्तस्या इ:।

मश्रमी द्वारत इ इतं। यथा, खिसान दहा।

⁽ ၁৪) दि, अञान्, युकान् छित्र ।

⁽ ৩৫) मानीम् इश्लिख इत्र।

२७)। दूतरासामपि दृश्यन्ते।

পश्चमी, मश्चमी छिन्न खनांना विछित्तिसाति छिन्न छ उन् श्रेष्ठात्र क्रिया श्रेष्ठात्र क्रिया श्रेष्ठा यात्र । यथा, स भवान्, ततोभवान्, तत्वभवान्; तं भवन्तम्, ततोभवन्तम्, ततोभवनाः, तत्वभवताः, तत्वभवताः, तत्वभवतः, तत्वभवतः, तत्वभवतः, तत्वभवतः, तत्वभवतः, तत्वभवतः, तत्वभवतः।

२७२। एक सर्व्यो: काले दा।

কাল বুঝাইলে, এক, দর্জ, এই দুই দর্জনামশকের দপ্তমীস্থানে দা হয়। যথা, एक আয়িন্ কাভী एक হা।

२७७। सो वा सर्वस्य।

मा इहेरल, मर्खणक्षांत विकर्ण्यम इत्र। वर्था, सर्वासान् काचे सदा, सर्वेदा।

२७८। अन्य किं यदां किंल्च।

कारा, किम्, यम्, এই जिंत गर्यताम मास्त्र मश्वमीश्वादा, मा अ हिंत् इह, ल देश, हिं थारक। यथा, कान्यस्तिन् काले कान्यर्हि, कान्यटा।

२७৫। किं यदो: क यौ।

हा ও ईिल् इडेल, किम्युःतिक, ७ यम्ऋंतिय इहा। यथी, किसान्काले किलें कटा, यिखान्काले यिक्टियदा।

२७७! तदो दानीं च।

তদৃশব্দের সপ্তমীস্থানে দা, ছিল্, ও দানীম্ হয়।

२७१। तस्तदः।

मा, वित्न, ध मानीम् रहत्त, उन् मक द्वात उहा। यथा, तिस्तान् काले तदा, तिर्दे, तदानीस्।

२७४। दूदमो दानीम्।

हेन्स्मारकत् मश्रमीखारन नानीम् इतः। यथा, **खास्तिन् काले** इदानीस्।

२७३। **य**धुनैतर्ही।

অধুনা, এতৰ্ছি, এই দুই পদ নিপাতনে শিদ্ধ হয়। যথা, অবিয়ান্ কাৰী অধুনা, অবিয়ান্ एतবিয়ান্ বা কাৰী एतर्ভि ।

२१०। एद्युस् पूर्व्वादेरङ्गि।

मिन तूथारेतन, भूकं श्रः शिष्ठिभिमित्वतं छैडतं अमृगम् रहा। यथा, पूर्विस्मान्तिनि पूर्वेद्युः, चान्यस्मिन्तत्तिन चान्येद्युः, चापर-सिन्नहिन चपरेद्युः, इतरेद्युः, चन्यतरेद्युः, चापरेद्युः, उत्तरेद्युः, उभवेद्युः (२७)।

२१५। स्थ: बद्योद्ध म्ब: परेद्यक्य:।

२१२। **ऐषम: परत परार**यो वर्षे ।

বংসর বুঝাইলে, বিভক্তি সহিত ইদস্তাজন ঐবমস্, পূর্বস্থানে পত্তং, এবং পূর্বতরস্থানে পরারি হয়। যথা, আংক্যান্ বর্ষী ऐষদঃ, দুর্জাক্যান্ বর্ষী দত্ত্য, দুর্জাবেই বর্ষী দহাহি।

२१७। याल् प्रकारे स्तीयाया:।

⁽०७) উভয়শদের উত্তর দ্যুস্ও হয়। যথা, ভাষা **স্থান্** স্বাস্থানি ভাষা ব্যাহার

প্रकात व्यर्थ, ज्जीशासात थान् रह, न रूथ, था थारक। यथा, सर्वैः प्रकारैः सर्वेषा, सत्येन प्रकारेण सत्यथा, सतरेण प्रकारेण सतर्या, समयेन प्रकारेण समयथा, सपरेण प्रकारेण सपर्या।

२१८। य तौ यत्तहो:।

थील हरेल, यम्भक चास्त्र य, उ. छम्भक चास्त्र छ इत। यथा, येन प्रकारेण यचा, तेन प्रकारेण तथा।

२१६। कयसिखमी।

कथम् ७ रेश्यम्, এर मूरे श्रम निशांकरन निष्क रहा। यथाः, कोन प्रकारेण कथम्, चनेन एतेन वा प्रकारेण द्रासम्।

२१७। परादेरसात् सप्तमी पञ्चमी प्रथमानाम् ।

शत প্রভৃতি প্রতিপদিকের সপ্তমী, পঞ্চমী, ও প্রথমার স্থানে

অস্তাৎ হয়। যথা, परस्किन् परस्कात् परो ना परस्कात्, पश्चिमे

पश्चिमात् पश्चिमो ना पश्चिमसात्।

२११। पश्चात्।

অস্তোৎ সহিত অপ্রশব স্থানে পশ্চাৎ নিপাতনে সিদ্ধ হয়। যথা, অমহান্ত্রিকু অমহায়ান্ অমহা বা মস্বান্।

२१४। उपक्षेपरिष्टात्।

অস্কাৎ সহিত উৰ্দ্ধণৰ স্থানে উপৰি ও উপৰিষ্টাৎ নিপ:তনে সিদ্ধ হয়। বথা, জৰ্দ্ধী জন্ধী বা ভৰ্মানে, ভৰ্মাছোন্।

२१२ । पूर्वाधरावराणामसिसा

পূর্ব্ব, অধর, অবর, এই তিন প্রাতিপৃদিকের সপ্তমী, পঞ্চমী, ও প্রথমার স্থানে অস্তাৎ ও অসি হর, ই ইৎ, অস্ থাকে।

२৮० । पुराधी पूर्वाधरयोः।

অন্তাৎ ও অসি হইলে, পূর্বস্থানে পুর, ও অধরস্থানে অধ হয়।

यथी, पूर्व्वस्थिन् पूर्व्वस्थात् पूर्व्वी वा प्ररक्षात्, प्ररः ; अवरस्थिन् स्वथरस्थात् स्वभरो वा स्वभक्तात्, स्वभः।

२५५। अवो विभाषावरस्य।

खड़ां ९ अभि इटेल, यद्रहात विकल्म अद हत। वर्षा, खनर-स्मिन् खनरस्मात् खनरो वा खनसात्, जैनरस्नात्, खनः, खनरः।

२५२। दिन्देशयोर्दिणोत्तरयोरतसुः।

मिश्रीष्ठ अ तम्मदाष्ठि मिक्नि अ छेहत नास्त्र मश्रमी, अ श्रमी, अ श्रीभात सात अलमू रहा, छे देव, अलम् थात्तः। यथा, दिवास-सिन् दिवाससात् दिवासो वा दिवासतः, उत्तरिसन् उत्तर-सात् उत्तरो वा उत्तरतः।

२४७। उत्तराधरदिश्वणानामाति:।

উত্তর, অধর, দক্ষিণ, ইংাদের সপ্তমী, পঞ্চমী, ও প্রথমার স্থানে আতি হয়, ই ইৎ, আং থাকে। যথা, ভলম্বিয়েন্ ভলম্বার্ ভলমী বা ভলমান্; অধ্যান্, ব্বিয়ার্।

२৮८। एनप् चादूरेऽपश्चस्याः।

অদূর অর্থে, এনপ্ও হয়, প ইৎ, এন থাকে। যথা, उत्तरिखानृ उत्तरी वा उत्तरेख; अधरेख, दिचिखीन। পঞ্চীস্থানে হয় না।

२५८। दिच्योत्तरयोरादाची च।

দকিণ ও উত্তর শদের সপ্তমী ও প্রথমার স্থানে আৎ ও আহি হয়, ত ইৎ, আ থাকে। যথা, হক্ষিয়া, হক্ষিয়ালি; ভক্ষা, ভক্ষাদোলি।

२৮७। अवे कालाव्ययेथ्यस्तनष्।

खब अपर्थ, कांनवांनी अवग्रशास्त्र छेटत जन्य रहा व रे॰, जन शास्त्र। यथा, बाद्य भवस् खाद्यतनम्, प्रातभवं प्रातस्त्रनस्, सार्यं भवं सायन्तनम्, दोवातनम्, दिवातनम्, पुरातनम्, विरन्तनम्, सदातनम्, अधुनातनम्, ददानीन्तनम्, तदानीन्तनम्।

२৮१। प्राक्षे प्रगेथाच्या

२४४। विभाषा पूर्वीक्षापराक्षास्यां सप्तस्याम् । मध्यी विश्वकित्तः, शृक्षीङ्ग ७ जशताङ्ग मत्मत छेवत विकल्ण उत्रय् इत्र। यथा, पूर्वाक्के सर्व पूर्वाक्केतनम्, पौर्व्वाक्षिकम् ; ज्यपराक्के सवम् जपराक्कितनम्, ज्यापराक्कितम् ।

२४२। नित्यसङ्घीदे:।

উর্জ প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর নিত্য তনষ্ হয়। যথা, জর্দ্রী মবং জর্দ্রবলঃ, ওঘহি মবং ওঘহিবলঃ, অংঘঃ মবং অধ্দরনঃ, দাক্ষবঃ দাক্ষবঃ, पूर्व्यो सवः पूर्व्यतनः।

२৯०। श्रादि मध्यास्यां मन्।

সপ্তমী বিভক্তিতে, আদি, মধ্য, এই দূই প্রাতিপদিকের উত্তর মন্ হয়, ন ইৎ, ম থাকে। যথা, স্মাহী দবঃ আচিদঃ, দদ্ধী দবঃ দদ্মদঃ।

२৯১। समान्तपश्चाद्वारो डिम:।

জগ্ন, অন্ত, পশ্চাং, এই তিন প্রাতিপদিকের উত্তর ডিম হর, ড ইৎ, ইম থাকে। যথা, অন্ত মবং অনিদ:, অন্ত মবং অন্তিদ:, দস্বার্ মবং দস্থিদ:।

२৯७। दिचिणा पश्चात् पुरो**ध्यस्त्रण्**।

দক্ষিণা, পশ্চাৎ, পুরস্, এই তিনের উত্তর ত্যাণ্ছয়, গ ইৎ, ত্য থাকে। যথা, दाचियात्यः, पासान्त्यः, पौरस्त्यः।

२৯८। धमेर क तिसल् तल्यस्त्यः।

অমা, ইহ, ক্ল, এবং তদিল্ও তল্প্রভায়ান্ত, ইহাদের উত্তর ভা হয়। যথা, অসালাঃ, হুল্লাঃ, ক্লালাঃ; তদিল্প্রভায়ান্ত—ননক্ষঃ, অনক্ষঃ, জুনক্ষঃ; তল্প্রভায়ান্ত—নলালাঃ, আঁলালাঃ, ক্লালাঃ।

२৯৫। किमियचनौ विभक्तान्तात्।

विञ्रकारु किम्भाक्त उठित हि॰ ७ हन इत्। यथी, कवित् कश्चित्, केनचित्, कस्त्रीचित्, कस्त्राञ्चित्, कस्त्रचित्, कस्तिस्तित्, कतिस्ति, काचित्, क्रात्रचित्, कश्चन, किञ्चन, कञ्चन, क्रात्यन, कचन, क्रात्रचन।

२৯७। समुस्तियोगेऽस्ततङ्गावे चि:।

কৃ, জু, অস্ ধাতুর যোগে, অজুততভাব (১৭) অর্থে, প্রাতি-. পদিকের উত্তর চি, হয়, চির সমুদ্র ইৎ, কিছুই থাকে না।

२৯१। दौषीज्यः।

অভূততদ্বাব অর্থে প্রতায় হইলে, প্রাতিপদিকের অন্তব্ধিত হুর বর দার্ম হয়। যথা, অবদু বদু ক্রানি বদুক্রানি, অবদুর্বদুঃ সবনি বদুশ্বনি, অবদুর্বদুঃ স্থাব্, বদুস্থাব্।

२৯४। दूरवर्षस्य।

শ্বজুততদ্বাব অর্থে প্রতার হইলে, প্রাতিপদিকের অক্স্থিত অবর্ণ স্থানে ঈ হয়। যথা, আগুলা মুক্তা নহানি মুক্তা নহানি, আমুক্তা মুক্তা শবনি মুক্তা শবনি, অমুক্তা মুক্তা ন্দোব্যক্তান্তান্ত।

⁽২৭) অভূতের ডভাব, অর্থাৎ যে যেরূপ না থাকে, ভাহার দেরূপ হওয়া; যেমন, যে বন্ত শুক্ক না থাকে, ভাহার শুক্ক হওয়া।

१৯৯। इस्तो री:।

অভূততভাব অর্থে প্রত্যয় হইলে, প্রাতিপদিকের অন্তন্থিত থকার স্থানে রী হয়। যথা, অস্মানাত স্থানাত কটোনি স্থানীকটানি, স্থানীধবনি, স্থানীজ্ঞান।

७००। लोपोऽवसादेरम्यस्य।

याक्ष्ठिष्ठांत यार्थ প्रकात श्रहेल, याक्ष्म, मन्म, हक्ष्म, हिक्म, द्रश्म, द्रष्म, हेश्मित यार्थ, व्यक्ष दार्थ, व्यक्ष स्वाति, व्यक्ष स्वाति, विमनीकरोति, विमनीभवति, विमनीस्थात्; विमनीकरोति, विमनीभवति, विमनीस्थात्; व्यक्ष करोति, व्यक्ष स्वात्; स्वेतोकरोति, स्वेतीस्थात्; विरस्तीकरोति, विरस्तीस्थात्, विरस्तीस्थात्, विरस्तीस्थात्।

७०)। विभाषा सातिच् कारस्त्री।

कांवर्मा (၁৮) तूसांशत, अज्ञुष्ठकात अर्थ, कृ, जु, अम् थांतूत वार्षात विकल्म माजित् रहा, के हेव, मांव थांत्व । यथा, कत्सं नवणं ननं करोति जनमात् करोति, कत्सं नवणं ननं भवित जनमात् निर्मा कर्मात जनमात् निर्मा कर्मात करोति, कर्मा नवणं ननं स्थात् नवणं ननं स्थात् करोति, भक्षासाद् निर्मा क्योत् । अर्थः हिन् । यथा, जनोकरोति, भक्षास्वति, भक्षास्वति,

७०२। धांभविधी सम्पदा च।

অভিবিধি(৩৯) বুঝাইলে, অজুততভাব অর্থে, তৃ, ভূ, অস্, ও সদ্-পূর্বক পদ্ ধাতুর যোগে, বিকণ্পে সাতিচ্ হয়। যথা, অনিবার

⁽১৮) एकश्चा व्यक्तेः सर्वावयवावच्छेरेनान्ययाभावः कार्त्स्यम् । (১৯) बह्ननां व्यक्तीनां किञ्चिर्वयवावच्छेरेनान्ययाभावः व्यक्तिश्विः।

करोति, चिनिसाङ्गवाति, चिनिसात् स्थात्, चिनिसात् सम्यद्यते। शत्कि हि,। यथा, क्यनीकरोति, खम्नीभवति, सम्मीस्थात्, क्यनी-सम्यद्यते।

७०७। स्वीनतायाञ्च।

अधीन अर्थि इत् । यथा, राज्ञो अधीनं करोति राजसात् करोति, राज्ञोऽधीनं भवति राजसाङ्गवति, राज्ञोऽधीनं खात् राजसात् खात्, राज्ञोऽधीनं सम्मद्यते राजसात् सम्मद्यते । श्रद्भ वि । यथा, राज्ञोकरोति, राज्ञीभवति, राज्ञीस्यात्, राज्ञीसम्मद्यते ।

७०८। देये ताच्चां

प्तत्र तृत्वाहेत्त, कृ, खृ, खम्, ७ मम्भृत्वक भम् थांजूद वांता, मांजिह्
७ जांह्र इत्र, ह हे६, जा थांत्क। यथी, बाह्माणाय देयं करोति
बाह्माणसात् करोति, बाह्माणला करोति; बाह्माणसाद्भवित,
बाह्माणला भवितः, बाह्माणसात् स्थात्, बाह्माणला स्थात्,
बाह्माणसात् सम्मदाते, बाह्माणला सम्मदाते।

७०৫। ऋजा दितीयादे: ऋषी डाच्।

कृथांजूत र्यारा, विशिष्ठी , पृशीष्ठ, नम्म, तोक्ष, এই मकन श्रीष्ठिशिष्ठ के कहा, कर्मन व्यर्थ, षाठ् इह, ष ठ हे ९, व्या थारक । यथा,
दितीया करोति. हतीया करोति ; दितीयं हतीयं कर्मणं करोति
इत्यं ; मन्या करोति व्यत्त नो सक्ष्यं कर्मती व्यवः ;
वीका करोति, वीजेन सह कर्मती व्यवः ।

७०७। संखावीच गुणान्ताया:।

প্রণশন অস্তে থাকিলে, সংখ্যাবাচক শনের উত্তর, পৃধাতুষোগে, কর্মণ অর্থে, ডাচ্হয়। যথা, হিন্তবাদাহীনি নিত্তবাদাহীনি জনম, হিন্তবা নিত্তবা কর্মনীলেই:।

७०१। समयाच्च वापनावास्।

यांश्रम तुकारेल, मगर मास्कृत छेत्त छात् १ हा। यथा, समया-करोति, समयं यापवतीत्वर्थः।

७०৮। सपत निष्यताभ्यां व्यथने ।

वाशन अर्थ, नलज, निष्मेज, এই मूरे প্রাতিপদিকের উত্তর ডাচ্ इर। यथी, समलाकरोति च्छम व्याधः, समलं सरम् अस्य सरीरे प्रवेशयम् व्याययतीत्यर्थः, निष्मताकरोति, सरीरात् सरम् समरपार्थे निष्कृतमयन् व्याययतीत्यर्थः।

७० । निष्कुलाविष्कोष्ट्रणे।

निष्कारण (८०) अर्थ, निस्कृत, এই প্রাতিপদিকের উত্তর ডাচ্ इत्र। यथी, निष्मुबाकरोति दाङ्गिम्, दाङ्गिस्य चन्तरवयवान् विहिनिःसारवतीत्वर्थः।

७५०। सुख प्रियाभ्यामानुनोस्ये।

व्यानुलागा व्यर्थ, मूथ, श्रिष्ठ, এই দুই প্রাতিপদিকের উত্তর ডাচ্

हरः। यथा, सुखाकरोति प्रियाकरोति निम्नम्, चातुकू वाचरणेन
व्यानन्दयतीलार्थः।

७১১। इ:खात् प्रातिलोस्ये।

প্রাতিলোম্য বুঝাইলে, দু:খ, এই প্রাতিপদিকের উত্তর ডাচ্ছর। यथी, दु:खाकरोति खत्यः, खानिनं पीड्यतीस्तर्थः।

७১२ । न्यूबात् पाके।

পাক অর্থে, শুল, এই প্রাতিপদিকের উত্তর ভাচ্ত্যা। যথা, শুরাক্যানি নাল্যু, শুরুদ দ্বনীক্ষ্যা।

(8 ·) কোষ হইতে বহিষ্কর্ণ।

७১७। सत्यादशपये।

শপথ ভিন্ন অর্থে, সত্য, এই প্রাতিপদিকের উত্তর ডাচ্ হয়। যথা, सत्याकरोति भार्क्ड विकक्, क्रेतव्यमिति प्रतिजानीते दत्यधः।

७५८। सद्भात् परिवापणे।

মুখন অর্থে, মৃদুশব্দের উত্তর ডাচ্হর। যথা, सद्राकारोति, साङ्गल्यं स्वराखनं करोतीलार्थः।

স্ত্রীপ্রত্যয়

५ स्वियाम्।

এই প্রকরণে যে সকল কার্য্য বিহিত হইতেছে, তাথা ব্রালিক্ষে বৃথিতে হইবেক।

२। बदन्तादाप।

चकातास প्राणिभिनित्कत उँ छत चार्थ् रह, भ रेष, चा थांति ।
स्थां, कम कमा, दोन दोना, मिलन मिलना, कमण कमणा,
क्रिट क्रिटा, सरल सरला, प्रवल प्रवला, चचल चचला, निषुण निषुणा, चतर चतरा, तरल तरला, चमल चमला, दिचिण दिचिणा, उत्तर उत्तरा, पूर्व पूर्वा, पश्चिम पश्चिमा, प्रथम प्रथमा, दितीय दितीया, हतीय हतीया, चालकूल चालकूला, प्रतिकृत प्रतिकृत्वा, मनोहर मनोहरा।

ू ७। जापि अत्यवकात् पूर्व्यस्थात दृत्।

আপ্ इटेल, প্রত্যয়ক গারের পূর্বর বি অকারের স্থানে ইকার इয়। যথা, नायक नायिका, पाचक पाचिका, नाटक नाटिका, पाचक पाचिका, कारक कारिका, बोधक बोधिका, साधक साधिका, बाचक बाचिका।

8 ं नाष्ट्रकादेः।

অফীকা প্রভৃতির ককারের পূর্ববর্তী অকারের স্থানে ইকার হয় না। যথা, অভনা, হুভনা, কন্মনা, কহনা, ব্যকা, নাহনা, অধিন্যানা, ভদমানা।

१ र्प् गौराहिकः।

গৌর প্রভৃতি অকারাম্ভ প্রাতিপদিকের উত্তর ঈপ্ হয়, প ইৎ, ঈ থাকে।

७। दूपि लोपोऽवर्णस्य।

क्रिश् हहेल, श्रेष्ठिशिविष्ठत अवस्थि अवस्थित लाश हत । यथा, गौर गौरी, कुमार कमारी, कियोर कियोरी, सुन्दर सुन्दरी, तह्य तह्यी, पितामह पितामही, मातामह मातामही, नद नदी, तट तटी, नट नटी, पट पटी, कदन कदनी, स्थन, स्थनी, कान कानी, नाम नामो, मयुन्त मयुन्ती, सस्नुक सस्नुकी, नेतस -वेतसी, खतस खतसी, खामनक खामनकी, द्वाय द्वायी, द्रोय द्रोयी, बदर वटरी, कदर कदरी।

१। जाती जातेरदन्तादीप्।

अि तूसिंग्ल, अिविशि क्रवातां शिंकिनित्त छैं हत में भू रत्न। यथी, सिंह सिंही, व्याच्च व्याची, भूजून भुजूनी, खग खगी, हरिय हरियी, तर्फ तर्फ्नी, गृहंभ गृहंभी, शूनर शूनरी, तुनुर तुनुरी, नम्बुन नम्बुनी, खगान स्मानी, विद्वात विद्वाती, घोटन घोटनी, महिन महिनी, हंग हंगी, सारस सारसी, चक्रवान चक्रवानी, मात्रुन मात्रुनी, बाच्चाय बाच्चायी, गोप गोपी, चयुन्त चयुन्ती, विद्याच पिद्याची, राज्यस राज्यी, निद्याचर निद्याचरी।

४। नाजादेः।

क्रांडिंदांशित मर्था, अक्ष প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর ঈপ্ হর না।
यथा, खज खजा, को किल को किला, चटक चटका, अश्व खश्चा,
मूषिक मूषिका, एक्रक एक्रिका, बाल बाला, वस वसा, क्येष्ट ख्योचा, कनिल का निला, मूट्र मुद्रा। महश्यक পূর্বে থাকিলে ইয়।
यथा, महामूद्री।

৯। न योपधान्नवयादिवज्जीत्।

যে সকল জাতিবাচী প্রাতিপদিকের উপধাস্থলে য থাকে, তাহাদের উত্তর ঈপ্ হর না। যথা, বীষ্দ্র বীষ্দ্রা। গবর, হর, মুকর, মংস্যা, মনুষ্যা, ইহাদের উত্তর হয়। যথা, সাব্যী স্থানী ক্রন্যা।

५०। जोपो मत्समनुष्ययोवस्य ।

ক্লপু হইলে, মৎস্ত মনুষ্য শকের ঘলোপ হয়। ষ্থা, सञ्ची सञ्ज्यो।

४५ । ऋदन्तादीप्।

श्रकातास প্রাতিপদিকের উত্তর ঈপ্ত্য। মথা, दाह दाली धाह धाली, कर्नृ कली, जनविह जनविली, प्रस्विह प्रस्विली।

११ न खस्रा देः।

श्रकांतास्त्रत्र मध्य, सम् প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর ঈপ্ হর না।
यथा, स्तरा, माता, दृष्टिता, याता, नमान्दा, तिस्रः, चतस्रः।

५०। नान्तादीप।

नकातांख श्रीजिशिवादित छेठत हैश्र रहा यथी, कासिन् क्वामिनी, मानिन् मानिनी, मायाविन् मायाविनी, भेधाविन् सेधाविनी, तपिख्नकृतपिख्वनी, विखासिन् विज्ञासिनी, श्रीध-कारिन् व्यिधकारियी, खतुगामिन् खतुगामिनी, जपकारिन् जपकारियी, खतुरागिन् खतुरागियी, प्रिवेदादिन् प्रिय-वादिनी, सनोद्वारिन् सनोद्वारियी।

५८। उपधाया लोपोऽन:।

ঈপ্ হইলে, অন্ভাগান্ত প্রাতিপদিকের উপধার লোপ হয়। যথা, যোলন্ যালী। উপধা মসংযুক্ত অথবা বসংযুক্ত বর্ণে মিলিত থাকিলে হয় না।

১৫ । **न संखा**याः।

নকারান্তের মধ্যে, সংখ্যাবাচী প্রাতিপদিকের উত্তর ঈপ্ হয় না। ষ্থা, দল্প, স্বয়, অন্ত, নৰ, হয়।

५७। न मनन्तात्।

নকারাত্তের মধ্যে, মন্ভাগান্ত প্রাতিপদিকের উত্তর ঈপ্ হয় না।
যথা, सोमा, पामा, सुटामा, অনিদল্লিলা।

५१। नाननाइस्त्रवीही।

বছব্রীহি সমাস হইলে, অন্ভাগান্ত প্রাতিপদিকের উত্তর ঈপ্ হয় না। যথা, বহুনি ধন্মফ্রা দল্যান্মি বস্তুদল্য বিজ্যাহাটে ।

१५। विभाषा डाप्।

বছব্রীথি সমাস হইলে. অন্ভাগান্ত প্রাতিপদিকের উত্তর বিকপ্পে ডাপ্হর, ড প্ইং, আ থাকে। ঘথা, বস্তুদর্জা, বস্তুদর্জী, বস্তু-দর্জাঃ; পক্ষে, বস্তুদর্জা, বস্তুদর্জাজী, বস্তুদর্জাজঃ।

১৯। ईप् चोपधा बोपिनो वा।

ध मकन जनस প্রাতিপদিকের উপধার লোপ হইতে পারে, বছুব্রী হি মুমাস হইলে, তাহাদের উত্তর বিকম্পে ভাপ ও ঈপ্ হর। যথা, বস্তুব: सन्स्वत राजान: वस्त्रराजा, वस्त्रराजो, वस्त्र-राजाः, वस्त्रराजो, वस्त्रराज्ञी, वस्त्रराज्ञाः; পাকে, वस्त्रराजा, वस्त्रराजानी, वस्त्रराजानः।

२०। बुबत्यादय:।

যুবতি প্ৰভৃতি নিপাতনে নিদ্ধ হয়। যথা, युवन् युवतिः, युवती, यूनी; स्वन् ग्रानी; सघवन् सघोनी, सघवती।

२५। उहद्ग्रामीप्।

खेकारत ९ श्रकारत १ श्रेष्ठारात रगार निष्ण श्री श्रिष्ठ हित ते हैं है है । यथा, जेकारत — भवत भवती, द्रयत द्रयती, किवत कियती, श्रीमत् श्रीमती, बुद्धिमत् बुद्धिमती, प्रस्नवत् प्रस्नवती, बज्जावत् बज्जावती, बजवत् वजवती, प्रभावत् प्रभावती, कातवत् कतवती, प्रेयस् प्रयसी, श्रेयस् श्रेयसी, गरीयस् गरीयसी, खघी-यस् बघीयसी, कनीयस् कनीयसी। श्रेष्ठारत — सत् सती, क्दत् करती, ग्रेष्ट्यत् श्रूष्ट्यती, दिषत् द्विषती, विश्वत् विश्वती, क्ष्यंत् कृष्टिती, ज्ञानत् जानती।

१२ । शतुनुन् भ्र दिवादिभ्याम् ।

क्रेश् रहेल, ज्ञांनि ও निर्वानि शंशेत शांजूत उँवत विश्व गंजू-প্রভাব ज्ञांन नुम् रह, उँ न हेर, न थांति, न शूर्ववर्ती रहेता कलादि शिलिङ रह। यथा, ज्ञांनिशंशीत—धावत् धावनी, गच्छत् गच्छनी, पतत् पतनी, तिष्ठत् तिष्ठनी, चचत् चचनी, पद्यत् पद्यनी, कारयत् कारयनो, खारयत् स्नारयनी, स्थापयत् स्थापयनी, पाखयत् पाचयनी। निरांनिशंशीत—दोव्यत् दीव्यनी, नद्यत् नद्यनी, कात्यत् कात्यत् कात्यनी, जीर्यत् नीर्यनी, सञ्चत् सञ्चनी।

२७। वा तुहाहै:।

जूमां जिश्वी रियंत खेटत बिकल्पा। यथा, ह्यदत् ह्यदनी, ह्यदती; रक्यत् रक्यनी, रक्यती; एक्यत् एक्यनी, एक्यती; सम्मत् स्वमनी, स्वमती; सिञ्चत् सिञ्चनी, सिञ्चती।

२८। चहा देरादनात्।

अमिनिश्गीत आंकांतांत्स्वत छेउत विकाला। यथी, यात् यानी, याती; मात् मानी, माती; भात् भानी, भाती; स्नात् स्नानी, स्नाती।

२८। विभाषा स्वतु:।

में भ्रहरत, माज्ञे जात्र होता विकाल नृत् रहा। यथी, भविष्यत् भविष्यती; मिष्यती; करिष्यत् करिष्यती, करिष्यती; दाखत् हास्यती, वास्यती।

२७। टित् विद्वामीप्।

हेकादि ९ विकादि ९ श्रुडा द्वारा निक्षम श्री जिलि निक्र उहत है श्रु हत । यथी, हेकादि १ श्रुडा निक्षम — गायन गायनी, कर्म कर कर्म करी, वर्षकर वर्षकरी, यगकार यगकारी, निमाचर निमाचरी, भयकार भयकारी, चत्र चत्र वर्षी, पञ्चम पञ्चमी, वह वही, सप्तम सप्तमी, कष्टम अष्टमी, नवम नवमी, द्यम दयमी, एकादय एकादमी, दारम दारगी, त्योदम त्योरमी, चत्र य वर्षि, वोड्म घोड़मी, द्वार दारगी, त्योदम त्योरमी, चत्र य वर्षि, वोड्म घोड़मी, द्वार द्वारगी, त्या व्याप्ती, चत्र य वर्षा वर्षी, वाड्म द्वामय द्वामयी, खर्णमय खर्णमयी, क्या व्याप्ती, द्वाप द्वामय द्वामयी, क्या व्याप्ती, व्याप्ती, व्याप्ती, मानव मानवी, वेष्णव वेष्णाची, द्रीपट द्रीपटी, पाञ्चाल पाञ्चाली, मानव मानवी, वेष्णव वेष्णाची, द्रीपट द्रीपटी, पाञ्चल पाञ्चाली, मानव मानवी, मेथिल मेथिली, पाञ्चल पाञ्चली, चात्र चात्ररी, माधुर माधुरी, भागिनेय भागिनेयी, पौन्न पौन्नी, दौहित दौहिती, देहण देहणी, वाहण ताहणी, वाहण वाहणी, क्रिय की हणी, क्रिय क्रिया वाहणी, वाहण वाहणी, वाहण वाहणी, क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया वाहणी, वाहण वाहणी, वाहण वाहणी, क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया वाहणी, वाहण वाहणी, वाहण वाहणी, क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया वाहणी, व्याप्ती, व्याप्ती, क्रिया क्र

२२१। दूषि लोप: व्याची चल:।

ইপ্ হইলে, হলবর্ণের পরবর্তী ষাণ্ প্রভায়ের লোপ হয়। **ব**খা,

गार्ग्य गार्गी, वात्स्य वात्सी, चागस्य खागसी, वाभव्य वास्त्री, भागड्य मागड्यी, मौद्गस्य मौद्रुती, कौगिड्न्य कौगिड्नी।

२৮। प्रागादेरीप्

প্রাচ্প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্র ঈপ্হর। যথা, प्राच्

२৯। प्रतीचादय:।

প্রতীচী প্রভৃতি নিপাতনে সিদ্ধ হয়। যথা, प्रत्यच् प्रतीची, प्रत्यच्ची ; ভटच् ভदीची, ভटच्ची ; तिर्थन् तिरसी, तिर्थच्ची।

७०। जातेरदन्ताज्जायायाम्।

अ। वार्य, अंिवाधी व्यकातां अधाि अमित्कत उँ हत के भ् रहा।
यथी, वास्त्राणस जाया वास्त्राणी, स्टूस्स जाया स्टूरी, गोपस्य जाया गोपी, गणकस जाया गणकी, नापितस्य स्वाया नाविती, निवादस्य जाया निवाटी।

७১। न पालकान्तात्।

পালক অন্তে থাকে, এরূপ জাতিবাচী অকারান্ত প্রাতিপদিকের উত্তর ঈপ্ হয় না। যথা, गोपालकस्य जाया गोपालिका, पशु-पालकस्य लाया पशुपालिका।

७२। भवादेरानीपी।

क्रांता অর্থে, ভব প্রভৃতি (৪১) প্রাতিপদিকের উত্তর আন্ ও ঈপ্ হয়। যথা, भवश नाया भवानी, सर्वेख नाया सर्वाणी, रद्ध जीया रद्राणी, च्डस नाया च्डांनी, इन्द्रस नार्या इन्द्राणी, वर्षास नाया वर्णानी।

(৪১) ভব, দর্জ, রুদু, মৃড়, ইন্দ্র, বরুণ, ব্রন্ধীন, মাতুল, ক্ষত্রিয়, অর্থ্য, উপাধ্যায়, আচার্য্য।

७७। नसोपो बह्यांगः।

আন্ হইলে, ব্রহ্মন্শব্দের নকারের লোপ হয়। যথা, **সন্ধার্থী** লাযা সন্ধার্থী।

७८। मातुलादान् विभाषा।

মাতুলশব্দের উত্তর বিকলপে আন্ হয়। যথা, सात्वस्य जाया सात्वानी सात्वी।

७ । वा चिन्त्रयादेरानीपौ।

ক্ষজ্ঞির প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর বিকণ্পে আন্ ও ঈপ্ ইয়। যথা, অক্সিযন্ত জাযা অক্সিযাথী অক্সিয়া, ব্যন্ত্র জাষা ব্যথাথী ব্যথা, ত্যাখ্যাযন্ত্র লায়া ত্যাখ্যাযানী ত্যা-খ্যাষা, ব্যাবার্থন্ত্র লায়া কাবার্যানী (৪২) ব্যাবার্যা।

७७। पर्यविशेषे हिमादे:।

অर्थिति गरित, श्यि, खत्ना, घर, घरन, धरे ठाति श्रीजिलिमित्कत् उत्वत्न निजा खान् ७ केल् इत्र । घथी, महत् हिमम् हिमानी, महत् अरखम् खरखानी, दृष्टो यवः यवानी,यवनानां विपिः यवनानी ।

७१। वा घोषादेरीप्।

त्मान প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর বিকম্পে ঈপ্হয়। यथा, मोयो मोया, चयुडी चयुडा, खराजी खराजा, कपयो कपया, कख्यायो कख्याया, पुरायो पुराया, उदारी उदारा, विकटी विकटा, विभाजी विमाजा, विसक्षटी विसक्षटा।

७৮। अवयवाहस्त्रवीही।

বহুব্রী হি সমাস হইলে, অবয়ববাচক প্রাতিপদিকের উত্তর বিকম্পে

केश्रा वर्षा, चन्द्रसखी चन्द्रसखा, सुनेगी सुनेगा, तास्त्र-नखी तास्त्रनखा।

৩৯। न संन्नावां नख सुखाध्याम्।

সৎজ্ঞা বুঝাইলে, নখ, মুখ, এই দুই অবয়ববাচক প্রাতিপদিকের উত্তর ঈপ্তর না। যথা, সুদ্দল্জা, गौरस्रखा।

80। न कोड़ा दे: i

ক্রোড় প্রভৃতি অবয়ববাচক প্রাতিপদিকের উত্তর ঈপ্তর না। যথা, सुक्रोडा, तोक्सखुरा, चारुसिखा, दीर्घसमा।

8) । न संयुक्तोपधादङ्गादिवच्यीत्।

रय मकल অवस्ववाहक প্রাতিপদিকের উপধাদ্দে मংযুক্ত বর্ণ থাকে, তাহাদের উত্তর ঈপূহর না। यथी, स्टमनेत्रा, चार्यास्प्रा, बोखिजङ्का। অঙ্গ প্রভৃতির উত্তর হয়। सथी, क्रमाङ्की क्रमाङ्का, स्टुगाली स्टुगाला, विस्वोधी विस्वोधा, को किवक्खी को किव-क्ष्या, कुन्ददनी कुन्ददना, चार्क्की चार्क्क्यों, दीर्घजङ्की दीर्घजङ्का, सत्युक्की सत्युक्का, तील्लास्टुक्की बीक्कास्टुक्का।

82। न द्यधिकखरावासिकोदरवर्ज्ञात्।

य मकल खबरविवाक প্রাতিপদিকে দুয়ের অধিক ধ্রবর্ণ থাকে, ভাহাদের উত্তর ঈপ্ছয় না। যথা, स्टगनयना, चन्द्रवद्ना, चास्-दश्चा, प्रयुज्ञधना, सोसरमा। নাসিকা ও উদরের উত্তর হয়। যথা, सङ्कनासिकी सङ्कनासिका, क्रशोदरी क्रशोदरा।

८७। न सह नञ् विद्यमानपूर्यात्।

नहै, तथ्, विमायान পূর্বে থাকিলে, অবয়ববাচক প্রাতিপদিকের উত্তর ঈপু হয় না। যথা, सकेशा, सकेशा, विदासानकेशा।

88। नित्यम् धसष्टेच नः।

বছব্রীহি স্যাস হইলে, উধস্শব্দের উত্র নিতা ঈপ্ত টিস্থানে

नं रहा। यथा, पीनमस्रा जधः पीनोक्षी, घटनदस्रा जघः घटोक्षी, दिविधमस्रा छधः दिविधोक्षी, स्वति स्वस्ना जधः स्वस्त्रुष्टी।

8द । दामहायनाभ्यां संख्याया:।

दछ्दीरि नमान घरेल, नर्थाविष्ठिक नास्त्र श्रविश्वी मामन्, हांत्रम्, এर मूरे প्राजिशिमित्व छेउत केश् इत। यथा, हे खद्या दानी हिटानी, तीख्यसा दानानि तिदानी, हावसा हायनी हिहायनी, तिहायणी, चतुर्हायणी गौः। हांत्रन्य वर्षाविष्ठ ना घरेल, केश् ६ वस्त्र हत ना। यथा, हिहायना, तिहायना, चतुर्हायना शासा।

8७। दूदनादिभाषा।

हेकातास প्राजिপनित्कत उठत विकल्प देश, घणा, खेखी खेखाः, राजी राजि, खानी खानिः, नटी नटिः, राती राजिः, रजनी रजनिः, यारी शारिः, वटी वटिः, सही खडिः, नपी कपिः, सनी सनिः, शकटी शकटिः।

89। नित्यं संख्:।

স্থিশব্দের নিতা। যথা, सखी।

८৮। न ते:।

क्टिপ্রত্যরনিষ্পন ইকারান্ত প্রতিপদিকের উত্তর ঈপ্তর না। যথা, गतिः, स्थितिः, জतिः, गतिः, गतिः, गतिः, युक्तिः, वुद्धिः।

८৯। वा धिक्त पद्धतिस्थाम्।

শক্তি ও শছতি শব্দের উত্তর বিকম্পে। যথা, মনী মন্ত্রি: (৪০), মন্ত্রনী মন্ত্রনি:।

৫०। पत्धुनी यन्नसंयोगे।

⁽৪৩) অব্র অর্থে।

যজ্ঞসংযোগ অর্থাৎ যজের ফলভাগিজ বুঝাইলে, পতি এই প্রাতিপদিকের উত্তর ঈপ্ও ইকারস্থানে ন হয়। যথা, ৰিছিল্ল দলী, ৰাছিভার্ভিনযক্ষজনালীলছি:। আনন্ধ দনিবিষন্, এ স্লে পতিশব্দের অর্থ অধিকারিণী, যজ্ফলভোক্ত্রী নহে, এজন্য ঈপ্ও ন হইল না।

৫১। सपत्नीप्रस्तय:।

मलक्नी প्रकृष्ठि गक निशांष्ठत्व मिक्व रहा। यथी, समानः प्रतिरखाः सपत्नी, एकः प्रतिरखाः एकपत्नी साध्नी, वीरः प्रतिरखाः वीर्पत्नी, एकः प्रतिरखाः एकपत्नी, भट्टः प्रतिरखाः भट्टपत्नी, पञ्च प्रतयोऽखाः पञ्चपत्नी द्रीपदी, प्रतिरक्ष्यखाः प्रतिवत्नी जीव-द्वर्णका, अन्तरक्षयखाः खन्ववेत्नी गर्भिणी।

(१२। पदो बद्धवीही।

বছব্রীহি সমাস হইলে, পদ্ এই প্রাতিপদিকের উত্তর ঈপ্ হয়।
যথা, द्वावस्थाः पदौ द्विपदो, लयोऽस्थाः पदः लिपदो, चत्रव्यदी,
बद्धपदी, খনपदी।

৫७। इतस्र।

वस्त्रीशिमभाम श्रेल, मध् এই প্রাতিপদিকের উত্তর ঈপ্ श्रः। वशः, सुदती, चाक्दती, सुश्चदती, कुन्हदती।

८८। पाणिग्टहीतात् पत्याम्।

পङ्मी अर्थ दूसाहरत, भाषिगृशीष्ठ गर्द्धत से हेत है स् इत । यथा, व्याचिन्द्र ही तो इस्राः पाचिन्द्र ही ती पत्नी ; अन्य के, पौचिन्द्र ही ता नारी।

৫৫। বা **ন্যানাবনাবুক্নান্।** গুণবাচক উকারান্ত প্রাতিপদিকের উত্তর বিকম্পে ঈপ**্**ষয়। যথা,

चंदी च्हुः, साध्वी साधुः, पट्टी पटुः, स्वी स्तः, सध्वी समुः, अब्दी ख्युः, साधी खादुः, दश्ची रहः। थळगरमत रह ना।

৫७। न संयुक्तोपधात्।

যে সকল গুণবাচক উকারান্ত প্রাতিপদিকের উপধাস্থলে সংযুক্ত বর্ণ থাকে, তাহাদের উত্তর ঈপ্হর না। যথা, দাবজু:।

৫१। नित्यमधिष्यनजुङ्गाम्।

অশিশুও অন্তুহ্ শব্দের উত্তর নিত্য ঈপ্ হয়। বথা, আমিস্বী, নান্যকো: মিয়ে হিলেফ :; অন্তুদ্ধী।

৫৮। चनड्वाही।

নিপাতনে সিদ্ধ।

७३। उदन्तादूप्।

উকারাস্ত প্রাতিপদিকের উত্র উপ**্হ**য়, প ইৎ, উ থাকে। যথা, কু**কু:, কার্:, ভালামু:, কার্ম**রু:, ল**ল্লানন্**:।

७०। नरज्जाहे:।

রজ্প্রভৃতি উকারাস্ত প্রাতিপদিকের উত্তর উপ্ছর না। যথা, হেজ্যুঃ, धेतुः, আংखुः, ছরুঃ, কমযুভ্রু, ক্রমণারুঃ, তুলদান্তঃ, অংঅর্থুঃ।

७५। विभाषा तन्वादे:।

তনু প্রভৃতি উকারান্ত প্রাতিপদিকের উত্তর বিকল্পে উপ্ছয়। যথা, নন্: বৃত্ত:, चञ्चः चञ्चः।

७२। खत्रु: खंग्रुरस्र।

य जुद्र मक्त बहारत निशांकरत बंधा रहा। यथा, ब्राइट्स जावा बन्हः।

५०। जरोरीपस्ये।

उपमा यूकारेल, छेढ़ এर প্রাভিপদিকের উত্তর উপ্হয়। वर्षा, रक्षो दवास्या जह रक्षोहः, करभाविवास्या जह कर-भोहः, करिकराविवास्या जह करिकरोहः।

७८। वामाहिपूळीच्च।

वांग প্রভৃতি শব্দের পরবর্তী উক্ত এই প্রাতিপদিকের উত্তর উপ্হল। যথা, बामोक्टः, सहितोक्टः, सहोक्टः, संहितोक्टः, चचयोक्टः, मफोक्टः।

मश्म ।

>। एकपदीभावः समासः।

দুই বা বহু পদের যে একপদীভাব, অ্থাৎ এক পদ হইয়া যাওয়া, তাহাকে সমাস বলে।

२। लुक् विभक्ते:।

সমাসের অন্তর্গত পদ সমুদয়ের বিভক্তির লোপ হয়।

७। नस्य लोपः पूर्वस्य ।

সমান হইলে, পূর্ব্ব পদের অন্তন্থিত নকারের লোপ হর।

8। परस्य खरे।

ষরবর্ণ পরে থাকিলে, পর পদের অন্তন্থিত নকারের লোপ ইয় (৪৪)।

৫। लोपोऽवसंवस्यो:।

(৪৪) কপ্প্রভার পরে থাকিলেও, পর প্রদের অস্তদ্থিত নকারের লোপ হইরা থাকে। স্বুর্বর্ণ পরে থাকিলে, অর্ব্ণ ও ইবর্ণের লোপ হয়।

७। अकारो नञो इलि।

হল্বর্ণ পরে থাকিলে, নঞের নঞের স্থানে অনু হয়।

१। अन्खरे।

স্বর্বর্ণ পরে থাকিলে, নঞের স্থানে অনু^হয়।

टेलीपो डिति।

ডকারেৎ প্রত্যয় পরে থাকিলে, টির লোপ হয়।

১। तेविधते:।

বিৎশতিশব্দের ডি এই ভাগের লোপ হয়।

५०। च्रखावन्ते गोस्त्रियावन्यार्थे।

যে স্থলে অন্য পদার্থের প্রতীতি হয়, তথায় অ**ন্ধন্থিত** গোশন ও ব্রীপ্রতায় হুম্ব হয়।

ऽऽ। स्त्री नेयसुन:।

ঈয়সুনের পরবর্তী স্ত্রীপ্রতায় হুম্ব হয় না।

५२। समासा: प्रातिपदिकानि ।

সমাস হইলে, সমস্ত ভাগ প্রাতিপদিক হয়, অর্থাৎ পুনরায় তাহা-দের উত্তর নৃতন বিভক্তি হয়।

১७। विशेष्य निष्मन्यार्थे।

যে স্থলে অন্য পদার্থের প্রতীতি হয়, তথায় সমস্ত ভাগ বিশেষ্য-লিক হয়।

58। नपुंसकैकवचने समाचारे।

সমাহার সমাস হইলে, সমস্ক ভাগ মপুৎসকলিক ও একবচনাস্ত হয়।

. ५८। पुंबङ्कावः सर्वनाम्नः।

সমাষে ব্রীলিঙ্গ সর্ধনামের পুংবদ্ধাব অর্থাৎ পুংলিজের ন্যায় আকার হয়।

১७। महतो महा विशेषे।

বিশেষ্য শব্দ পরে থাকিলে, মহৎশবস্থানে মহা হয় :

অব্যয়ীভাব সমাস।

५। स्रव्यवीभावः।

এই প্রকরণে যে সমাস বিধিত হইতেছে, তাহার নাম অব্যয়ীভাব।

२। नपुंसकमव्ययीभावे।

অব্যয়ীভাব সমাস হইলে, সমস্ত ভাগ নপুৎসকলিক হয়।

७। चदन्ताहिभक्तेरपञ्चस्या सः।

অকারাম্ভ অব্যারীভাবের পরবর্তী বিভক্তির স্থানে ম হয়, পঞ্চমীর স্থানে হয় না।

8। विभाषा त्यतीयासप्तस्योः।

তৃতীয়া ও সপ্তর্মা বিভক্তির স্থানে বিকল্পে।

८। जुक्परात्।

অকারান্ত ভিন্ন অব্যয়ীভাবের পরবর্ত্তী বিভক্তির লোপ হয়।

७। सुपाव्ययं समीपादौ।

मधील প্রভৃতি (६৫) অর্থে, সুবন্ত পদের সহিত অব্যারের সমাস হর। যথা, সমীল—ফল্পু समीपम् उपक्रम्, गङ्गायाः समी-पैम् उपगङ्गम्; অভাব-- विश्वस्थाभावः निर्विष्ठम्, मिलाकाणाम्

⁽८६) सनीप, खभाव, खत्ययः, खसस्रति, पश्चात्, योग्यः, वीद्याः, खनतिवृत्तिः, खालुपूर्व्यः, विभिक्तिः, साव्य्यः, यौगपद्यः, सामस्यः, सम्बद्धिः पर्यन्तं द्रत्यादि ।

सभावः निर्मेत्तिकम्; अज्ञय्य-'हमस्यात्ययः स्रितिहमम्, बाधाया स्रत्ययः स्रितिवाधम्; अग्रेश्टि-निट्रा सस्प्रिति न युक्यते स्रितिनिट्रम्, ग्रोकः सस्प्रिति न युक्यते स्रितिगिकम्; श्रेष्टि-र्थस्य पञ्चात् स्रतुर्थम्, ग्टहस्य पञ्चात् स्रतुर्थस्, ग्टहस्य पञ्चात् स्रतुग्टहम्; श्रिशा—हृपस्य योग्यम् स्रुतुरूपम्, कुलस्य योग्यम् स्रतुन्वम्; स्रिशा—हिनंदिनं प्रति प्रतिदिनम्, ग्टहं ग्रहं प्रति प्रतिग्टहम्; अनिज्ञिन् ग्रातिमनित्रस्य यथाग्रति, ज्ञानमनित्रस्य यथान् ज्ञानम्; आनुशृक्षा—क्रोहस्यानुप्रस्थाय स्रतुक्षानुप्रस्थाय स्रुतुक्षानुप्रस्थाय स्रतुक्षानुप्रस्थाय स्रति स

१। सह: सोऽकाले।

खराही छार नियास, नश्नकदात् म श्रः। वथा, निष्णा—हरः सहसं सहिदः योगेशका—चक्रेण युगपत् सचक्रम्; निक्ना— त्यामध्यपरित्वच्य सत्याम्; नश्कि—मद्राणां सचिद्धः समद्रम्; शर्याष्ठ—चित्रित्यत्यपर्यान्तमधीते सान्ति। कोन तूसोहित श्रः ना। वथा, सहपूर्वाह्मम्, सहापराह्मम्।

। याबद्वधारणे।

ख्यशांत्रभ यूकांकेत्व, मृतास्त्रतं महिल घांवर अवे मास्त्रतं मयाम क्या । वर्षा, यावद्वालं ब्राह्मणानामन्त्रयस्त्, यावन्त्रमलाणि सन्ति पञ्च षद्धा, तावत् सामन्त्रयस्त्रेत्वर्षः।

৯। विभाषा विश्वरादिः पञ्चस्या।

পঞ্চমান্ত পদের সহিত বহিস্প্রভৃতি (৪৬) শব্দের বিকম্পে সমাস হর। ষথা, বল্লিআমি আনাল্লি:, प्रागुष्यनं ভদৰনার্ দাক্।

(१७) विहर् प्राच्, खवाच् प्रत्युच्, खप्, परि द्रस्यादि ।

५०। बाङ् मर्यादाभिविध्यो:।

মহ্যাদা ও অভিবিধি (৪৭) বুঝাইলে, সুবন্ত পদের সহিত আঙ্ এই অব্যয়ের বিকশ্পে সমাস হয়। যথা, আঘাতনিয়ন্ত্রন্ত, আ पाटि चिपुन्नात्, हष्टो देवः; আদ্ধাरम्, আদুसारेश्यः, वशः कालिटासस्य।

५५। बच्चेणाभि प्रती चाभिसुख्ये।

আভিমুখ্য বুঝাইলে, লক্ষ্যবাচক সুবস্ত পদের সহিত অভি, প্রতি, এই দুই অব্যয়ের বিকণ্ণে সমাস হয়। যথা, অন্যাদিন, অদিনম্ অসি, সভ্যাঃ ঘননিং; দত্তদিন, অদিন দিনিঃ

১২। यस चायामसेनातु:।

शांहां दे दिया तूर्याः है, जाहां ते महिल खानू अहे खारायात विकाल्य ममान हर । यथा, खातुमङ्गम्, मङ्गाया खातु, वादाणासी ; मङ्गा-देख्यस्टमदेख्यीपविचाता द्रस्त्ययः।

১७। पारमध्यी वद्या।

वकास পদের मश्चि পার ও মধ্য শদের বিকশ্পে অবায়ীভাব সমাস হয়। यथा, ससद्ध्य पारं पारेससुद्रम्; गङ्गाया मध्यं मध्येगङ्गम्। নিপতিনে একারাগম হয়। পক্ষে ষষ্ঠীসমাস।

58। संख्या नदीभि: समाचारे।

ममाशत त्याहेता, ननीवांवक मृतस शामत महिल मश्यादांवाकक व्यादांशिक मधाम १३। घथी, तिस्त्यां मङ्गानां समाद्वारः ।
तिमङ्गम्, पञ्चनदम्, सप्तागोदायरम्।

১৫। धन्यपदार्थे च संन्नायाम्।

(१९) तेन बिना मर्योदा, तत्वस्तितोऽभिविधिः।

मरुका तुसाहेत्न, ए खना श्रमार्थ প्रजीवयान वहेत्न, निर्माटिक मृदेख श्राप्त खनावीकांत मयांम वस । व्रथा, जन्म गङ्गा यिकान् जन्मता गङ्गा यिकान् जन्मता गङ्गा विकान् जन्मता विकान् जन्मता विकान् जन्मता विकान् जन्मता विकान् विकान वि

১७। तिष्ठतुप्रस्तीनि।

অব্যয়ীভাব সমাদে, তিষ্ঠ প্ৰভৃতি (৪৮) শব্দ নিপাতনে সিদ্ধ ছয়। যথা, तिष्ठनि गावो यिद्यान् काचे टोहाय तिष्ट्राः, আয়াবিন यिद्यान् काचे गावो गोष्ठम् आयतीगवस्।

५१। शरहाहेरन्।

অব্যয়ীভাব দমাস হইলে, শরদ্ প্রভৃতি (৪৯) শব্দের উত্তর অন্ হয়, ন ইৎ, অ থাকে। যথা, ওদমহবেম্, দ্বিবিম্ম্, আছিন-ব্রম্, অন্তম্ম্।

४४। जराया जरस्।

अप्त इहेरल, अप्तांगक कोर्स अप्तर्ग हरा। यथी, उपलर्सन्।

५৯। सरनसोपग्रुने।

⁽८४) तिष्ठक्षु, वहद्यु, खायतीगवम्, खवेयवम्, खवेषुसम्, लून्यवम्, लूयमानयवम्, पृतयवस्, पूयमानयवम्, संहृतयवम्, संन्धियमाण्यवम्, संहृतयवम्, संन्धियमाण्यवम्, संन्धृतव्यम्, संन्धियमाण्यवम्, सम्भूषि, सम-प्रदाति, स्वमम् विषमम्, दःषमम्, निषमम्, खपसमम्, खायी-समम्, प्रोहम्, प्राप्तमम्, प्रार्थम्, प्रदासम्, प्रदासम्, प्रदासम्, प्रदासम्, प्रदासम्, प्रदासम्, प्रदासम्, अपरद्विण्यम्, सम्प्रति, खपस्रति,

^(8%) घरद्, विषाण्, स्ननस्, सनस्, उपानस्, दिव्, हिस-बत्, स्थिक्, बिद्दु, सद्, दिश्, दश्, विश्, चत्रर्, त्यदु, तदु, बदु, किवत्, जरा।

সর্জ্ঞদ ও উপশুন নিপাতনে সিদ্ধ হয়। বথা, কৌ মেঘ বিষেক্ত सरजसम्, शुनः सृतीपम् उपशुनस्।

२०। प्रति पर: समनुभ्योऽच्या:।

প্রতি, পরস্, সম্, অনু, ইংাদের পরবর্ত্তা অক্ষিশদের উত্তর অন रहा। यथा, प्रत्यचास, परोचास् समचास्**, अन्यचास्**।

चनन्तात्।

অন্ভাগান্ত শন্বে উত্র অনুহয়। ষথা, ভদহালান্ ক্রচ্যা-ताम, प्रत्यध्वम्।

२२ । वा**नपुंस**कात् ।

নপুৎসক অনভাগান্ত শব্দের উত্তর বিকল্পে: যথা, ভদবদ্মন্ उपचर्मा ।

२७। गिरि नदी पौर्णमास्यात्रहायणीभ्यः।

গিরি, নদী, পৌর্ণমাসী, ও আগ্রহায়ণীর উত্তর বিকল্পে অনু হয়। यथा, उपनिरम्, उपनिरि; उपनदम्, उपनदि; उपपौर्ध-मास्म, उपपौर्णमामि ; उपायहायग्रम्, उपायहायग्र।

२८। स्पर्धान्ताच्चापञ्चमात्।

পঞ্চ ভিন্ন সপর্শবর্ণান্ত শদের উত্তর বিকম্পে অন হয়। যথা, उपदृश्दम् उपदृशत्, खनुसमिधम् खनुसमित्।

२८। प्रतेष्रसः सप्तमीस्थात्।

প্রতিশব্দের পরবর্ত্তী দপ্তম্যর্থে বর্ত্তমান উরস্পব্দের উত্তর অন • इ.स. यथी, खर्सि प्रत्यूरसम्।

२७ । **चनुगवमायामे** ।

रैनर्घा दुवाहेत्न, चतुगवम्, এहे अन निर्शाटत निक रहा। यथा, गोः पदात् खतुगवस् ।

তৎপুরুষ সমাস।

५। तत्प्रवाः।

এই প্রকরণে দে সমাস বিহিত হইতেছে, তাহার নাম তৎপুরুষ।

२। परिवार्कतत्पृक्षे।

তৎপুরুষ সমাস হইলে, সমস্ত ভাগ পর পদের লিক প্রাপ্ত হয়।

। राताक्राचाः पुनांसः।

তৎপুরুষ সমাস হইলে, সমস্ত ভাগের অন্তদ্থিত রাত্র, অহু, ও অহ, পু৲লিক হয়।

8। रातं नपुंसकं संख्यापूर्व्वम्।

সংখ্যাবাচক শব্দ পূর্ব্বে থাকিলে, রাত্র নপুৎসক হয়।

৫। पुच्याद् :।

পুণ্যশব্দের পরবর্ত্তী অহ নপুৎসক হয়।

७। द्वितीया त्रितादिभि:।

िं अ अञ्चि मूर्य अपन्त महिल दिली वां से अपन्त मयाम हत। यथी, कर्ट चितः करियतः, दुःखमतीतः दुःखातीतः, कूपं पतितः कूपपिततः, खर्ह गतः करहगतः, तिहिनमत्यस्यः तिहिनात्यसः, सुखं माप्तः सुकं सुभुकः अवस्तुभुकः, सेदं विदान् वेदविदान् ।

१। खट्टा क्रेन कुत्यायाम्।

নিন্দা বুঝাইলে, ক্রপ্রভারনিষ্পন্ন সুবস্ত পেদের সহিত বিভীয়ান্ত শুটাশন্বের সমাস হয়। যথা, অনুষ্ম আছের: অনুষ্ছের;, ভর্মখ-দক্ষির মূলখাঃ। নিত্য সমাস।

भ। काला चत्यन्तसंयोगे।

ष्ठाम् म्रायां तूथाहित, मृतस्थ शानत् महिक विकीतास कानवाहक मृतस शानत मयां रहा। यथा, सहतं सुखम् सहत्तंस्यम्, मासं गम्यः मासगम्यः, वर्षे भोग्यः वर्षभोग्यः ; सहतं मासं वर्षे व्याप्य इत्यर्थः।

৯। ततीया पूर्जीदिभि:।

शृद्ध প্রভৃতি সুবন্ত পদের সহিত তৃতীয়ান্ত পদের সমাস হয়। यथा, मासेन पूर्व्यः मासपूर्व्यः, वर्षेण स्ववरः वर्षादरः, वाचा कन्तरः वाक्कात्रः, गुड़ेन मिन्नः गुड़िसन्नः, साचारेण ख्रुस्तः स्वाचार-ख्रुस्तः, घनेन स्वयः धनाष्टः, माता सहणी मात्रसहणी, पिता समः पित्रस्यनः।

১०। जनार्थैश्व।

উनार्थ मृतस्त अपन्त मिरु ज्जीवास अपनत मयाम हर: रथा, एकोन जनः एकोनः, विद्यया चीनः विद्याचीनः, श्रमेण रहितः समरहितः, गर्वेण सूद्यः गर्वस्थत्यः, स्रक्षेन विकतः स्रकृविकतः।

५५। कता कन्नकरणयोः।

১२। : चतुर्थी बिल हित सुकै: ।

मृतष्ठ रानि, रिष्ठ, ও সুখ শব्दित मरिष्ठ प्रपृष्ठीस्ठ পদের मयाम रहा। यथी, भूताय बितः भूतबितः, प्रस्नाय हितम् प्रस्नहितम्, धाले स्वयम् भारतस्वम्।

১৩। स्र्येनच।

অর্থশবের সহিত চতুর্থান্ত পদের সমাস হয়। সমস্ত ভাগ বিশেষ্যের লিঙ্গ প্রাপ্ত হয়। যথা, दिलार्घः स्त्रपः, दिलार्घा ববানুং, दिलार्घं पदः। নিত্য সমাস।

38 । विक्रति: प्रक्रत्या ताद्यें।

তাদর্থা বুঝাইলে, প্রকৃতিস্থলীয় সুবন্ত পদের সহিত বিকৃতিস্থলীয় চতুর্থান্ত পদের সমাস হয়। ষথা, লুবন্তভাষ হিংক্রে লুবন্তভা ভিংক্রেন্, যুদায় বাব যুদবাব।

५८। पञ्चमी भवादिभि:।

, छत প্রভৃতি সুবন্ত পদের সহিত পঞ্চমান্ত পদের সমাস হর। यथी,

व्याचात् भयम् व्याचभयम्, व्याचात् भीतः व्याचभीतः, व्याचात्
भीः व्याचभीः, व्याचात् भीतिः व्याचभीतिः, व्यच्चत् निर्नतः

व्यच्चितंतः, अधन्मीत् जुगुषुः अधन्मीजुगुषुः, सुखात् अपेतः
सुखापेतः, बन्यनात् स्ताः बन्यनस्ताः, र्षात् प्रतितः र्षपतितः,

तर्ङ्गात् अपन्याः तर्ङ्गापत्रसाः, विदेशात् सागतः विदेशागतः।

১७ । षष्टी समर्थेन ।

ममर्थ मृत्र श्राप्त महिल वकास श्राप्त ममाम रहा। यथी, मङ्गायाः जलम् गङ्गाललम्, तरोः लावा तक्ष्याया, खन्नेः मिखा खन्नि-मिखा, वायोः नेगः वायुनेगः, लखस्य प्रवाहः जलप्रवाहः, सुस्यः भोगः सुस्तर्भागः, प्रयशः पानं प्रयःपानम्, कन्यायाः दानं कन्या-दानम्, गवां दोहः गोदोहः, साद्यायाः भङ्गः साद्याभङ्गः, दशायाः खनः दशानः, स्त्रश्रंस उदयः स्त्रयोदियः, हष्टेः पातः हिष्पातः, शिरसः क्षेदः शिर्मेन्छेदः, गवां वधः गोवधः, पितः ग्दहं पितः ग्टह्म, रात्तः भवनं राजभवनम्, मनोः वचनं मतुवचनम्, व्यर्थस्य नाशः खर्थनाशः, कूपस्य उदनं कूपोदकम् ।

५१। न निर्द्वीरणे।

নির্দ্ধারণ অর্থে বিহিত ষ্ঠীর সমাস হয় না। যথা, **সনুত্যান্তা** অবলিয়ঃ সুহেঃ, গৰা জন্তা ৰক্ত নীয়ো।

১৮। न पूरणार्थै:।

পূরণার্থ পদের সহিত ষষ্ঠান্ত পদের সমাস হয় না। যথা, राज्ञां प्रचमः, प्रच्नयोः द्वितीयः, श्वातृषां हतीयः, शिखाणां चतुर्धः, काच्याणां पञ्चमः।

১৯। न गुणवाचिभि:।

धनवाठक श्राप्त महिल वकास श्राप्त मनाम रह ना। यथा, पटस् यौकारम्, कोकनदस्य लौहित्यम्, खाकाशस्य नीलिमा, द्राचायाः माधुर्यम्। कात्र द्राप्त रहा रहा। यथा, खर्यस्य गौरवम् खर्य-गौरवम्, बुद्धेः मान्यम् बृहिमान्यम्, खर्यस्य कार्यम् खर्यकार्यम्।

२०। न त्यप्रयोः।

তৃপ্তার্থ পদের সহিত ষষ্ঠান্ত পদের সমাস হর না। যথা, আর্ঘা হয়েং, দালানা ল্লুলিনেং, অল্লেফা আমিনং।

• २५ । न त्रजनाभ्यां याजकादिवर्ज्जम् ।

ভূচ্ ও অক প্রভারের থোগে নিষ্পান্ন শব্দের সহিত ষষ্ঠান্ত পদের সমাস হয় না। যথা, তেব্-লগন: হ্রেল, মুক্ত হোনা, दुःख्य হুলী; অক-সলালা দালক:, তুলাআা ইন্ট্রেল:, মানুআর্ ঘানকঃ। যাজকাদির হয়। যথা, সুরুষালক:, ইুণ্ডাকঃ, হাজ- परिचारकः, वेदाध्यापकः, सर्वोत्साह्नकः, देवस्तातकः, जल-परिषेचकः, भुवनभक्तां, हविहीता, सुख्यहीता, सुख्याहकः।

२२। सप्तमी घौएडाहिभि:।

শোগ প্রভৃতি (৫০) শব্দের সহিত সপ্তমান্ত পদের সমাস হয়।
যথা, दाने गोराखः दानगोराखः, ग्रास्ते प्रवीयाः ग्रास्त्रप्रवीयाः,
रखे परिष्ठतः रथापरिष्ठतः, क्रीड़ायां क्षण्रवः क्रीड़ाव्यवः,
कर्मास्त निप्रयाः कर्मानिपुषाः, आतमे ग्राष्कः आतपश्चकः।
स्थाल्यां पकः स्थालीपकः।

२७। क्रत्येक्षे।

श्वन दूर्याहरत, कृष्ण প্রজারনিষ্পন্ন শব্দের সহিত সপ্তমান্ত পদের সমাস হয়। যথা, मासे देशं मासदेशम् ऋषाम्, वर्षे परिशोध्यं वर्षपरिशोध्यम् ऋषम्।

२८। क्रेनाहोरात्रावयवा:।

क्-প্रভाয়নিষ্পন্ন শব্দের সহিত দিন ও রাত্রির অবয়ববোধক সপ্তমান্ত পদের সমাস হয়। যথা, पूर्व्याच्चे कर्त पूर्व्याच्चकतस्, चपराच्चे कतस् चपराच्चकतस्, पूर्व्वरात्ने कर्त पूर्व्वरात्नकतस्, चपररात्ने कतस् चपररात्नकतस्।

२८। कुत्सायां काकवाचिना।

निका तूबाइता, काकराठक जूतल गत्कत महिल मश्रमाल शाहत ममाम २३। वर्षा, तीचे नान इत तीचेनानः, तीचेनायसः, तीचेध्याद्धः, चननस्थित इत्यर्थः।

२७। पूर्व्यादिरेकदेशिनेकवचने।

⁽৫०) श्रीवटः धूर्त्तं, कितवः, प्रवीखः, संवीतः, प्रदुः, प्रविट्टतः, क्रम्यतः, चपकः नियुषः, सिद्धः, ग्रुष्कः, पकः देशानि ।

একবচনান্ত অবয়বীর সহিত পূর্ব্ব, অপর, অধর, উত্তর, ইহাদের সমাস হয়। যথা, पूर्व्य कायस्य पूर्व्यकायः, स्वपरकायः, स्वधर-कायः, उत्तरकायः। একবচন না হইলে হয় না। যথা, पूर्व्य कान्त्रायाम् सामन्त्रयस्त।

२१। चड्डं नपुंसकम्।

একবচনান্ত অবয়বীর সহিত ক্লীবলিক অর্দ্ধ শব্দের সমাস হয়।
যথা, आर्ट्स पिप्पाल्याः आर्ट्डिपाप्पाली। অন্য লিকে হয় না।
যথা, प्राप्तास्य आर्ट्डः। একবচন না হইলে হয় না। যথা, आर्ट्डि

२৮। काला: परिमाणिना।

পরিচ্ছেদ্রাচক পদের সহিত কালবাচক পদের সমাস হর। যথা, सासी जातस्य मासजातः, वर्षो स्टतस्य वर्षस्तः।

२ **। एक देश**वाचिना च।

একদেশবাচক পদের সহিত কালবাচক পদের সমাস হয়।

७०। बङ्गोऽङ्क एकदेशात्।

একদেশবাচক পদের পরবর্তী অহন্শনস্থানে অক হয়। যথা, पूर्वम् चह्नः पूर्व्वाह्वः, मध्यम् चह्नः मध्याह्नः, चपरम् चह्नः चपराह्वः, सायम् चह्नः सायाह्नः।

७५। राह्रेरन्।

প্রকদেশবাচক শব্দের পরবর্তী রাত্রিশব্দের উত্তর অন্ হয়, ন ইৎ, অ থাকে। য়থা, पूर्वे टालेः पूर्वे टालः, मध्यं टालेः मध्य-टालः, অपरं टालेः अपर्रालः।

৩২। विभाषा द्वितीय त्वतीय चतुर्ध तुर्व्याणि।

यकास व्यवस्तीत महिक विकीत, ज्ञीत, ठ्यूर्थ, ज्या, देशांपत विकल्प मयाम रत। यथा, दितीयं मिन्नायाः दितीयमिन्ना, स्तीयं मिन्नायाः चत्रयमिन्ना, व्रत्यं मिन्नायाः चत्रयमिन्ना, व्रथं मिन्नायाः चत्रयमिन्ना, व्रथं मिन्नायाः व्यवसिन्ना। श्राक्ष यक्षीमयामा। यथा, मिन्नायाः दितीयम् भिन्नादियम्, मिन्नाद्यम्, भिन्नाद्यम्, भिन्नाद्यम्, भिन्नाद्यम्,

७७। चलं चतुर्था पुंबञ्च।

চতুর্থান্ত পদের সহিত, অবান, এই অবায়ের সমাস ও চতুর্থান্ত ব্রীলিঙ্গ পদের পুংবদ্ধাব হয়। যথা, অব্ লীবিকাথী অবত্য-লীবিক:।

७८। चत्यादय: कान्तादौ द्वितीयया।

ক্রান্ত প্রভৃতি অর্থে, বিভীয়ান্ত পদের দহিত অতি প্রভৃতির সমাস ও ব্রীলিঙ্গ বিভীয়ান্ত পদের পুংবদ্ধাব হয়। যথা, অনিঙ্গাল: অনুদ্ স্থানিন্তুঃ, ভাষ্ণালী বিভাগ্ ভট্ন:।

७৫ । **च**वादय: कुष्टादी तृतीयया ।

কুষ্ট প্রভৃতি অর্থে, তৃতীয়ান্ত পদের সহিত অব প্রভৃতির সমাস ও ব্রীলিঙ্গ তৃতীয়ান্ত পদের পুংবঙাব হয়। যথা, অবঙ্গুছ: को कि-ব্রমা অবকীকিল:।

७७। पर्यादयो जानादौ चतुर्था।

প্লান প্রভৃতি অর্থে, চতুর্থান্ত পদের गश्चि পরি প্রভৃতির সমাস ও ব্রীলিক চতুর্থান্ত পদের পুংবভাব হয়। যথা, परिग्लानः অध्यय-नाय पर्योध्ययनः, परिग्लानः सेवाये परिसेवः।

७१। निरादयः कान्तादौ पश्चस्या।

ক্রান্ত প্রভৃতি অর্থে, পঞ্চমান্ত পদের সহিত নির্প্রভৃতির স্মাস

ও জ্রীলিক পঞ্চাত পদের পুংবদ্ধাব হয়। বথা, বিষ্ক্রাল: কীয়াক্রা: বিজ্ঞামিন কিল্যা: ভরিতু:।

७৮। सामिखयमी क्तेन।

क्ष्प्रेजाविष्णित्र मूरख शामत महिज मांगि ७ व्रवप्. এই দুই অरा-त्वत मर्गाम व्या। यथा, सामिकतम्, सानिविष्टितम्; खयङ्कतम्, खयन्द्रतम्।

७৯। नञ् सुपा।

मृदस् अपन्त मिट्ड नर्धन ममाम रहा। यथा, न बाह्यायाः स्वाः-द्यायाः, न मोघः स्वामोघः, न प्रियः स्वित्यः, न विक्रतः स्वित्वतः, न सिद्धः स्वसिद्धः, न सुखस् संसुखस् न दर्धनस्, स्वदर्धनस्, न स्पनस्थः स्वसुपनस्थः।

८०। दूषद्कता।

কুদন্ত ভিন্ন সুবন্ত পদের সহিত ঈষৎ এই অব্যানের সমাস হয়। ধথা, ইঘনোভাহাং, ইদনিজুলাং, ইদবিধনাং, ইদনালালিনাং।

85। आङीषदर्थे।

ঈষদর্থ বুঝাইলে, সুবন্ত পদের সহিত আঙ্ এই অব্যয়ের সমাস হয়। বথা, আদধুতা, আদিস্কুলা, আদাবভ্বা, আলীভিনা।

8र्। स्तरी पूजायास्।

প্রশংসা অর্থ বুঝাইলে, সুবন্ত পদের সহিত সু, অতি, এই দুই অব্যারের সমাস হয়। যথা, सुपृष्ठाः, सुनास्त्राणः; स्रतिस्टहः, स्रीतिदयासुः।

80 । दुनिन्दायाम्।

নিন্দা অর্থ বুঝাইলে, সুবস্ত পদের সহিত দুর এই অুব্যায়ের সমাস হর। যথা, ভুচ্জারন, ভুনীরি:, ভুত্তবিন্দ, ভুচ্মুছ্ম:।

८८। कु: पापार्थे

কুৎসিত অর্থ বুঝাইলে, সুবস্ত পদের সহিত কু-এই অব্যাদের সমাস হয়। যথা, ক্লনাস্থ্যায়াং, ক্লযুম্মাং, ক্**মন্ডান**ে।

8¢। <mark>भातुभिष्पपदानि</mark>।

धोजूर महिल खेललाहर (६८) मगोम व्या वर्था, ब्राम्यकारः, प्रभाकरः, निशाकरः, व्यासरः, जनचरः, पार्श्वचरः, शिनाशयः, सरस्विस्, पङ्कनस्, अख्डन , जनजः।
पानाः, सुनगः।

८७। उपसगीय।

धोजुद महिल जेशमर्गाद मयोग इया यथी, सम्-संस्करोति, संस्कारः, संस्कृत्यः दि-विजयते, विजयः, विजित्यः; स्विभ-स्वभिविञ्जति, सभिषेकः, स्वभिविच्यः; स्वा-स्वाभिते, स्वारक्यः, स्वारभ्यः।

81। जर्बादि चि डाचव।

ধাত্র সহিত, জাতী (৫২) প্রভৃতি শব্বের, এবং চি ও ডাচ্ প্রভারের, সমাস হয়। যথা, জাতী-জাতীবানি, জাতী-करवाम्, ভাতীক্রমঃ আবিদ্-আবিক্ষাতীনি, আবিজ্যিন, আবিক্ষান্তঃ, দাত্তম্পাত্তমূবনি, দাত্তমূবি:, দাত্তমূব। চি—

- (৫১) যে সকল সুবন্ত পদ প্রভৃতির পরবন্তী ধাতুর উত্তর কৃৎপ্রতায় বিহিত হয়, উহাদিগকে উপপৃদ বলে। ক্রন্ধানাহ:, এ স্থলে, ক্রন্ধান্, এই উপপদের সহিত ল ধাতুর সমাস হইয়া, ক্রন্ধান এইরূপ হইলে, স্বাব্দু হয়। এইরূপ সর্বাত্ত।
- (१२) ऊरी, उररी, खाविस्, प्राटुस् स्वभा, साहा, वबट्, वीवट् इत्वादि ।

खीकरोति, खीकारः, खोकत्यः भस्तीभवति, भस्तीभावः, भस्तीभूयः, अष्ट्र-प्रमयाकरोति, समयाकरणम्, समयाकत्यः, दुःखाकरोति, दुःखाकत्यः।

8b। **अनुकरणञ्चानितिपरम्**।

धीजूर मश्डि ञन्कर्वनमस्ति मयाम एतः। यथी, खात्करोति, खात्करणम्, खात्कृत्वः द्राङ्करोति, द्राङ्क्तिया, द्राङ्कत्वः। इंडिमक পर्ति थांकित्त रत्न स्था, खादिति कत्वा निषीयित, द्रामिति कत्वा पति।

४२। बादरानादरयो: सदसती।

यथोक्करम, आंतर ७ अनोतर अर्थ, थांजूर मिरे सत् ७ असत् भर्मा मिर्म रहा। यथी, सत्कारीति, सत्कारः, सत्काय ; ससत्-करोति, सासत्कारः, सत्काय ; ससत्-करोति, सासत्कारः

८०। चलम् भूषणे।

ভূষণ অর্থ বুঝাইলে, পাতুর সহিত অবস্থানের সমাস হয়। যথা, অবস্কুটানি, অবস্কুত্যান, অবস্কুলানা।

७)। अन्तरपरिग्रहे।

थाजूद महिल खन्तर्गत्कद मयोग हत। यथी, खन्तर्भवति, खन्त-भोवः, खन्तर्भूष। পदिश्रह अर्थि हत्त ना। यथी, खन्तर्हत्वा गतः, इतं परिख्ह्य गत दल्लेषः।

° ७२ । पुरोज्यवम् ।

थांजूत महिल पुरञ्ज् और व्यवास महिल समाम रहा। वर्षा, पुरस् करोति, पुरस्कारः, पुरस्कता।

৫७। चसम् व।

ধাতুর সহিত অংক্রন্থ এই অব্যয় শব্দের সমাস হয়। যথা, আংক্রকুজ্জনে, অংক্রক্রন্থ।

(१८) पक् च वदगत्ययः।

বদধাতুও গতার্থ ধাতুর সহিত কক্ক এই অব্যর শব্দের সমাস হয়। যথা, অক্ষেব্যুনি, অক্ষীহা; অক্ষমক্ষানি, অক্ষ্যানা; ক্ষমিয়ন্ত্রিমিন্দু:।

৫৫। धन्तर्श्वीतिर:।

वायधान यूक्षोहेत्ल, थांजूत महिल तिरस् এहे खरात मास्तर मयांज इत्र । यथा, तिरोभवति, तिरोभावः, तिरोभूत ।

(७। विभाषा क्रजा।

कृक्षां कूत महिल विकल्ला। वशा, तिर्कातः, तिरः सता।

८१। साचात्रधतीनि च।

কৃধাতুর সথিত साचास् (৫৩) প্রসূতি শব্দের বিকণ্পে সমাস হর। যথা, साचात्कत्य, साचात् कत्वा; नमस्कत्य, नमः कत्वा; वशेकत्य, वशेकत्वा; मिष्याकत्य, मिष्याकत्वा।

(৮। चनुपञ्चेष उर्सि मनसी।

कृथांजूत महिल चरित, मनित, এই দুই मश्रमास পদের বিকশ্পে भगम হয়। यथा, चरित्रक्षता, चरित काता, खोकस्तिव्यः। सनित्रक्षता, मनित काता, निश्चित्रक्षेत्रचः। উপশ্লেষ অর্থে হয় না। यथा, चरित्र चित्रता।

৫৯। अध्ये पदे निवचने च।

(६०) 'साचात्, निष्या, ननस्, प्राहुस्, खर्चे, वथे, खना, खद्दा, खष्यम्, श्रीतस्, खार्ट्स्, विक्सने, प्रमुखने रेकामि।

कृधांजूत मश्चि मध्ये, परे, निवचने, এই जिन मश्चमास शामत विकल्ण मनाम रहा। रथी, मध्येकता, मध्ये कता; परेकता, परे कता; निवचनेकता, निवचने कता। উপশ্লেষ অর্থে रहनी। यथी, मध्ये ग्रायिता, परे छता।

७०। नित्यं इस्ते पाणाबुपयनने ।

विवार অর্থ বুঝাইলে, কৃধাতুর সহিত हस्ते, पाया, এই দুই সপ্ত-মান্ত পাদের নিত্য সমাস হয়। যথা, हस्तेतला, पाया तिला, टार-कर्मा कलेलार्थः।

৩১। तत्म्बष: समानाधिकरणपद: कम्मधारय:।

যে তৎপুক্ষ সমাসে সমস্যমান পদ সকল সমানাধিকরণ, অর্থাৎ
বিশেষ্যবিশেষণভাবাপন্ন, অথবা অভেদ সমৃদ্ধে একার্থপ্রতিপাদক,
হর, উহাকে কদ্মিঘাবে বলে।

७२ । विशेषणां विशेष्येणा।

विरागरा अराम महिल विरागरा अराम रहा। यथी, नी सम् उत्साम नी लोत्सालम्, मितः प्रवाः मित्रप्रवाः, ज्ञाम् उदसम् उत्साम् नो लोत्सालम्, मितः प्रवाः मित्रप्रवाः, ज्ञाम् उदसम् उत्साम् अन्यः नवः पञ्चवः नवपञ्चवः, मधुरं वचनं मधुरवचनम्, नवम् अन्यः नवान्यम्, सर्वे लोकाः सर्वे लोकाः, विश्वे देवाः विश्व-देवाः, इतो बन्धः इत्वन्धः, सुर्धा चन्द्रनं सुर्धिचन्द्रनम्, नवः ज्ञास्यः नवज्ञलधरः, सन् पुरुषः सत्युरुषः, महान् देवः महादेवः, महान् वोरः महावीरः, प्रामः प्रकृषः प्रमपुरुषः, केवलः वैयाकरणः केवल्ववैयाकरणः, जरन् नेयायिकः जरन्नेयायिकः, सप्त स्वयः सप्तर्थयः, खष्टौ वसवः अष्टवसवः, नव यहाः नवयन्हाः।

७०। पुंवत् पूर्वे भाषितपुंस्कं कमीघारये।

कर्मधातस मयाम रहेल, छाविछ्लू रह (८८) ब्रोलिक लूर्स लामत लू रहार रहा। यथा, सुन्दरी महिला सुन्दरमहिला, क्षणा चसु-देशी कणानसदेशो, पानिका स्त्री पानकस्त्री, पञ्चमी कन्या पश्चमकन्या, सुकेशी भार्था सुकेशभार्था, बान्ह्राणी भार्था बान्ह्राणमार्था। छेल्थ्रज्ञास्त्रत रह ना। यथा, वामोद्धः भार्था वामोद्धभार्था।

७८। क्रीन नञ्बिश्रिटेनानञ्।

नक्ति स्थान स्थान अर्पत् महिल नक्ष्मा क्ष्या हा अर्था स्थान स्यान स्थान स्थान

७৫। वर्णी वर्णेन।

वर्गवांठक श्राप्त महिल दर्गवांठक श्राप्त मयाम हत्। घथा, नी बख स खोड्तिय नी बबोड्तिः, बोड्तिय स मन्बश्च बोड्तिमन्बः, मोतस स भववस मीतभववः।

७७। पूर्वीत्तरकालयो: तः।

পূর্বকাল ও উত্তরকাল বুঝাইলে, ক্রপ্রতায়ান্ত পদের সমাস হয়। ঘণা, पूर्व्य स्त्रातः पसादत्तुनिप्तः स्त्रातात्रुनिप्तः, यातायातः, যায়নীব্দিনः, दत्तापस्तुनम्, भुज्ञोद्गीर्णम्।

⁽৫৪) যে সকল শব্দ ক্সীলিক্ষ পুৎলিক্ষ উভয়ই হয়, তাহাদিগকে ভাষিতপুৎক্ষ বলে; যেমন, সুন্দর্শদ ব্রীলিক্ষ পুৎলিক্ষ উভয় হয়। যে সকল শব্দ নিভাব্রীলিক্ষ, উহাদিগকে ভাষিতপুৎক্ষ বলা যায় না। যেমন জী, লক্ষ্মী প্রভৃতি।

७१। उपमानानि साधनीयवचनै:

উপমান ও উপমের্রর সমানধর্মবোধক পদের সহিত উপমান-বাচক পদের সমাস হব। यथा, घन इत घ्यामः घनध्यामः, अर्थाव इत गमीरः अर्थवगमीरः, शैन इत उद्यातः शैनोद्धतः, अनल इत उज्यनः अनलोज्यनः, नवनीतमिव कोमसं नवनीतकोमनस्।

७৮। उपमेयानि व्यान्नादिभिः साधनाप्रयोगे।
व्यान প্রভৃতি (६६) উপমানবাচক পদের সহিত উপমের পদের
সমান হর। বথা, पुरुषो व्यान्न दव पुरुषव्यान्नः पुरुषः सिंह
दव पुरुषिंहः, राजा चन्द्र दव राजचन्द्रः, सुखं कमत्वम् दव
सुखकमत्त्रम्, करः किसलयिन करिकसल्थम्, अधरः पञ्चव दव
स्थरपञ्चवः, वदनं सुधाकर दव वदनसुधाकरः। উপমান
ও উপমেরের সামান্য ধর্মের প্ররোগ থাকিলে হর না। হথা,
प्रदेषो व्यान दव म्हरः, सुखं समलनिव सन्दरम्।

৯৯। স্বীআহেম: জনাহিশিব্দুনেনব্লারী। অভূতভদ্ধার অর্থ রুঝাইলে, জন প্রভৃতি (৫৬) শব্দের সহিত স্বীআ প্রভৃতি (৫৭) শব্দের সমাস হয়। যথা, অস্বীআফা স্বীআফা

⁽ee) व्याम्न, सिंह, ऋच, ऋषभ, दृष, दृष, वराह, सञ्चर, चन्द्र, कमच, किसवय इत्यादि।

⁽६७) कत, मित, मत, भूत, उक्त, युक्त, समात्तात, समा-स्नात, समाख्यात, सम्भावित, संसेवित, स्वयभारित, स्वयकित्यत, निराक्तत, उपक्रत, उपाक्षत, इष्ट, फवित, दवित, उदास्त्, विस्तुत, उदित।

⁽६९) श्रीचा, पूग, सकुन्द, राशि, निचय विशेष, विधान, पर, इन्द्र, देव, सच्छ, भूत, प्रवस्त, वदान्य, अध्यापक, स्विध-

कताः त्रेषिकताः, खपूनाः पूनाः कताः पूनकताः, खराधयः राधयः कताः राधिकताः, अत्रेषयः त्रेषयो भूताः त्रेषिभूताः, खनिष्ठणा निष्ठणा भूताः निष्ठणभूताः, खक्कप्रचाः कुष्रचा भूताः कुष्रचभूताः (८৮)।

१०। संख्यापूर्व्यो हिंगु:।

ধে কর্মধাররে পূর্ব্রপদন্থলে সংখ্যাবাচক শব্দ থাকে, উহাকে দ্বিদ্য বলে।

१५। तिख्वतार्थीत्तरपद समाहारेषु।

তদ্ধিতার্থে, উত্তরপদ পরে, ও সমাহার বুঝাইলে, দ্বিন্যু সমাস হয়।
যথা, তদ্ধিতার্থে—पञ्चभिनौभिः क्षीतः पञ्चरः; ; উত্তরপদ পরে—
पञ्च স্থলাः प्रमाणमस्य पञ्चम्खप्रमाणः। প্রমাণশদ্ধ উত্তর পদ
পরে, पञ्च ও স্থলাः, এই দূই পদের দ্বিপ্ত সমাস হইল।

१२। अदन्तादीप् समाहारे।

नमाशत दिशे हरेल, अकातांख मास्तत उत्तत हैप् हत। यथा, त्रवाचां जोनानां समाहारः त्रिजोती, चतुर्यां पदानां समाहारः चतुष्पदी, पञ्चानां नजानां समाहारः पञ्चनजी, सप्तानां सतानां समाहारः सप्तमती।

१७। न भुवनादेः।

भुवन প্রভৃতির উত্তর ইম্ হর না। যথা, स्वयायां भुवनानां समा-

रूपक, बास्त्रांण, चित्रिय, विधिष्ट, पटु, पिएडत, कुग्रस, चपस, निष्ठण, क्रमण।

(६४) वृिপ्रভाव वहेटल उचित्रक्षन कार्या मधूनव्र इह। वथा, नेबीलतः, पूर्णीकतः, राघीलतः, नेब्रीभूतः, निपुचीसूतः, राघीभूतः, कुम्बीभूतः इत्यादि। ह्राटः विभुवनस्, चतुर्णा युगानां समाहारः चतुर्यमम्, पञ्चानां पात्रार्णां समाहारः पञ्चपात्रस्।

18। सयूरव्यंसकादयः।

मयूरव्यंसक প্রসৃতি निश्वांत्रत निश्व रहा यथा, मयूरो व्यंसकः मयूरव्यंसकः, उदक् च अवाक् च उञ्चावचम्, नास्ति किञ्चन यस्य अकिञ्चनः, नास्ति क्रतोऽपि भयं यस्य अक्रतोभयः, अन्योऽष्यः स्वर्षान्तरम्, अन्यो देशः देशान्तरम्।

१८। चाखातमाखातेन कियासातस्ये।

मिंड क्रियांत अनुष्ठीन तूत्रा हैलि, आंशांड পদের मिंड आंशां-তের সমাস হয়। পদ নিপতিনৈ मिक्त। धंथी, खन्नीत पिवत दुलेबं सततमभिधीयते यखां कियायां सा खन्नीतपिवता, पचत-भुझता, खादतमोदता, खादताचमता।

१७। सर्वे पुरव संख्याव्ययेभ्यो रातेरन्।

मर्ख, भूगा, मःशाविष्ठिक, ও অবার শব্দের পরবর্তী রাত্তিশব্দের উত্তর অনু হর। यथी, सर्व्यो रातिः सर्वेरातः, पुख्या रातिः पुरस्तरातः, दिरातम्, तिरातम्, पञ्चरातम्, द्रशरातम्, स्वित-रातः।

.११। यक्कोऽक्कव।

मर्ख, श्रृण, मर्थावाठक, ७ व्यादात श्रृत्वी खहन् गामत छैठत खन् ७ व्यान्यात सङ्ख्य । घथा, सर्वमहः सर्वोद्धः, द्वयोरह्योः भवः द्वौद्धः, पञ्चस्र खहुःस भवः पञ्चाह्यः ।

१४। न संख्यायाः समाचारे।

সমাহার হইলে, সংখ্যাবাচকের পরবর্তী স্বস্তন হানে স্বন্ধ হয় না। যথা, দ্বয়াহন্ধী: ধনাস্থাহ: দ্বসন্থা; দ্বমাস্থা।

ं१ २ । न पुर्वयेकाभ्याम् ।

পুণা ও এক শদের পরবর্তী অস্তন্ স্থানে আছে হয় না। যথা, पुरवाहम्, एकाहः।

৮०। संखाव्ययाभ्यासङ्गते:।

মৎখ্যাবাচক ও অব্যয় শব্দের পরবর্ত্তী অ**ঙ্গু**নি শব্দের উত্তর **অন্ २**२। २था, **दे चङ्गुली प्रमाणमस्य द्वाङ्गुलम्, त्वाङ्गुलम्, निर-**ङ्गम्।

৮১। राजाह:संविभ्यष्ट:।

राजन्, चहन्, ও सांख শायत উত্তর ট হয়, ট ইৎ, অ থাকে। यथी, खङ्कानां राजा खङ्कराजः, महान् राजा महाराजः, परममहः परमाहः, उत्तममहः उत्तमाहः, राज्ञः सखा राज-**सर्खः, प्रियः स**खा प्रियसखः।

৮२। गोरतिद्वतार्थे।

मो मात्कत छेहत ट रहा। यथी, राज्ञो मौः राजमवः, परमो मौः पर्मगवः, दश् गावो धनमस्य दश्गवधनः, पञ्चानां गवां समा-हारः पञ्चगवस्। उक्किजार्थं इत ना। यथा, पञ्चभिगौभिः क्रीतः पञ्चसः।

৮७। सुखार्थोदुरस:।

सुद्ध এই অর্থের বাচক ভ**র্ন শব্দের উত্তর ट** হয়। যথা**, স্থা**-नाम् उरः ९व चत्रोरसम्, सुख्योश्य रूत्वर्षः।

चनोऽस्मायः सरसां जाति संस्वाेः।

कां ि ও म॰ जः तुतारेल, अनम्, अध्यन्, अयम्, ও सरम् गत्नित উত্তর ट হয়। যথা, জাতি—ভুঘানস্বন্দ, অংকলোম্মা:, কাৰায়ন্ত্ৰন্ मण्डूकसरसम् ; म॰ छा—महानसम्, पिय्छाय्सः, स्रोहितायसम्, जनसरसम्।

৮৫। ग्राम कौटाभ्यां तच्चा:।

पाम ७ कोट माल्य প्रवर्शी तचन् माल्य छेउत ट इत्र । यथी, पामतचः, साधारण इत्यर्थः ; कौटतचः, खतन्त्र इत्यर्थः । अन्य , राजतचा ।

৮७। अते: शुन:।

অতি শব্দের পরবর্ত্তী স্থান শব্দের উত্তর চহর। যথা, অবি-ক্লাল: স্থানন্ অবিস্থা বিশাং, অবিস্থা বিশা।

५१। उपमानादप्राणिषु।

উপমানবাচক স্বৰূশকের উত্তর ट হয়। যথা, আংলদি: স্বীৰ আংকদিসু:।প্ৰাণী বুঝাইলে হয়না।যথা,বাৰত: স্বীৰ বাৰত স্বা।

৮৮। उत्तर सग पूर्जीपमानेभ्यः सक्ष्यः।

উত্তর, মৃগ, পূর্ব্ব, ও উপমানবাচকের পরবর্ত্তী सक्तिया শব্দের উত্তর ट হর। যথা, ভत্ম सक्त्यम्, स्टगसक्यम्, पूर्व्वसक्यम्; 'উপ-যান— फलकमित सक्तिय फलकसक्यमः।

५৯। नावो द्विगोरतज्वितार्थे।

हिश्चनमानिक्ष नो गास्त्र छेउत ट रहा। यथी, ह्योनीकोः सना-हारः हिनावम्, यञ्च नावो धनमस्य पञ्चनावधनः। छिक्छार्ष्य रहा ना। यथी, प्रश्चमिनौभिः क्रीतः पञ्चनौः। दिशे छिह्न ऋत्ल, राज्ञो नौः राजनौः, नवीना नौः नवीननौः।

৯০। অন্তব্যি।

আর্দ্ধনের পরবতী नী শদের উত্তর ट হয়। যথা, আংট্র নাবঃ আর্দ্রনাবন্। পরলিক হইল না।

৯১। खार्खी विभाषा।

विश्व मयाम रहेता, अथवा अर्द्ध मक शृत्सं थांकिता, खारी मास्त्र উत्तर विकल्प ट रहा। यथी, दे खार्यों प्रमाणमस्य दिखारम्, दिखारि; अर्द्धे खार्याः स्वर्डखारम्, स्वर्डखारी।

৯২। दि तिभ्यामञ्जले:।

विष्ठ मयोम रहेला, दि ও নি শব্দের পরবর্তী অञ্जलि শব্দের উত্তর বিকম্পে ट रह। যথা दे অञ्जली प्रमायामस्य दाञ्जलम्, दाञ्जलि ; साञ्जलम् साञ्जलि। অনাত্র, दयोरञ्जलिः दाञ्जलिः।

৯७। जनपदाद्वसाणः।

अन्तर्भाष्ट्रक गस्त्रत् श्रुत्वहीं ब्रह्मान् गस्त्रत् উত্তর ट^{ङ्}त्र । यथाः, स्रुराङ्गस्य ब्रह्माः स्रुराष्ट्रब्रह्मः, खवन्तिब्रह्मः; कवि**ङ्गब्रह्मः।** खनाव, देवब्रह्माः नारदः।

৯৪। विभाषा कु मस्द्ग्राम्।

कु ଓ महत् गर्कत् शतवर्धी हहेल विकल्म। घर्था, कुल्सितो बच्चा कुबच्चाः, कुबच्चाः, महाबच्चाः, महाबच्चाः।

৯৫। अन्त्योऽचन्तुषि।

আৰু শেশের উত্তর চহয়। যথা गवामचीव गवाचः। চকু বুঝাইলে হয়ুনা। যথা, ৰাভকত্ত আৰু ৰাভকাতি।

৯৬। वृद्ध महक्जातेभ्य उच्छा:।

हब्द, महत्, ए जात गत्मित् श्रवहीं उच्च गत्मित् छेटत ट रहा। यथा, हवः उद्या हबोचः, महानृ उच्चा महोचः, स्नातः उच्चा जातोचः।

৯१। नि:श्रेयस पुरुषायुषे।

निः चेयस ଓ पुरुषायुष निश्रोज्यन मिह्न रहा। वशी, निस्तितं चेयः निःचेयसस्, पुरुषस्वायुः पुरुषायुषस्।

२५। विभाषा छायादि नपुंसकम्।

ক্কাষা (৫৯) প্রভৃতি শব্দ বিকল্পে নপুৎসক হয়। যথা, तद्-ক্কাষম্ নহক্কাষা, गोমালম্ गोমালা।

৯৯। नित्यं द्याया बाइडल्ये।

পূর্ব পদার্থের বাহুলা বুঝাইলে, ক্রায়া শব্দ নিভা নপুৎসক হয়। যথা, হুকুমা ক্রায়া হুকুক্কায়ন্, মহামা ক্রায়া মহক্কায়ন্।

५००। सभा प्रभुपव्यायपूर्व्या।

প্রভূপর্যার শব্দ পূর্ব্বে থাকিলে, सभा শব্দ নিত্য নপুৎসক হয়। যথা, प्रमुसमस्, देश्वरसभस्। राजसभा প্রভৃতিস্থলে হয় না।

১০১। रचः पिशाचा दिपूर्वी च।

रचस्, पिषाच প্রভৃতি শব পূর্বে থাকিলে, सभा শব নিতা নপুৎসক হয়। যথা, रचःसभम्, पिषाचसभम्। অন্যত্র, महत्यसभा, देवदत्तसभा।

১०२। स्रयालाच।

गोलोखिन्नोर्थरोठक सभा गद निष्ठा नश्रू॰ मक इत्र । यथी स्त्रीसभस्, स्त्रीयां समूत्तः इत्यर्थः अधियासभस्, शिग्नुनां समनाय इत्यर्थः ।

১০0। पुंबत् कुबुटीपसतीनामव्हादी।

⁽७) कावा, शासा, सेना, सरा, निशा।

वाक्रिक्षेश्वनी।

ভাৰতে প্ৰভৃতি শৰু পৰে থাকিলে ক্ল<mark>ক্স্তী প্ৰভৃতির পুংবভাব হ</mark>য়। यथी, कु**क्**या **चार्**ड कुक्टार्डम्, हंसा चर्ड हंसा**र्डम्**, कुकुषाः शावः कुकुटशावः, इंसाः शावः इंसशावः, स्टायाः परं क्रमदम्, स्थायाः चीरं स्मचीरम्।

বহুত্ৰীহি।

५। बक्कवीहिः।

এই প্রকরণে যে সমাসের বিধান হইতেছে, তাহার নাম बদ্ভদীন্থি।

चनेकमन्यपदार्थे ।

একাধিক প্রথমান্ত পদ অন্য পদার্থে বিদ্যমান হইলে, बল্পবীন্থি नमान इरा। यथी, आइस्ट्री वानरी यस् आइस्ट्रवानरी एकः, खबं कर्मा येन कतकर्मा पुरुषः, दत्तं धनं यसी दत्तधनी दरिद्रः, छद्व-तम् उदकं यसात् उदतोदकः कृषः, दीर्घी बाह्र यस दीर्घवाद्यः **दुर्**षः, प्रफुल्लानि कार्मेलानि यस्मिन् प्रफुल्लकमसं सरः।

संख्याभिरव्ययासन्तादूराधिकसंख्याः।

সংখ্যাবাচক শদের দহিত অবায়, আদল্ল, অদূর, অধিক, ও সংখ্যাবাচকের বছব্রীহি সমাস হর।

संख्याया चवहोर्डः।

म् शावाहक गरमत छेवत ह रहा। यथा, द्यानां समीये वे ते उपद्धाः, विंगतेरासदाः वासद्वविंगः, विंगतोःदूरे खदूर-तिंगाः, चलारिंगतोऽधिका चित्रक्त्वारिंगः, हो वा त्रवो वा दिलाः, 'पञ्च वा घड् वा पञ्चषाः। तक्षणस्य छेठत रह ना। श्था, बह्नमां समीपे खपनहवः।

६। दिङ्नामान्यन्तराते।

ष्ठस्ताल तूसाहरत, किशी कि पूर्व श्रेष्ठि कार्यत वस्ति विश्वा कार्यास्य दिशोर नरानं पूर्वितारा, दिवाण्याः पूर्वसास्य दिशोरनरानं दिवाण्याः पूर्वसास्य दिशोरनरानं दिवाण्याः प्रवसास्य दिशोरनरानं दिवाण्याः प्रवसास्य दिशोरनरानम् उत्तरस्थाः प्रविभाषास्य दिशोरनरानम् उत्तरस्थाः।

७। सहस्नृतीयया।

তৃতীয়ান্ত পদের দহিত বস্তু শদের বহুব্রীহি নমাস হয়।

१। सह: सो विभाषा।

वस्त्रीरि मगारम, महमकस्रात विकल्ला महा। यथा, पुत्नेवा सह सपुत्तः, सहप्रत्नः; अनुजेन सह सानुजः, सहासुजः; बान्धवेन सह सबान्धवः, सहसन्धवः; स्टलेन सह सस्टलः, सहस्टलः।

৮। रण्ञ्यतिहारे त्यायासप्तयोः सङ्घ्योः। পরসপর যুদ্ধ বুঝাইলে, সমানক্ষপ তৃতীয়াম ও সপ্তমান্ত পদের বহুব্রীহি সমাস হয়।

৯। दोर्घीऽन्यः पूर्वस्य ।

রণব্যতিহারে সমাস হইলে, পূর্বে পদের অন্তা শ্বর দীর্ঘ হয়।

२०। दुच् परात्।

⁽ ७०) वांश्रानियार्ड, शूर्त श्रानित ज्ञास्त्रसात विकाल्य जा रहा। सथा, समास्टि, समीसिट, बाहाबाहिव बाह्नबाहिव। सत्तर्वश्रात्व थांकिल रहाना। सथा, स्वस्यक्षि।

५५ । स्त्रियाः पुंबद्वाचितपुंस्तायाः स्त्रियास् ।

वस्त्रोहि नमारम, ब्रोलिक मन भरत थाकित्न, स्रांविस्भू ब्रोलिक माम भरत थाकित्न, स्रांविस्भ विकास महती , मित्रा महामतिः, चित्रा मतिरस्थ चित्रमार्थः, श्रोता गौरस्थ शीतरः।

५२। नोबन्तस्य।

বহুব্রীহি সমাসে, উপ্প্রভায়ান্ত ব্রীলিঙ্গের পুৎবদ্ধাব হয় না। যথা, বাদীক্ক: भार्योस्य वाদীক্ষদার্ফ:।

५७। न कोपधस्य।

যে ব্রীলিক্ষ শদের উপপাদ্ধলে তদ্ধিতের কিংবা অকপ্রতায়ের ক থাকে, তাহার পুংবদ্ধাব হর না। যথা, তদ্ধিত—হবিদা भार्याख হবিদাপার্য:; অকপ্রতায়—দাবিক্ষ भार्याख पाचिकामार्थः। অন্যত্র হয়। যথা, एका भार्याख्य एकभार्यः।

১८। न संज्ञा पूरव्यो:।

मश्कातांठक ७ शृत्ववांठक खीलिएकत श्रूश्वकांव इत्र ना। यथा, मश्कातांठक—दत्ता भार्याख दत्ताभार्यः, गङ्गा भार्याख गङ्गा-भार्यः, रोहिषी भार्याख रोहिषीभार्यः, रेवती भार्याख रेवतीभार्यः; शृत्ववांठक—दितीया भार्याख दितीयाभार्यः, पञ्चमीभार्याख पञ्चमीभार्यः।

১৫। °न जाति खाङ्मयोः।

कािज्यां इक अ साम्याहरू खीनिक गाया भूष्य होत रह ना । यथा, कािज्याहरू — नास्त्राणी भाव्यास्य नास्त्राणीभाव्याः, सैस्त्रिया भार्व्यास्य सस्त्रियाभार्व्यः ; साम्रयाहरू — सन्नेशी भाव्यास्य सनेशी-भार्व्यः, कशाक्ती भार्व्यास्य कशाक्तीभार्व्यः।

১७। न प्रिवादि पूरक्यो:।

বছব্রীহি সমাসে, প্রিয়া (৬১) প্রভৃতি ও পূর্ণবাচক শব্দ পরে থাকিলে, পূর্ববর্তী ব্রীলিঙ্ক শব্দের পুংবদ্ধাব হয় না। যথা, ছ্যামনা দিযান্ত ছ্যামনাদিয়া, सुनोचना कान्तान्त सुनोचनाकान्तः।

५१। अप् पूरणी प्रमाणीभ्याम्।

পূরণবাচক ও প্রমাণী শব্দের উত্তর অবদ্হর; পাইং, অ থাকে।
যথা, कल्याची पञ्चमी यासां रात्नीचां ताः कल्याचीपञ्चमा रात्रवः (৬২), स्त्री प्रमाची येषां ते स्त्रीप्रमाचाः क्वट्म्बनः।

১৮। नञ् स वि तुर्रपेभ्य चतुरः ।

(৬১) पिया, मनोत्ता, कल्याची, सुभगा, दुर्भगा, सचिवा, स्वा, कान्ता, चान्ता, समा, चपना, वामना। भिक्त, तनया, द्विता, এই তিন শব্দও প্রিবাদিগণে পঠিত হইরা থাকে, কিন্তু সর্ব্বতই বিপরীত প্ররোগ দেখিতে পাওরা যার; এজনা, গণমধ্যেণ নিবেশিত হইল না।

(৬২) মুখ্য পূরণীর উত্তর অপ্ হয়, গৌণের উত্তর হয় না।
কল্মান্থা হালিযন্থান কৃথন বা কল্মান্থান দ্বালা। এ ছলে,
পূরণবাচক শব্দ গৌণ; এজনা, উহার উত্তর অপ্ হইল না।
অসমস্ক দশার যেঅর্থের বাচক, সমস্ক দশাতেও সেই অর্থের বাচক
হইলেই, মুখ্য; আর, অসমস্ক দশার যে অর্থের বাচক, সমস্ক দশার
ভূতিয়ার্থবাচক হইলে, গৌণ বলে। কল্মান্যান্ত্রনা হালিবাচক;
এজনা মুখ্য; আর, কল্মান্যান্ত্রনা উত্তর দশাতেই রাজিবাচক;
এজনা মুখ্য; আর, কল্মান্যান্ত্রনা দ্বালা, এ ছলে, পূরণবাচক
শব্দ অসমস্ক দশায় রাজিবাচক, কিন্তু সমস্ক দশাল, ওছাচক না
হইয়া, তিভিয়ার্থপক্ষবাচক হইতেছে, এজনা উহা গৌণ।

नञ्, सु, वि, ति, उप, अहे मकरानत शत्वहीं चतुर् गरकत छेहत चप्रत्र । यथा, चविद्यमानानि चतार्थस्य स्मचतुरः, सुचतुरः, विचतुरः, तिचतुरः, उपचतुरः।

১৯। नेतुर्नचत्रात्।

नक्रज्ञव† करू मास्कृत श्रह्म के लिल मास्कृत खेल है क्या प्रशाः, क्रमने लाः, प्रव्यने लाः रालयः।

२०। नाभेः संज्ञायाम्।

সংজা বুঝাইলে, নামি শব্দের উত্তর অবমূহর। যথা, ভল্লাম:, মহানাম:।

२)। **धन्त**वहिस्या लोम्न:।

कालर् ७ वहिस् मध्यत পরবর্তী बोसन् मध्यत উতর काप् इत्र। यथी, ज्ञानजीमानि यस कालजीमः, वहिजीमानि यस वहिर् कोमः।

२२। नञ् दु: स्थः सक्यो वा।

नञ्, दुर् सः. এই তিনের পরবর্তী सिक्य শদের উত্তর বিকশ্পে चर् रहा। यथी, चर्मक्यः, चर्मक्यः; दुःसिक्यः; सुसिक्यः; सुसिक्यः।

२०। सक्ष्यचिभ्यां षः खाङ्गे।

वान तूथाहेत, सक्षि ও खांचा मार्कत छेउत प्र शहर, य हैं के शांकि। यथां, दीर्घ सक्षिनी खास दीर्घसक्षः प्रकाः, हता सक्षिनी खासा दीर्घसक्षः प्रकाः, हता सक्षिनी खासाः हत्तसक्षी नारी, दीर्घ खांचियी खासाः विशासाची देशी। सान ना तूथाहेता हत ना। यथां, दीर्घसक्सि श्वटम्, स्यूबाचिः स्कुद्रखः।

२८। चङ्गलेर्दावणि।

मारू दूर्याष्ट्रला, ऋष्ट्रींच गप्पत छेठत घ रह। यथा, **पञ्चाष्ट्रचं दास् ।** मारू िक खला, पञ्चाष्ट्रचित्रेसाः।

२०। हित्रिभ्यां मृड्युः।

हि ଓ लि माम्बर প्रवर्शे मूर्जन् माम्बर्ग छेठत व रत। यथा, ही मूर्जानावस्य हिमूर्दः, लयो भूर्जानोऽस्य लिमूर्जः। अताब रत्न । यथा, पञ्च मूर्जानोऽस्य पञ्चमूर्जा।

२७। **चस् नञ् दु: सुभ्य:** प्रजाया:।

নজ্, রুদ্, লু, এই ভিনের পরবর্তী দলা শব্দের **উত্তর অন্**ছয়। যথা, অদলাং, রুদ্দলাং**, স্তু**দলাং।

२१। मन्दाल्पाभ्याच्च मेधाया:।

नञ्, दुर् सु, मन्द्, खला, এই मकल्त्र शरूरहीं मेधा मस्त्र **উठत्र** खस् रह। यथी, खमेधाः, दुर्मेधाः, सुमेधाः, मन्द्मेधाः, खलामेधाः।

२৮। धमादिन् केवलात्।

धर्मा गर्जित উত্তর অনৃ হয়। যথা, सुधन्मां, ग्रुमधन्मां, खर्ळित-धन्मां। ধর্মাণৰ অন্য শব্দের দহিত মিনিত থাকিলে হয় না। যথা, परमञ्चाधन्मीः।

२ ३। दत्तिणादीमाब्बिथयोगे।

वाधिममुक तूथाहेल, दिक्क्यण गाम्ब श्रवादी देक्कं गाम्ब छैडत खुन हत। यथा, दिक्षिणे देक्कं व्रख दिक्क्यों कारा, व्याधिन दिक्षिणे पार्के कातवण द्रख्ये।

७०। प्रसम्प्रां जानुनो ज्ञु:।

म, सस्, এই দুই অব্যয়ের পরবর্তী লান্ত শব্দের স্থানে चु হয়। यथा, मजुः, संज्ञः।

७১। जङ्गीद्विभाषा।

জদ্ধ শব্দের পরবর্তীর বিকম্পে। যথা, জদ্ধিলুঃ, জদ্ধিলার:।

७२। नसो नासिकाया: संजायाम्।

मिश्ला दूर्वाहरल, नासिका मेक्झात्त नस रहा। यथी, द्वृदिव नासिका ख्रस्ट द्वृत्वसः, वार्जीव नासिकास्त्र वार्जीवसः, गौरिव नासिकास्त्र गोनसः। स्वानिकास्त्र उद्यत रहा ना यथी, स्यूना नासिकास्य स्यूचनासिकः। मिश्ला ना दूर्वाहरल रहा ना यथी, स्वङ्गा नासिका स्रस्ट स्वानासिकः। मिश्ला ना दूर्वाहरल रहा ना यथी, सङ्गा नासिका स्वस्ट स्वस्त्र स्वानासिकः प्रकृषः।

७७। डपसम्मीच्च।

উপসর্গের পরবর্তী नासिका শব্দের স্থানে नस रह। यथी, प्रयासः, ভল্নसः, खपनसः।

७८। खर खुराभ्यां नस्च।

खर ७ खुर भरमत अत्वहीं नासिका भरमत स्राप्त नस ७ नस् रत्र। यथी, खरवासः, खरवाः; खुरवासः, खुरवाः।

७५। विम्नाइय:।

বি উপেদর্গের পরবর্তী নাষিকা শক্ষের স্থানে বিজ্ল, বিজ্ঞা, বিক্স্তু, বিজু, নিপাতনে সিদ্ধ হয়।

७७। जानिजीयायाः।

जाबा मस्बद्ध होत्य जानि २३। यथी, युवति जीयास्य युवजानिः, प्रिया जाबास्य प्रियजानिः, सुन्द्री जायास्य सुन्द्रजानिः।

७१। दुर्गन्धादुत् सु पूति सुर्भिभ्य:।

उत्, सु, पूर्ति, सुरिभि, देशांमित श्राविशी गर्म्य गर्मित छेडत द् इत्। यथा, उत्तिक्यः, सुगन्तिः, पूर्तिगन्तिः, सुरिभगन्तिः। वाह्यस्तित्तं शक्षममुरक्ष दत्र ना। यथा, सुगन्तः प्रवनः।

७৮। चल्पसंयोगे।

जल्भमः (यांग दूर्कारेक, गन्ध गम्बर উठत दूर्व। यथा, छत-गन्धि, दक्षिणन्धि, स्त्रपगन्धि भोजनस्।

७৯। उपमानाच्च।

উপমানবাচক পদের পরবর্ত্তী मञ्च শক্ষের উত্তর হু হয়। यथा, पद्मास्त्रीय मञ्जीऽस्य पद्मगन्तिः, करीषमन्तिः (७७)।

८०। पादस्य पादुपमानादृहस्यादेः।

উপমানবাচক পদের পরবর্তী দাহ শব্দন্থানে দাহ্ হয়। যথা, আদ্রন্তীন দাহাবত্ত আদ্রদান্।. इत्तिन् (৬৪) প্রস্তির পরবর্তীর হয় না। যথা, স্থানিন হব দাহাবত্তা স্থব্দিদাহ:।

8>। संखासुपूर्वस्य च।

সৎখ্যাবাচক ও সু পূর্ব্বে থাকিলে, দাহ শব্দ স্থানে দাহ হয়। ষথা, दिमात्, त्रिपात्, चत्रध्यात्, सुपात्।

8२। स्त्रियां कुम्मादेः पद्ग्र।

জীলিকে, जुन्म (৬৫) প্রভৃতির পরবর্তী पाद শবস্থানে पहु হয়।
যথা, जुन्मपदी, एकपदी, द्विपदी, विष्णुपदी,
स्वार्ट्रपदी।

80। सुद्द दुईदी मिलामिलयो:।

मित्र, অमित्र, এই দুই অর্থে, যথাক্রমে, स्टब्लुह, दक्केंहु, এই দুই

 ⁽৬৩) বোপদেবনতে বিকম্পে।

⁽७४) इस्तिन्, कुँहान, श्रम्भ, श्रम, कपोत, जान, गर्ड, गर्डोन, कुसूर्व इत्यादि।

⁽७६) जुन्भ, एक, द्वि, ति, भत, भूत, जाते, सुनि, स्या, स्ता, गोधा, त्या, विव्या, सार्टू, ज्वाया, भूति, स्याः द्रत्यादि ।

শक निशांज्य निक्ष हत् । यथां, शोभनं सृदयमस्य सुद्धत् निम्मन्, दुष्टं सृदयमस्य दुर्ह्णत् चनित्रः।

88 । उर: प्रस्तिभ्य: कप्।

चरम् (७७) প্রভৃতি শদের উত্তর कप् एश, প ই॰, क থাকে। यथा, ब्यूट्सरोऽस्य ब्यूट्टेरब्कः, चपानद्भागं सम्ह सोपानत्कः, भाषितः पुमाननेन भाषितपुंब्कः, न विद्यते स्वयोऽस्मिन् निर्धे-कस्, स्वनर्थकस्।

8८। द्नन्तात् िक्याम् ।

ञ्जीलिक, देन्नांशीख मस्मित् উठत कप् रह। यथी, बह्रवीऽस्थां धनिनः बद्धधनिका नगरी,बह्रवीऽस्थां वाग्निमनः बह्नवाग्निका सभा।

8७। ऋहन्त नदीस्याञ्च।

श्रकांतास्त अनिमारक्षक मास्त्र छेवत सम् इत। यथां, श्रमस्य एकपित्रकः, समात्रकः, स्तमर्भुकाः, निमारक्षक-स्तपत्नीकः, वक्षकमारीकः।

81 । श्रेषाहिभाषा ।

পূর্বোক ভিয়ের উত্তর বিকণ্পে কদ্ হয়। যথা, धतधतुम्कः, धतधतुः; जञ्जयमञ्जः लञ्जयमाः; सम्बद्धतमिरञ्जः, सम्बद्धत-मिराः; অজ্জিतधनकः, অজ্জিतधनः।

८৮। नेयसुन:।

ईयसुन् প্রতায়ান্ত শদের উত্তর कण् হর না। যথা, बह्छप्रेयान्, बह्मप्रयसी।

৪৯। न प्रशंसायां भातु:।

⁽७७) उरिक्, उपानह्, प्रमृक्, पयम्, दक्षि, मधु, घालि, वर्षिम्, अनज्ह्,नौ, निर् ଓ नञ्पक्षेत चर्ष।

প্রশৎসা বুঝাইলে, স্বান্ত শদ্ধের উত্তর ক্ষম্ হর না। যথা, सुश्रासा, परिद्धतश्राता, साधुश्राता। অন্যত্ত, মুর্ত্তনাতেক: ।

(०। न नाड़ीतन्त्र्यो: खाङ्गे।

त्रांत्र तूथारेल, नाड़ी ও तन्त्री मध्यत উত্তর कप्रत ना। यथा, बद्धनाडिः कायः, बद्धतन्त्रीयीया। अश्रत्र ना तृथारेल, बद्ध-नाडीकः साम्धः, बद्धतन्त्रीका वीया।

৫५। सुप्राताद्य:।

वस्त्रेशि मगारम, सुपात প্রভৃতি শব निপাতনে मिन्न रह। यथा, शोभनं प्रातरस्य सुपातः, शोभनं दिवास्य सुदिवः, चतस्त्रोऽन्यः सस्य चतुरन्नः।

वस्त्र ।

५। दन्दः।

এই প্রকরণে যে সমাস বিধিত হইতেছে, তাহার নাম दन्द।

२। परिलङ्गं हन्दे ।

चन्द्र मर्गाम হইলে, সমস্ত ভাগ পর পদের লিঙ্গ প্রাপ্ত হয়।

७। दूतरेतर्योगे।

भवनभव त्यांग तूलाहेतन, हन्ह मर्गाम हत। यथा, हिर्स हरस्र हिरहरी, रामस बन्धायस रामबन्धायो, भीमस सम्जनस्य भीमार्जुनी, धनस खिर्द्रस पनामस धनखिर्पनामाः, कन्द्रस स्कृतस्र फानस्र करस्र रेमस गन्धस स्वत्य क्ष्यस्य क्ष्यस्य रेमस गन्धस मन्द्रस्य क्ष्यस्य क्ष्यस्य रेमस गन्धस मन्द्रस्य क्ष्यस्य क्ष्यस्य रेमस गन्धस मन्द्रस्य क्ष्यस्य क्ष्यस्य क्ष्यस्य रेमस गन्धस मन्द्रस्य क्ष्यस्य क्षयस्य क्ष्यस्य क्षयस्य क्षयस्य क्षयस्य क्षयस्य क्षयस्य क्ष्यस्य क्षयस्य क्षयस

8। समाद्यारेच।

দুই বা বহু পদার্থের সমাহার বুঝাইলে, ह्वश्व সমাস হয়।

(१) प्राणि द्वर्थ सेनाङ्गानाम्।

वक्षमशांत्र श्रीगंत्र, वृद्यांत्र, उत्मनंत्र वांठक शरात समाहार रहा।
यथी, श्रीगंत्र—पाणिय पादय पाणिपादम्, कर्य चरण्य
करचरणम्, दन्तय खोड्य दन्तेष्टम्, क्रणेश्व नामिका च कर्णनामिकम्, श्रुवी च नवाटी च श्रूबवाटम्, प्रष्ट्य उटर्य प्रहोदरम्; वृद्यांत्र—पणवय स्टरङ्ग्य पण्यस्टरङ्गम्, प्रङ्गय इन्दुभिश्च प्रङ्गदुन्दिन, भेरी च पट्च्य भेरीपट्चम्, स्वमय गान्यारय स्वमगान्धारम्, धैवतय पञ्चमय धैवतपञ्चमम्, षड्जय
मध्यमय षड्जमध्यमम्; त्मनात्र—रिषकाय चन्नारोहाय रिषकान्त्रारोहम्, प्राक्तीकाय याशिकाय प्राक्तीकयाशिकम्, परप्रवय करवावाय परग्रकरवावम्, धनंषि च प्रराय धरुःप्रम्,
-ग्रराय द्वणीराय प्रस्त्रणीरम् (७१)।

७। नदीवाचिनां लिङ्गभेदे।

लिक्ष्त्र रूप थिकित्न, निर्मातिक शिष्त्र समाहार रहा। यथी, मङ्गा च योगस गङ्गायोगम्, उद्यश्च दरावती च उद्योरावित, बद्धापुत्त्र चन्द्रभागा च बद्धापुत्त्र चन्द्रभागम्। निङ्गरूष्ट्रम नी थिकित्न रह ना। यथी, गङ्गा च यसना च गङ्गायसने, सरस्ति च हषद्ती च सरस्ति विद्यारी।

१। देशवाचिनाञ्च।

লিঙ্গভেদ থাকিলে, দেশবাচক পদের समाञ्चार হয়। যথা, ক্সবেস্ব

(৬৭) সেনাঙ্গবাচক পদের কেবল বহুবচনে সমাহার হয়, অন্য বচনে হয় না। যথা, মহস্ত্র দ্রেতীহস্ত্র মহদ্রেত্রীহী, মদ্ধিস্ব মহয়স্ত্র কহবাত্তস্থানিম্বিয়কহবাতাঃ। कृत्ये सञ्च कृतकृत्ये तम्, कृत्यश्च लाङ्गलञ्च कृत्याङ्गलम्, मथुरा च पाटलिए सञ्च मणुरापाटलिए स्त्रम्। लिङ्गल्य ता शीकित्त रहा ता। यथी, मद्राञ्च नेकयाञ्च मद्रेकेकयाः, विदेत्ताञ्च किल्हाञ्च विदेत्तकिङ्गाः। श्रीमदीहरू श्रामद ममोशद रहा ता। यथी, जाम्बवञ्च मालूकिनी च लाम्बवमालिक्स्यो।

े। वा पग्न शकुनि चुंद्रजन्तुवाचिनां बद्धवचने।
वह्यकात, शर्वतिक, गकुनिवांकन, ए क्षृप्रक्षर्वांक श्राप्त विकाल समाहार रव। यथा, शर्ववांक नावस महिषास गोमहिषम्, गोमहिषाः; दक्षास कुरकु स दक्ष दक्षम्, दक्ष तर्द्धाः; गोमायवस गईभास गोमायुगईभाः ; गकुनिवांक ह्यास सारसास हमसारसम्, हंससारसाः ; वकास चक्रवाकास वक्ष कर्मा सम् वक्ष वक्ष वक्ष स्वाप्त स्वाप्त को किलमयूरम्, को किलमयूरम्, को किलमयूराः ; क्ष्णुक्षर्वांक ह्यास सम् सम् सम् दंश मणकाम्, दंश सम् वक्ष स्वाप्त स्वाप्त

৯। फल हण तरवाचवानाञ्च।

वस्रवाद्यात स्वाद्याविक, जुनवाद्यक, अ ठक्रवाद्य श्रामत विकल्ण समान्त्र हार रत। यथी, कनवाद्याक—बद्दाणि च खामलकानि च बद्दामलकम्, बद्दामलकानि ; खर्ज्जुदाणि च नारिकेलानि च खर्जुदनारिकेलम्, खर्ज्जुदनारिकेलानि ; ब्रीह्यस्य यवास्य ब्रीह्यवम्,
ब्रीह्यवाः ; सहास मामास सहमामम्, सहमामाः ; क्रनदाद्यक्रास्य कामास्य क्रमकामम्, क्रमकामाः ; क्रवदाद्यस्वयोधास्य स्वस्त्यस्योधम्, स्वस्त्यस्योधाः ।

५०। नित्यं नित्यविरोधिनाम्।

ঘে সকল জন্ত পরসপর নিত্যবিরোধী, বহুইচনে, ভদাচক পদের

निष्ण समाहार रह। यथा, ब्यहयद नक्षवाश्च बहिनकुवम्, काकाय ख्लूकास काकोलूकम्, मार्ज्ञाराख मुषिकास्च मार्ज्ञारमूषिकम्।

५५। गवाखप्रस्तीनाञ्च।

गवाश्व (७৮) প্রভৃতির নিতা समाहार হয়। যথা, गावश्व अश्वाश्व गवाश्वम्, अञाश्व अविभाश्व अजाविकम्, एकाश्व पौक्राश्व पुत्रपौक्रम्।

५२। विभाषा पूर्व्वीपरादीनाम्।

पूर्व्यापर প্রভৃতির বিকশ্পে समाहार रहा। यथा, पूर्व्यञ्च खपरञ्च पूर्व्यापरम्, पूर्व्यापरं; अधरं च उत्तरं च खधरोत्तरम्, खधरो-सरे; दांघ च ष्टतं च दिधष्टतम्, दिधष्टते।

५७। विरुद्धानामविधेषणानाञ्च।

श्राम्भद्रविक्ष श्रिनार्थ्द विकल्भ समाहार इत् । यथी, भ्रोतञ्च उणाञ्च भ्रोनोणाम्, भ्रोतोणो ; सुखञ्च दुःखञ्च सुखदुःखम्, सुख-दुःखे ; आलोकच अन्वकारच आलोकान्यकारम्, आलोकान्य-कारे। वित्यव रहेल इत्र ना। यथी, भ्रीतोणो प्रसी।

58। स्ट्राणामनिरवसितानां नित्यम्। मुमुरांगे পদের নিতা समाहार হয়। वथा, गोपास नापितास

(७৮) गवास्रम्, गवाविकम्, गवेडकम्, खजाविकम्, अजै-डकम्, कुजवामनम्, कुजिकिरातम्, पुत्तपौत्तम्, स्ववाडाम्, स्तीक्षमारम्, टासीमाणवकम्, प्राटीपटीरम्, प्राटीपच्छाटम्, प्राटीपट्टिकम्, उद्गवरम्, उद्गप्रम्, मृत्रप्रकृत्, मृत्रपुरीषम्, यक्तमेटम्, मांस्पीरिणतम्, दर्भपरम्, दर्भप्रतिकम्, खळ्निपिरी-षम्, खळ्नपर्यक्षम्, द्रयोपनम्, दासीदासम्, कुटीकुटम्, भाग-वतीभागवतम्। मोपनापितम्, कस्त्रोराय कुम्धकाराय कस्त्रोरकुम्धकारम्, ताम्बृज्ञिकाय तन्त्रवायाय ताम्बृज्ञिकतन्त्रवायम्। নির্বণিত (৬৯) শৃদ্বে হয়না। যথা, चय्ज्ञालाय च्यतपाश्च चय्ज्ञालच्यतपाः।

১৫। न द्धिपय:प्रस्तीनाम् । द्धिपयस् (१०) প্রভৃতির সমাহার হর না। যথা, द्धिपयसी, सर्पिर्मधुनी, शुक्तकणो, दीचातपसी, उनुखनसस्ते।

5% । सञ्चवर्ग दषद्यान्तात् समाद्यारे । সমাহারদ্দে, চবর্গান্ত, দকারান্ত, বকারান্ত, ও হান্ত শদের উত্তর আ हत्र। यथी, वाक्तवम्, श्रीस्त्रज्ञम्, चिनस्ट्रह्मद्म्, सम्पद्विपद्म्, वाक्तिषम्, वाग्विपुषम्, स्त्रोपानस्म्, धेतुगोद्वसम्। मर्यादाद्र वा हहेटल हत्र वा। यथी, श्रीस्त्रजी, प्राहट्श्यद्री।

59 । ऋद्न्ताहद्न्ते डा विद्यागोत्रसम्बन्धे । विमागम्ब ७ भावमम्ब थोकिन, এवर श्रेकांत्रां मन भ्रत्वहीं हहेन, श्रेकांत्रां माम्ब छेहत डा हर, ७ हेर, व्या थोकि। यथा, विमागम्ब होता च योता च होतापोतारी, नेष्टा च चहाता च नेष्टोहातारी; भावमम्ब माता च पिता च मातापितरी, याता च ननान्दा च याताननान्दारी।

১৮। पुत्तेच।

• (७२) ये मुक्ते पालं संस्कारिणापि न गुद्धाति ते निद्धवसिताः।
(१०) दिधिपयस्, • सिंपेभेधु, मधुसिंस्, बङ्गापनापितः,
भिववेश्ववणः, स्कान्दविशासः, परिवाद्कौधिकः, प्रवाद्यीपसदः,
गुक्तवणः, द्रभावर्त्तिस्, दोस्वातपस्, श्रद्धातपस्, मेधातपस्,
सध्ययनतपस्, उनुखनस्वनः, आद्यवस्तानः, श्रद्धानेधाः।

भूजगम भरत थोकित्म, श्रमस गरमत छेतत सा रहा। यथी, मिता च पुत्तस पितासुत्ती, माता च पुत्तस मातासुत्ती।

५०। देवतावाचिनां पूर्व्यात् ।

त्तरजारांने भारत इन्ह रहेता, भूक भारत छेतत छ। रहा। यथा, इन्द्रच वक्षाञ्च इन्द्रावक्षी, सित्तच वक्षाञ्च सित्नावक्षी, स्टब्स चन्द्रसाञ्च स्टब्सिन्द्रससी।

२०। न ब्रह्मप्रजापत्यादेः।

बच्चामजापति প্রভৃতির উত্তর ভাষর না। যথা, बच्चा च प्रजा-पतिच बच्चामजापती, অন্নিম वायुच অন্নিवायू, वायुच অন্নিম্ব वायुग्नी।

२५ । दूदग्ने: सोमवक्णयो: ।

स्रोम ७ वहणा मक शरत थोकिरल, खन्नि मस्कित छेठत देत् इत त द्रत्। यथा, खन्तिय स्रोमस स्वन्नीयोमी, खन्निय वहणाय स्वनीयक्णी।

२२ । दिवो द्यावा।

পূर्वव ो दिव् सात्न खाना हत्। यथी, द्यौस भूमिस खानाभूमी, खौस कमा च खानाकमे।

२७। दिवस् च प्रधियाम्।

शृथितीयम श्रात थांकित्ल, दिव् सात्त द्यावा ও दिवस् रह। यथा, द्यौत्र प्रथिवी च द्यावाष्ट्रियों दिवस्त्रवियों।

५८।, मातरपितरौ।

निश्रांज्य मिक्क रह । यथा, माता च पिशा च मातर्पितरौ ।

२० । दम्पती जम्पती वा।

जावा ও प्रति गंद्य नगान रहेला, विकल्प दस्पती ও जन्मती रहा। यथी, जावा प्रतिस नावापती, दस्पती, जन्मती।

५७। नित्यं स्त्रीपुंसादय:।

वक्तमान रहेरल, स्त्रीपुंची (१२) প্রভৃতি নিপাতনে निक्ष रह। यथी; स्त्रो च पुनांच स्त्रीपुंची, वाक् च ननच वास्त्रनसे, नतस्त्र दिवा च नतन्दिवस्, राह्री च दिवा च राह्रिन्दिवस्, खहान च दिवा च चहर्दिवस्, खहस राह्रिस सहोराह्नः।

२१। स्र**ू**पाणासेकश्रेष एकविभक्ती।

একবিভক্তি হইলে, সমানাকার অনেক পদের একমাত্র অবশিষ্ট থাকে। বি পদের একশেষ হইলে, অবশিষ্ট পদ বিহেনান্ত, বহু পদের একশেষ হইলে, অবশিষ্ট পদ বছাবচনান্ত হয়। যথা, নহস্ত্ব বহুস্ব বহুস্ব বহুস্ব বহুস্ব বহুস্ব ক্ষেত্র দেৱস্থ দাৱস্থ দাবস্থ দাৱস্থ দাবস্থ দাবস্থ দাবস্থ দাৱস্থ দাবস্থ দাবস্থ

२৮ । पु**मान् स्नि**या।

সমানাকার ব্রীবাচক পদের সহিত সমাস হইলে, পুরুষবাচক পদ অবশিষ্ট থাকে। যথা, নাল্ধান্ত স্বাল্ধান্তী ব নাল্ধান্তী, নুজুতস্থা ক্লক্সতী ব নুজুতী। ব্রীলিঙ্গনিমিত্তক ল্লান্ত্ ইন্ত্ প্রভৃতি বিশেষ ব্যতিরিক্ত অন্যান্য অংশে সমানাকার হওয়া আবশ্যক, শদ্দের বরপণত বৈলক্ষণ্য থাকিলে হয় না। যথা, ভারস্ক বার্থী ব ভারবাহ্যী।

२०। न व्यक्तिसंज्ञानाम्।

वाक्रिवित्यस्वतं माध्यावाठक श्राप्ततं धक्रत्यसं रहं ना । यथा, इन्द्रसः स्ट्राची च इन्द्रेश्टावयी, सवसं भवानी च भवभवान्यी ।

⁽१२) स्त्रीपंती, धेन्दनसुहस्, स्टक्समे, वास्त्रनसे, सन्धि-श्रुक्स्, दारगवस्, ऊर्वधीवस्, पदशीवस्, नक्षत्थिस्, राति-न्दिवस्, सहर्दिवस्, सायज्ञवस्, सहोरातः।

७० । साह पुत्ती खर दृष्टित्याम् । समृत महिछ जुड़ित ଓ पृहिज्त महिछ পूट्यत मैमान हहेला, जुड़ि उ পूट्य व्यवनिक्षे थोकि । यथी, स्नाता च खसा च स्नातरी, पुत्तव दृष्टिता च पुत्ती ।

৩১। विभाषा णिता माता। যাতৃশব্দের সহিত নমাস হইলে, পিতৃশব্দ বিকশ্পে অবশিষ্ট থাকে। যথা, मানা च पिता च पितरी, मातापितरी।

৩২ । **স্বয়াে : শ্বশু**। শ্বশানের দহিত সমাস হইলে, শ্বশুরশন বিকম্পে অবশিষ্ট থাকে। যথা, শ্বশুশ্ব শ্বয়াব্য শ্বয়াবী, শ্বশুশ্বয়াবী।

७७ । नपुंसकमनपुंसके नेकवचनं वा । निश्च निर्मात निर्मालक निर्माण क्रिक्त निर्माण क्रिक्त निर्माण क्रिक्त निर्माण क्रिक्त निर्माण क्रिक्त क्रिक्त क्रिक्त क्रिक्त क्रिक्त क्रिक्त क्रिक्त स्था । यथा । यक्ष स्र स्वाल स्वाल

সর্বাসমাসমাধারণ বিধি।

১। पथो ड: समासे।

मयांम हरेल, मयरखर अखिक पियम् भरकर उत्तर ह रह, छ रे॰, अ थारक। यथा, पयः समीपम् उपपयम्, जले पन्याः जलपयः, दिचा पायाः दिचा पायाः दिचा पायाः, महान् पन्याः महापयः, स्थापां ध्यां समाहारः तिपयम्, चतुर्वां पयां समाहारः विषयम्, चतुर्वां पयां समाहारः चतुष्प्रयम् नगरम्, चेलञ्ज पन्यास् चेलप्यमे। अवग्रत्तर প्रदर्शे हरेल न्थूर्भक रह। यथा, विषयः पन्याः विषयम्, गर्हितः पन्याः उत्पयम्, चप्रवः पन्याः पन्याः चत्र्याः विषयम्, गर्हितः पन्याः उत्पयम्, चप्रवः पन्याः चत्र्याः वष्रवः पन्याः

२। अनपः।

नमान हरेल, नमर्दं त अवस्थि वाप् गरकत छेतत वान् हत, न रे॰, अ थोर्क। यथी, विमवा वापोऽस्मिन् विमवापं सरः, उत्नृता वापोऽस्मात् उष्टृतापः कूपः, कूपस्मापः कूपापाः, निकीवा वापः निकीवापाः।

७। श्वन्तरपसर्गेस्योऽप र्दू:।

वि, अख्रु, ७ উপमर्शित পরবর্তী खाष् माम् स्र खकांत खांत हूं रहा यथा, हयोर्दिकोः खाषोऽख हीषम्, खन्तरीपम्, भीषम्, समीषम्, प्रतीपम्, खन्तीपम् ।

८। अवणीदिभाषा।

অवर्गास खेलमर्गत लववर्ती हरेला, विकल्ला। सथी, प्रेषस्, प्रापस्; परेपस्, परापस्; सर्पा समीपस् उपेपस्, उपापस्।

৫। समापानूषौ।

समाप ७ चनूप निर्णाज्य निष्क रहे। यथा, समापं देवनयनम्, चनूपो देशः।

७। धुरोध्नचे।

नमान रहेतन, नमस्त्र व्यवस्थि धुर्णस्यत खेतत खन् रह, न हेर, व्य शोकः। यथी, राच्चो धूः राजधुरा, महती धूः महाधुरा, धता धूरनेन धतधुरः। व्यक्त गस्त्र शोकित रह ना। यथी, व्यवस्य धूः खच्चभूः, हता धूरस्थिन हत्धूः खचः।

१। ऋचस्।

नगरस्त्र व्यस्ति इं इत् गरम्य छेडत् सन् इत्। वशी, साईस् इत्यः व्यक्षेत्रः (१२), विधिनता स्टब्सनेन व्यधिनतर्द्धः।

⁽१२) श्रूशिक रहा।

৮। नजो माण्यको।

माणावक युकारेतन, नत्थात शत्रवीं ऋच् गत्कत उठत स्रम् रह। यथी, साम्योग माणावकः। अन्यतः स्वत्वक् साम।

८। बहोस्टरणे।

चरच तूथाहेतन, वहात भत्रवहीं स्टच् गत्यत् छेठत सन् हरू। यथी, बह्नवश्वरयाः। অন্যত্ত, बह्नक् स्त्रतम्।

५०। प्रत्यन्ववेभ्यो लोन्न:।

प्रति, चतु, चन, अरे जिन्द शृह्य वी बोमन् माम्बर छैठत चन् रहा यथा, प्रतिबोमम्, चतुबोमम्, चन्वोमम्।

১১। साम्बस

प्रति, चातु, श्वव, এই ভিনের প্রবর্তী सामनृ শদের উত্তর श्वनृ হয়। যথা, प्रतिसामस्, श्वतुसामस्, श्ववसामस्।

५२। शक्तोदक पाक्डसंख्यास्यो स्रमे:।

कन्न, उदक, पान्युः, ও সংখ্যাবাচতের পরবর্তী মুলি শব্দের উত্তর অনৃ হয়। যথা, জন্মমূল:, उदसभूनः, पान्युङ्गूनः, हिमूनः, चत्रभूनः।

बह्य इसि पत्य राजस्यो वर्चसः।

ब्रह्मन्, इत्तिन्, पत्य, राजन्, देशाम्त श्ववर्शी वर्षम् गत्मत উত্তর অन्धितः। यथा, ब्रह्मवर्ष्वसम्, इत्तिवर्षसम्, पत्यवर्षसम्, राजवर्षसम्।

58। चन समन्धेभ्यस्तमसः।

खान, सम्, खीम, देशारिक शहर शित समस् भारत है छहत खन् रह । वथा, खनतमसम्, चन्तमसम्, खन्यतमसम्।

১৫। अन्वव सप्तेभ्यो रहसः।

चातु, चाव, तप्त, देशीएमत् श्रत्वती रह्मस् गर्कत् উत्तत् चानु रह्म। यथी, खतुरहरस्, खनरहरस्, तप्रदहरस्।

১७। उपसर्गाद्धनः।

উপদর্গের পরবর্ত্তী আপ্রান্ত শব্দের উত্তর্গ আনু হয়। যথা, प्रगतः चधानम् प्राध्वो रयः, चध्वनोऽभावः निर्ध्वम्, चध्वानं प्रति प्रत्यक्षम्। अनाव, उत्तमोऽक्षा उत्तमाध्या।

५१। म्बसोऽवसीय:श्रेयोभ्यास्।

श्वम् माम्बर পরবর্তী অবদীयम् ও श्रेयम् माम्बर উত্তর অব हरः। यथा, श्वीवसीयसम्, श्वःश्वेयसम्।

১৮। न प्रशंसायां खतिभ्यास ।

প্রশংসাবাচী सु ও অনি শব্দ পূর্বে থাকিলে, সমাসান্ত বিধি হয় ना। यथा, भोभनो राजा सुराजा, भोभनो राजा चस्मिनुः सराजा देशः, चतिष्येन राजा चतिराजा, समुखा, चतिमुखा, सगौः, चतिगौः, सपन्याः, खध्वा।

५०। न किम: कुल्यायाम् ।

কুৎসাবাচী কিন্দ শব্দ পূর্ফো থাকিলে, সমাসান্ত বিধি হয় না। ষথা, कुतिसतो राजा, किंराजा, कुतिसतः सखा किंसखा, कुतिसतः पत्थाः चरित्रन् किम्पत्थाः देशः।

⁴ २०। न नञस्तत्पृ**रु**षे।

তৎপুক্ত সমাদে, नञ् পূর্বে থাকিলে, সমাদান্ত বিধি হয় না, यथा, खराजा, खरखा, खगीः।

२५। पथो विभाषा ।

ঘঘিনৃ শব্দের উত্তর বিকল্পে। সমাসাম্ভ পক্ষে নপুৎসক লিজ হয়। যথা, অব্যয়স্ক্র অবন্ধা:।

२२। सः समानस्य गोतासौ।

नगाम गोल প্রভৃতি गर পরে থাকিলে, समान गमदात सं रह। यथा, समान गोलमस्य सगोलः, सक्यः, सवर्थः, समजः, संगाभिः, सियकः, सनामा, सववाः, सतीर्थः, सस्यानः, सबन्धः, सदस्याः, सदस

२७। विभाषा धर्मीहर्य जातीवेषु ।

धर्मा, उदके, ও जातीय मज श्रद्ध धाकित, विक्ष्ण । यथी, सधन्मी, समानधन्मी; सोदका, समानोदका; सजातीया, समानजातीयः।

२८। दुरन्यादाघीराद्यि।

सामित् श्रेकृष्ठि गम शर्त शिक्ति, स्रत्य गम्बर छेडत हु रह, छे हेर, म शोर्त । यशी, सत्या सामीः सत्यदामीः, सत्यस्मिन् सामा स्वत्यदामा, सत्यस्मिन् सास्या सत्यदास्या, सत्यसिन् सास्यितः सत्यदास्थितः, सत्यसिन् ससुनः सत्यद्वस्यः, सत्यसिन् रीगः सत्यद्वातः, सत्यः नारनः सत्यसारकः।

२८। न हतीया षद्योः।

जुजीशांस ६ वर्षारस्त रह ना। यथा, खन्येन खामीः खन्यामीः, खन्यसामीः खन्यामीः।

२७। अर्थे विभाषा।

অর্থশন্দ পরে, থাকিলে বিকল্পে। বথা, **অত্যন্তার্ঘ: অত্য**হর্ষ:, অত্যার্ঘ:।

२१। को: कत्स्वरेतत्पृक्षे।

তৎপুক্তম সমাসে, স্বরবর্ণপরে থাকিলে, ক্লু শব্দস্থানে করু হয়। যথা, कुत्सितोऽश्वः कदश्वः, कुत्सित चड्डः कटुट्टः, कुत्सितमद्भं कदस्रम्, कुतिसत खाचारः कटाचारः, कुतिसतस्दर्भं कटुटकस।

२৮। तिर्घवदेषु।

নি, হঘ, ও বহ শব্দ পরে থাকিনে, ক্ল শব্দহানে করু হয়। যথা, कृतिसतास्त्रयः कस्त्रयः, कृतिसतो रघः कद्रयः, कृतिसतं वदति कहदः।

२ े । कापष्यच्यो:।'

पथिन् ଓ काल्ति नक भरत थांकितन, का रहा। घथा, कुतिसतः, पन्याः कापयः, कुत्सितमच्चि व्यस्य काचः।

७०। दूषदर्थे च।

द्रेषत् অৰ্থ বৃঝাইলে, कु শব্দহানে का হয়। যথা, কা**নখুৰে**; र्द्रषन्त्रभुरमित्यर्थः ; कःलग्याम्, र्द्रषञ्जनयमित्यर्थः ।

७১। विभाषा पुरुषे।

पुरुष गर्क भरत् थांकित्स, विकत्न्भ। यथा, कापुरुषः, कुपुरुषः।

, ७२ । **का कर्त्**कवान्य**णो** ।

चब्स मक পরে থাকিলে, कु मक्चीं कि का, कत्, ও कव रह। यथी, को चाम्, कडुणास्, कवो चाम्।

७७। विद्यासिंद्राद्य:।

বিশ্বাদিন প্রভৃতি শব্দ নিপাতনে সিদ্ধ হয়। যথা, বিশ্বস্তু নির্ন विश्वासितः, विश्वावसः, विश्वानरः, खटावतः, खटापदम्, खटा-गवस्, श्वादन्तः, श्वादंद्रा, श्वाक्तर्यः, श्वाप्रकीः, श्वापदः।

७८। समोऽन्यबोपः नाम मनसोः।

काम ও मनस् শব্দ পরে থাকিলে, सम् এই অব্যয়ের অস্তা বর্ণের লোপ হয়। যথা, सकामः, समनाः।

०৫ | तुमुनञ्च।

কান ও ননন্দক পরে থাকিলে, ব্রন্থ প্রতারের অস্তা বর্ণের লোপ হয়। যথা, দলকোন:, দলকান:।

७७। अवध्यमः कत्ये।

কৃত্য প্রতার পরে থাকিলে, অবহয়েন্ শব্দের অন্তা বর্ণের লোপ হর। যথা, অবহয়েইয়ন্, অবহয়েনঅন্, অবহয়েননঅন্।

অলুক্ সমাস।

चलुगुत्तरपदे।

সমাস হইলে, কোনও কোনও স্থলে, উত্তর পদ পরে বিভক্তির লোপ হয় না।

२। पञ्चस्याः स्तोकान्तिक टूराये क्रक्रिस्यः।

खाकार्थ, खखिकार्थ, मृतार्थ, ख कृष्ट्य मास्तत शत्रवहीं पश्चमी विकक्षित लाश रह ना। यथा, स्तोकान्युक्तः, खन्यान्युक्तः, खन्तिकादागतः, समीपादागतः, दूरादागतः, विप्रक्रष्टादागतः, क्रम्बान्युक्तः।

७। पोजबाहोऽमासमोऽम्बससृतीयायाः।

चोज्ञस्, सहस्र, चन्धस्, तमस्, अञ्चल्लास्त्रः शददवीं स्तीया विख्ङिद् (जांकी रह ना। यथी, चोजसाझतस्, सहसाजतस्, चन्धसाजतस्, तससाजतस्, चन्नसाजतस्।

८। पुंसीःतुजे।

श्वतुज শব্দ পরে থাঁকিলে, पुस्स् শব্দের পরবর্তী हतीया বিভক্তির লোপ হর না। যথা, पुंसातुजः।

(८। जनुषोऽन्धे।

स्थ्यः गम পরে থাকিলে, सतुस् गम्बर्ग পরবর্তী स्तीया বিভক্তির লোপ হয় না। যথা, जन्नसम्बर्धः।

७। चात्मनः पूर्यो।

পূর্ণবাচক শব্দ পরে থাকিলে, আনোন্ শব্দের পরবর্তী দ্রনীয়া বিভক্তির লোপ হয় না। যথা, আনোনামগুলা, আনোনাহয়ন:।

१। वैयाकरणाखायां चतुर्थाः।

ব্যাকরণের সংজ্ঞা বুঝাইলে, আনামেন শব্দের পরবতী অন্তর্মী বিভক্তির লোপ হয় না। যথা, আনামেনীদহম্, আনামেনীদাঘা।

७। पराच।

পরশব্দের উত্তরও হয় না। যথা, परस्तीपदम्, परस्तीभाषा।

৯। इलद्नात् सप्तम्याः संचायाम्।

সৎজ্ঞা বুঝাইলে, হলবর্ণান্ত ও অকারান্ত শদের পরবর্তী सप्तमी বিভক্তির লোপ হয় না। যথা, युधिष्ठिरः, तिसिसारः, खरखे-तिनुकाः, बनेकिंगुका, कुपेषिणाचकाः।

ु ५०। चन्त मध्याभ्यां गुरौ।

যুক্ শব্দ পরে থাকিলে, ক্সন্ত ও মধ্য শব্দের পরবর্তী বন্ধনী বিভক্তির লোপ হয় না। যথা, ক্সনীযুক্ত, মধ্যযুক্ত।

১১। असुर्युमस्तकात् स्वाक्तादकामे। अस्ति स्वाक्तात्रकार मान्यात्र अत्रवहीं सप्तकी विकक्ति लाल क्या मा। यथा,

कब्रहेकालः, उरसिजोमा, घिरसिधिखः। काम गय পরে থাকিলে হয়। যথা, श्वखकामः। मूर्द्धनृ ও मस्तक गर्यद উত্তর হয়। যথা, मूर्द्धिखः, मस्तकिष्यः।

১২ । विभाषा बन्धे । बम्ब শব্দ পরে বিকল্পে । _,যথা, স্থলীৰ-দ্রাং, স্থলীৰ-দ্রাং, দহৰ-দ্রাং।

५७। तत्पुरुषे द्यति बद्धलम्।

तत्मुक्ष मर्गारम, कत् প्राञ्जातिक्षात्र भम् भरत् थांकिरन, सप्तमी विकित्तः नूरक्त निव्य नार्षे, वर्षाष्, रकांनल कांनल क्रांनल क्रांनल

১৪। षद्याच्याकोग्री।

भक्षना तूर्याङ्गल, षष्ठी विच्छिन्द सुक् इय्र ना। यथी, **चौरस्य-**क्वचम्, दासस्यतनयः।

১৫। पुत्ते विभाषा।

भर्त्वना दूर्कारेल, ও पुत्त नम পরে থাকিলে, मही विভक्तित विकल्पि लुक् रत्ना। यथा, दाखाःपुत्तः, दाबीपुत्तः; दृषक्याः-पुत्तः, दृषकीपुत्तः।

5%। वाच् दिश् पश्च द्वारो सित दग्द हरेषु।

स्वित, दग्द, उ हर मन भरत थोकित, वथोक्ति, वाच् दिश्, उ
पश्चत् मान्द्रं छेडत्वर्डी षष्टी विचिक्ति बुक् रह ना। यथी,
वाचोस्रतिः, दिशोदण्डः, पश्चतोहरः।

५१। देवात् प्रिये।

দিব শব্দ পরে থাকিলে, ইব শব্দের পরবন্তী বিভক্তির লোপ হয় না। যথা, ইবালাক্সিয়ায়:।

১৮। शुन: शेफ पुच्छ लाष्ट्रलेषु संचायाम्। संचा तूबाहेत्त, এव९ शेफ, पुच्छ, ७ खाष्ट्रुब गक পরে থাকিলে, यन् गत्कित পরবর্তী বিভক্তির লোপ হয় না। যথা, शुनःशेफः, शुनःशुच्छः, शुनोलाङ्गलम्।

५२। दिवस दासे।

संज्ञा বুঝাইলে, टास শব্দ পরে, হিদ্ শব্দের পরবর্তী বিভক্তির লোপ হর না। যথা, হিবীহার:।

२०। ऋतो विद्या गोत्रसम्बन्धात्।

विमानमृक्षवां छ । । अथा, क्षेत्रः पुकाः, क्षेत्रदर्शे विकल्पितः । अथा, क्षेत्रः पुकाः, क्षेत्रदर्भे वासी; विकल्पाः, पित्रदर्भे वासी।

२५। विभाषा खद्ध पत्थो:।

खद्ध अपित नम्न शर्त विकालि। यथी, मातः ख्वसा, माहस्वसा; पितः ख्वसा, पिहस्वसा; दृहितः पितः, दृहिहपितः; ननान्दुः-पितः, ननान्दुपितः।

२२। पात्रेसमितादयः कुत्यायाम्।

बाबा বুঝাইলে, पालेसमित(৭৩) প্রভৃতির सप्तमी বিভক্তির লোপ

⁽१९) पालेसीनताः, पालेबद्धनाः, गेडेमूरः, गेडेनहीं, गेडे-संडी, गेडेमिकिती, गेडेडप्तः, गेडेप्टः, गर्भेद्धाः, गोडेमूरः, नोडेपट्यः, गोडेपिक्तः, गोडेप्रक्ताः इसार्वर ।

हत ना। यथा, पालेसिनताः, भोजनकाले पाले एव सङ्गताः, नत कार्यकाले इत्सर्थः, गेहेम्बरः, गेहे एव म्बरः, नत सन्यम इत्सर्थः।

মধ্যপদলোপী সমাস।

)। लोप: क्विनाध्यस्य।

সমাস হইলে, কোনও কোনও স্থলে, মধ্য পদের লোপ হয়। যথা, ष्टतिमञ्जम् खोदनम् ष्टतौदनम्, पन्तिमञ्जम् अतं पनानम्, शाक-प्रियः पार्श्विवः शाकपार्श्विवः, गत एव प्रत्यागतः गतप्रत्यागतः, कर्वे स्थितः कानोऽस्य कर्वेकानः, उर्गि स्थितानि नोमान्यस्य उरिस्तोमा, शिर्मि स्थिता शिखास्य शिर्मिणिखः, प्रपतितानि पर्यात्यसात् प्रपर्याः, चपगतः श्रोकोऽख अपश्रोकः, निर्गतं मसम् चासात् निमेंबः, चाभुक्तानि पर्णान्यनया चपर्णा, विगवीऽर्यः स्रसात् व्यर्षः, स्रतुगतोऽघीऽस्मिन् धन्दर्धः, यथाभूतोऽघीऽस्मिन् ययार्थः, प्रतिगतमत्त्रमस्मिन् प्रत्यत्तः, उद्गमितं सखमनेन उन्नुखः, चिधः इतं सुख्यानेन खधोसुखः, (नर्नष्टं धनमस्य निर्द्धनः, विचितितं मनोऽख विमनाः, उत्कव्छितं मनोऽख उन्मनाः, सुन्धितं मनोऽख सुमनाः, सुवर्णविकारोऽलङ्घारोऽस्य सुवर्णानङ्कारः, स्वविद्यमानः पुन्तीऽस खपुन्नः, खनिद्यमानः क्रोधोऽस खक्रोधः, एकाधिका विंग्रतिः एकविंग्रतिः, एकाधिका विंग्रत् एकविंग्रत्, चतुरिधका दम् चतुर्देम्, पञ्चाधिका दम् पञ्चटम्, पञ्चाधिका विंम्रतिः पञ्च-विंग्रतिः, पञ्चाधिका विंग्रत् पञ्चविंग्रत्।

२। एकस्यैकादधनि।

द्यम् गम পরে থাকিলে, एक गम स्राप्त एका दत । यथा, एका-धिका दय एकादय।

७। द्वारनोद्दीरा संख्यावाम्।

संख्यावाचक नक शरत थोकित्न, दिस्ति दा उ खष्टन् स्रांत खष्टा रत्न । यथा, दापिका दय दादम, दाधिका विमतिः दाविमतिः, दापिका विमत् दाविमत्, खष्टाधिका दय खष्टादम, खष्टा-धिका विमतिः खष्टाविमतिः, खष्टाधिका विमत् खष्टाविमत्।

8। वे**दा**यस्।

ति चीत्न त्रयम् रहा। यथी, त्राधिका दम त्रयोदम, त्राधिका विमतिः त्रयोविमतिः, त्राधिका तिमत् त्रयस्त्रिंगत्।

৫। विभाषा चलारिं शत्रस्तौ सर्वेषाम्।

चलारिंगत् প्रकृष्ठि (१६) शरंत थाकित्न, द्विश्वात्त द्वाः, तिश्वात्त त्वयः, अष्टन् श्वात्त अष्टा, विकत्त्र्श रहा। यथी, द्वाधिका चला-रिंगत् दाचलारिंगत्, दिचलारिंगत्; द्वाधिका पञ्चागत् दा-पञ्चागत्, दिपञ्चागत्; त्वयञ्चलारिंगत्, तिचलारिंगत्; त्वयः-पञ्चागत्, तिपञ्चागत्; अष्टाचलारिंगत्, अष्टचलारिंगत्; अष्टापञ्चागत्, अष्टपञ्चागत्।

७। नाशीति शतादी बक्जनीही।

স্বাসীরি ও মন প্রভৃতি সংখ্যাবাচক শব্দ পরে, বহুব্রীছি সমাসে, পূর্ব্বোক্ত কার্যা হয় না। যথা, ব্রামীরিঃ, ব্রামীরিঃ, বিম্বান্, বিষক্তব্যুদ্ধ, বিবাঃ, বিশ্বরুশঃ।

१। एकोनस्यैकाचैकाद्रौ विभाषा।

एकोन স্থানে বিকপ্পে एकाच ও एकाच হয়। যথা, एकोनविंग्रतिः एकाचविंग्रतिः, एकाइविंग्रतिः।

(98) चलारिंगत्, पञ्चामत्, पिन, सप्तति, नाति ।

. পূর্ব্বনিপার্ভ ।

১। उपसर्जनं पूर्वम्।

मयात्म उपसर्ज्ञन अल्वत शृक्तिशां हरू।

२। प्रथमानिर्दिष्टं, समास उपसर्ज्जनम् ।

সমাসসুত্রে প্রথমা বিভক্তির সহযোগে যাহার নির্দেশ থাকে, তাহাকে ভদমর্জন কছে। অব্যানীভাবে অব্যায় প্রভৃতি পদ, তৎপুক্ষে দ্বিতীয়াদিবিভক্তান্ত পদ, কর্মধারতে বিশেষণ প্রভৃতি পদ, দ্বিপ্রতে সংখ্যাবাচক পদ, ভ**দম্বর্জন**। যথা, অব্যায়ীভাবে—কু**ভম্থ মদী**-पस् उपकृतस्, ज्ञानमन्तिकस्य यथाज्ञानस्, वर्णानामानुपूर्वेत्रण चतुवर्णाम्, तृणमध्यपरित्यच्य सतृणम्, यामाद्वहिः वहिर्यामम् पार्टानपुत्रात् चा अपारिनियुत्रम्, ससुद्रस् पारे पारेससुद्रम्। ड॰श्रुक्त्य-सुखं प्राप्तः सुख्याप्ताः, अर्द ब्मुच् अत्रब्भ्चः, वर्षे भोज्यः वर्षभोज्यः, पित्रा समः पित्रममः, खङ्गेन विक्रतः खङ्ग-विकलः, पाणिनिना प्रणीतम पाणिनिप्रणीतम्, भताय विजः भूतवितः, पुत्राय हितम् पुत्रहितम्, व्याच्चात् भयम् व्याच्चभयम्, ग्टहात् निर्मतः ग्टहनिर्मतः तरोः क्वाया तक्काया, अग्नेः शिखा च्यन्तिशिखाः, शास्त्रे प्रवीगः शास्त्रपत्रीगः, पृब्वीह्ने कतम् पृष्यो ज्ञाहतम्। कश्चिशंद्रश्य—नीखं उत्पनम् नीबोत्पनम्, नवः पञ्चवः नवपञ्चवः, सन् पुरुषः सत्युरुषः । विश्रटङ—पञ्चभिः गोभिः क्रीतः पञ्चगुः, त्रवाणां स्रोकानां समाञ्चारः तिस्रोकी, त्रवाणां भुवनानां समान्तारः त्रिभुवनस्।

राजदन्तादिषु परम्।

राजदन्त প্রভৃতি ছলে उपसर्जन পদের পরনিপাত হয়। যথা दनानां राजा राजहन्तः, वनस्य खयो खयोवनस्।

8 । वा कडारादर्य: कमोधारये।

কর্মধারর সমাদে, জাভাব প্রভৃতি (৭৫) পদের বিকশ্পে পূর্বানিপাত হর। যথা, লাভাবেদলঃ, দললভাবঃ; অল্লামিয়ঃ, মিয়েজল্লঃ; হত্ত্বযুক্ষঃ, দুক্ষহত্তঃ।

৫। सप्तमीविशेषणे बद्धवीडी।

रक्त्वीहि मर्यास, सप्तस्यन्त ७ विशेषणः পদের পূর্বনিপাত হর।
यथा, मश्रमाख-कारोकानः, उरसिनोमा ; विश्विश-दीर्घवाद्धः,
महाबनः।

७। विभाषा प्रियस्य।

দিয় শদের বিকম্পে পূর্কনিপাত হয়। যথা, মৃভ্দিয়া, দিয়া মৃভ্:।

१। सप्तमी परा गड्डाहै:।

गङ् প্রভৃতির যোগে, सप्तम्यन्त পদের পরনিপাত হয়। যথা, गङ्घः कराउँ यस गङ्कराउः, गङ्घः घिरसि यस गङ्घिराः।

৮। प्रहर्णाध्य

प्रहर्णकाचक शत्त्व धारित, सम्राध्यन श्राम्य श्राम्य श्राम्य श्राम्य प्राची यस्य द्रम्ह पाणी यस्य द्रम्ह पाणिः, द्रम्हः पाणी यस्य द्रम्ह-पाणिः, खड्डः करे यस्य खडूकरः, धतुईक्ते यस्य धतुईकः।

৯। निष्ठा पूर्जी।

निष्ठनिक्शन श्राप्त शृक्तिशां इत्र । यथा, वतकद्वां, ऋधीत-व्याकरणः, भिक्तितेकनः, धतायुधः, उड्डतदण्डः, भन्नर्धः, पक्तिषः।

(१८) कडार, खञ्ज, काण, कुब्छ, गौर, टङ्गु मिसुक, पिङ्ग, पिङ्गल, तत्र, जठर, विधर, वर्बर इत्यप्रदि।

५०। वास्तिम्यादिषु।

चाहितान्त প्रवृष्ठि युल निषानिक्षत्र श्रम्त विकल्भ शूर्व-निश्रां हत । यथी, चाहितान्तिः, चम्माहितः; जातसुन्तः, सुखजातः; जातपुन्नः, प्रम्मजातः; जातदनः, दन्नजातः; जातस्मयः, श्रम्भजातः, तैनपीतः, पीततेनः; प्रतपीतः, पीतष्टतः; मदापीतः, पीतमदाः; सुरापीतः, पीतसुरः: भाखौढः, जहमायः; चर्षगतः, गतार्थः; प्राप्तकानः, कानप्राप्तः; चस्यदातः, उदानासिः।

३३। चल्पखरं हन्हे।

हम्हमभारमः, অপে क्षांकृष्ठ अप्भवत्विभिष्ठे यथाः, तान्ततमानीः, गजतरङ्गीः, सङ्गदृन्दुभीः, श्वात्तभगिन्यीः, गोमहिषीः, दंशमसकीः, इंससारसीः, काककीकिनीः अन्समधुरीः तिक्तकषायीः।

. ১२। खराद्यदन्तं साम्ये।

यतमागान्दाल, यतानि व्यकातास शामत शृक्षिभणां रत। यथा, व्यञ्चगानी, व्यन्तातिती, व्यनसम्बद्धी, व्यवसस्त्री, इन्द्रवङ्की, ईशभनी, उद्देखरी, ऊर्डुनिको।

५७। दुदुस्त्व।

बदमांशास्टः, रेकादांख ७ উकादांख भरनद পূर्वनिभाउ २३। यथा, हरिसरो, रविबुधी, पटुग्रुक्ती, स्टुडढो।

५८। 'बश्यक्तिश्च।

জ্বম্বর্ত্তির বোধক পদের পূর্ব্বনিপাত হয়। বর্থা, মারাঘিরহী, বাদ্যমান্ত্রনী।

٢

३६। बहुवस्ति।

लशुवर्गविभिक्षे পদের পূর্কনিপাত হয়। ষথা, क्रमकामस्, नव-नीवी, वत्तयकोय्द्री।

১७। भाता च जायान्।

জ্যেষ্ঠভূাত্বাচক পদের পূর্মনিপাত হয়। যথা, যুদিবিতা জ্বনী, স্থানামুদা বজু, बखदेवक्षणी।

५१। सत् नचताणामानुपूर्वेगा।

श्रुवाठक छ नक्कववाठक পদের, আনুপূর্ব্য অনুসারে, পৌর্বাপর্য্য-নিয়ম। यथा, श्रुवाठक—इसन्तिश्चिरी, शिशिद्यसनी, वसन-निदाधी; नक्कवाठक—खिन्नीभरक्वी, क्रसिकारोहिक्यी। अक्कवमांगञ्चल এই নিয়ম।

১৮। वर्णानाञ्च।

ব্রাহ্মণাদিবর্ণবাচক পদেব, আনুপূর্ব্ব্য অনুসারে, পৌর্ব্বাপর্য্যনির্ব্য । যথা, রান্মান্তব্যবিষদীয়াসমূল্য।

১৯। चनियमो धमादी।

धर्मा श्रृहित श्राह्मा त्यों क्षां श्रिष्टी त्र त्या नाहे। यथा, धन्मां श्री चर्च धन्मी; काना थीं, क्ष्यं कानी; ग्रन्हा थीं, चर्च ग्रन्ही; वर्च क्ष्यों, वधू वरों; वर्षि में धुनी, मधु सिंधी; चादानी, चना दी; ग्राण हती, हिंदु ग्रुखी।

मर्खनमानत्नव।

. **५ । समास**चतुर्विघ:।

পাণিনিমতে সমাস অত্থানাৰ, বন্যুত্ব, বস্তানীতি, হন্ত, এই চতুৰ্বিধ; কক্ষাধাৰে ও হিন্তু বতন্ত্ৰ সমাস বলিয়া পৰিগাণিত নতে, উহারা তৎপুক্ষের অন্তর্ভুত। কোনও কোনও মাত, কক্ষাধাৰে ও হিন্তু, বতন্ত্ৰ সমাস বলিয়া নিৰ্দিষ্ট; তৰ্গতে সমাস বড়বিধ।

२ । पूर्वपदायप्रधानोऽव्ययौनातः ।

অবারীভাব সমাদে, পূর্ব্বপদার্থ প্রধানরূপে প্রভীয়মান হয়। ভদ-ফ্রেন্, যথামারি, ইত্যাদি স্থলে, ভদ, যথা, প্রভৃতি পূর্ব্ব পদার্থ প্রধান ভাবে প্রভায়মান ফট্রা থাকে।

७। उत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुषः।

তৎপুক্ষ সমাসে, উত্তর পদার্থ প্রধান ভাবে প্রতীয়মান হয়। **तह-ক্ষাযা, गङ्गाजलस्,** ইত্যাদি স্থলে, ক্ষাযা, जल, প্রভৃতি পর্পদার্থ প্রধান ভাবে প্রতীয়মান হুইয়া থাকে।

8 । अन्यपदार्थप्रधानो बद्धवीहि: ।

বহুব্রীহি সমাদে, সমস্যমান কোনও পদার্থ প্রধান ভাবে প্রভারমান না হইরা, তদুপ্রক্তিত অন্য পদার্থ প্রধান ভাবে প্রভারমান হয়। ৰস্কেঘন:, दीर्घनाञ्चः, ইত্যাদি ছলে, বস্কু, ঘন, दोर्घ, বাস্কু, প্রভৃতি কোনও পদার্থই প্রধান ভাবে প্রভারমান হয় না; কিন্তু বহু ধন ও দীর্ঘ বাহু বিশিষ্ট ব্যক্তিরূপ অন্য পদার্থ প্রধান ভাবে প্রভারমান হইরা থাকে।

(१) उभयपदार्थप्रधानो दन्दः ।

দৃদ্ধ সমাদে, দমদামান উভয় প্রাথহি প্রধান ভাবে প্রতীয়মান হয়। অস্বদলী, বালবদালী, ইত্যাদি স্থলে, অস্ব, দল, বাল, বদাল, প্রভৃতি যাবতীয় প্রদর্শই প্রধান ভাবে প্রতীয়মান হইয়া থাকে।

কিন্তু, সকল স্থলে এই সকল লক্ষণের নমাবেশ হব না, স্থলবিশেষে বাভিচার লক্ষিত হইরা থাকে। सप्तगोदावरम्, जन्मस्नক্ষম্, ইত্যানি অব্যরীভাবে, পূর্দ্ধ পদার্থ প্রধান ভাবে প্রভীয়মান
না হইয়া, অন্য পদার্থ প্রধান ভাবে প্রভীয়মান হইয়া থাকে। জন্দিস্থল: আ্বাদ্ধ সমিনিক্ষ: ইত্যানি তংপুক্ষে, উত্তর পদার্থ প্রধান ভাবে
প্রভীয়মান না হইয়া, অন্য পদার্থ প্রধান ভাবে প্রভীয়মান হয়।

दिलाः, पञ्चवः, वेठानि र्यष्ट्रविहित्त्व, खना भनार्थ श्रभान छात्व প্रতीयमान ना ववेता, उठ्य भनार्थवे श्रभान छात्व श्रुठीयमान वत्र । इंससारसम्, दंधमध्यकम्, वेठानि स्टब्स्, उठ्य भनार्थ श्रभान छात्व श्रुठीयमान ना ववेता, उदम्मावादक्षण खना भनार्थ श्रभान छात्व श्रुठीयमान वत्र । मूठतार, भूत्सीक नक्षण मकन श्रीविक खिश्यात छात्व श्रिठीयमान वत्र । मूठतार, भूत्सीक नक्षण मकन श्रीविक खिश्यात विक्रिये; खर्थार, श्रीय मकन स्टल उठ्य नक्षण्य म्यादिण व्यक्ति ह्या ना, और छारभ्याः, अस्ता, खान्यक्ष प्रमानी द्वा प्रमानी द्वा । प्रायेणीन प्रवास प्रमानी व्यक्ति । प्रायेणीन स्वास प्रायेणान प्रमानी द्वा । प्रायेणीन स्वास प्रायेणान । स्वास । प्रायेणान स्वास । स्व

বন্ধতন্ত, তত্তৎসমাদের অধিকারে যে সমস্ত সমাস বিহিত ছইয়াছে, দেই সমুদর তত্তৎসমাসসংজ্ঞাভাজন; অর্থাৎ অব্যারী-ভাবপ্রকরণে যে সমস্ত সমাস বিহিত ছইয়াছে, উহাদের নাম অব্যারীভাব; তৎপুক্ষপ্রকরণে যে সমস্ত সমাস বিহিত ছইয়াছে, উহাদের নাম তৎপুক্ষ; বছুব্রীহিপ্রকরণে যে সমস্ত সমাস বিহিত ছইয়াছে, উহাদের নাম বছুব্রীহি; দ্বন্ধপ্রকরণে যে সমস্ত সমাস বিহিত ছইয়াছে, উহাদের নাম বহুব্রীহি;

ভাষর ঘর্ষ দিয়ানী হ্রন্থ:, এই লক্ষণে উভর শব্দ সমাক্ সংলগ্প নহে। উভর পদে বেরপে ছন্থ সমাস হয়, বহু পদেও সেইরপ হইরা থাকে। ফলভঃ, কেবল অবারীভাব সমাস দুই পদে হর, দন্দ ও বছরীহি দুই পদে ও বছপদে, তৎপুক্তর প্রায় সকল স্থলে দুই পদে হইরা থাকৈ, কোনও কোনও স্থলে বহু পদেও দেখিতে পাওরা যার। বস্তভঃ, হন্দলক্ষণে উভরশন্ত্রলে অনেকশন্নিবেশ আবশ্যক।

ः ७। वक्कवीहिदिधसात्रुणसंविद्यानोऽतत्रुणसंविद्या-नयः।

ৰক্তরীরি দিবিধ, নহুন্যুমার্ঘবিদ্যান ও অনহুন্যুমার্ঘবিদ্যান। যে স্থলে, সমাসবোধিত অন্য পদার্থের ন্যায়, সমস্যমান পদার্থেরও পরস্পরান ক্রিরাপ্রভৃতির সহিত অন্থন হয়, উহাকে নহুন্যুমার্ঘবিদ্যান, আর বে স্থলে সমস্যমান পদার্থের ক্রিরার সহিত অন্থয় হয় না, উহাকে অনহুন্যুমার্ঘবিদ্যান বলে। অভ্যন্মানান্য ইতা দি স্থলে, আনয়নক্রিরাতে লমুকর্ণ বশিষ্ট ব্যক্তির অন্থয় হইতেছে, কিন্তু লমু কর্ণেরও পরস্পরায় অন্থন আছে, এজন্য উহা নহুন্যুমার্ঘবিদ্যান; আর, হত্ময়ারুদ্যান্য, ইত্যাদি স্থলে, আনয়নক্রিরাতে দুষ্টসমুদ্ ব্যক্তির অন্থর আছে, কিন্তু সমুদ্রের নাই, এজন্য উহা অনহুন্যুমার্ঘবিদ্যান।

१। समानाधिकरणपद्घटितो व्यधिकरणपद्घटि-'तस्य।

बद्धवीद्धि श्रेकांतांखरत विविध्त समानाधिकर्णपटघटित ७ व्यधि-करणपटघटित । विरागत ७ विरागत भराम या वस्तु विश्व कर्मा समानाधिकरणपटघटित ; यथा, नी साम्बरः, दीर्घबाद्धः, कृष्ण-कायः रेजानि : या स्टल व्यताविध्व भराम वस्तु विश्व हर्मा विराह्म व्यधिकरणपटघटित वर्म; यथा, व्यख्याणिः, धनुक्तं सः रेजानि।

তদ্ধিত—পরিশিষ্ট

)। **पुंतन्तिसत्तादिषु भाषितपुंस्कस्य।** तसिक्, अन्तु, चर्ट, जातीय, देशीय, ও पाद्य প্রতায় পরে, डांशिड शृश्क खोलिक माम्बर पुंग्झाव श्रा। यथी, उत्तरसा दिशः उत्तरतः, उत्तरस्तुं दिशि उत्तरतः, मर्कस्यां दिशि सकेत्र, अपिता भूतपृत्वो सपितचरी, जात्या बाह्ययी बाह्ययजातीया, देशदूना परिखता परिखतदेशीया, कृतिसता पाचिका पाचक-पाशा।

२। कल्पादिषुच।

कत्य, क्र्प, तर, ७ तम প্रতाয় পরে ভাষিতপূ॰ क खोलिक मास्त्र पुंबद्भाव रয়। यथा, द्रेषदूना पिष्डता पिष्डतकत्या, प्रयक्ता गायिका गायकक्ष्मा, द्रयमनक्षोरतिष्ययेन निष्णा निष्णतरा, द्रयमासामितिष्ययेन चपला चपलतमा।

७। दूबूपोविभाषा।

कत्य अञ्ि शत, संविष्णु १ के वेवस श शिलाक्त विकाल पुंवद्वाव हर। यथा, देवद्वना विद्वा विद्वा विद्वा किता, विद्वत्वत्या, प्रश्वता के भाविनो के भाविनो के भाविनो के भाविक्या, के भाविक्या; द्रयमनयोदित- एयेन मार्यावनो मार्यावनोत्तरा, मार्यावतरा; द्रयमासामित- एयेन मनोहारियो, मनोहारियोतमा, मनोहारितमा; वामोक्क्या, वामोक्क्या, वामोक्क्या; वामोक्क्या, वामोक्क्या; वामोक्तरा, कामोक्तरा; वामोक्तरा, वामोक्तरा (१७)।

(৭৬) বৈরাকরণেবা উবস্তের পুংবভাব নিথের করিরা বিকম্পে উপের হুষ্বিধান করেন; আর, পুংবভাবের অভাবপক্ষে ঈপের, ছলবিশেষে বিকম্পে ও হলবিশেষে নিভা, হুষ্বিধান করিয়া থাকেন; তদনুসারে, বিহুদ্মিক্সা, বিহুদ্মীক্সা, বিহুদ্ধ ক্রেমা এবং মাস্ক্রাত্যিক্সা, মাস্ক্রাত্যক্সা এইরূপ হইতে পারে।

8। श्रीस बहार

यस् প্রতার পরে, বস্তর্থ ও অপ্পার্থ ভাষিতপুৎস্ক ব্রীনিজের, धुंबद्गाव হর। যথা, बङ्गीस्यो देहि बद्धयो देहि, जल्यास्य देहि जल्ययो देहि।

८। ततनोर्गपक्चनस्य।

त ६ तन् श्रांत भारत, श्रेश्वांत्रक स्वित्र भूष्य द्वीलिक्त पुष्ट द्वाव है। यथी, निषुणाया भावः निषुणात्वम्, निषुणाताः सपनाः भावः स्वावत्वम्, स्ववताः स्विधावित्वा भावः सेधावित्वम्, सेण्याविताः प्रियवादित्वम्, प्रियवादित्वम्यः, प्रियवादित्वम्यः, प्रियवादित्वम्, प्रियवादित्वम्, प्रियवादित्वम्, प्रियवादित्वम्यः, प्रियवित्वम्यः, प्रियवित्वम्यः, प्रियवित्वम्यः, प्रियवित्वम्यः, प्रियवित्वम्यः, प्रियवित्वम्यः, प्रियवित्वस्यः, प्रियवित्वस्यः, प्रियवित्वस्वयः, प्रियवित्वस्यः, प्रियवित्वस्यः, प्रियवित्वस्यः, प्र

B2461!

সম্পূর্ণ

PRINTED BY YAJNESWARA MUKHOPADHYAYA,

AT THE SANSKRIT PRESS,

NO. 62, AMHERST STREET, CALCUTTA.

1888.